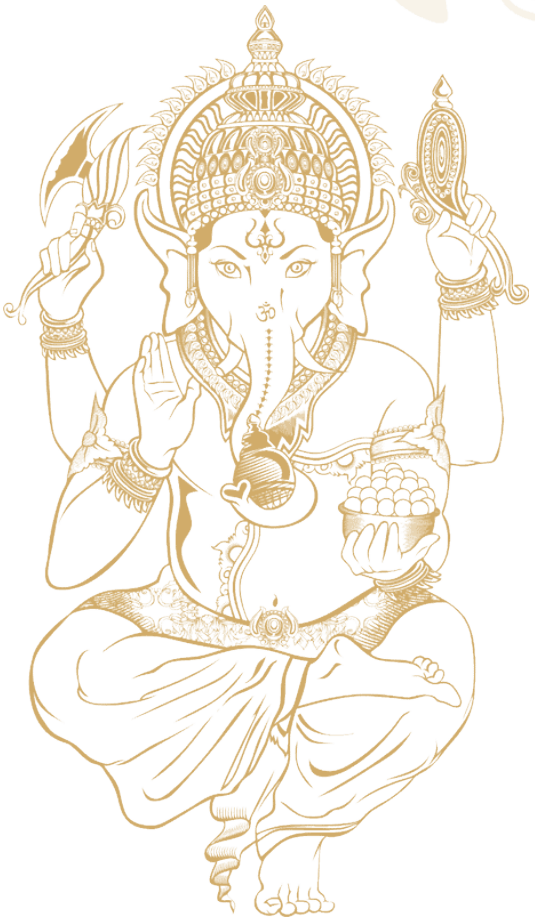

Dhannjay Rajaram Jadhav

03 Sep 1991

05:45 PM

Delhi

Model: Web-KundliDarpan **Order No: 121477701**

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**03/09/1991**
दिवस	मंगळवार
जन्म समय	**17:45:00 कला**
इष्ट	29:22:55 घटी
स्थान	**Delhi**
देश	India

अक्षांश	28:39:00 उत्तर
रेखांश	77:13:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:21:08 कला
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 कला
स्थानिक वेल	17:23:52 कला
वेलान्तर	00:00:26 कला
साम्पातिक वेल	16:12:24 कला
सूर्योदय	05:59:50 कला
सूर्यास्त	18:41:00 कला
दिनमान	12:41:11 कला
सूर्य स्थिति(अयन)	दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल)	उत्तर
ऋतु	शरद
सूर्याचे अंश	16:45:37 सिंह
लग्नाचे अंश	29:16:43 मकर

अवकहड़ा चक्र

लग्न–लग्नाधिपति	मकर – शनि
राशि–स्वामी	**मिथुन – बुध**
नक्षत्र–चरण	**आर्द्रा – 1**
नक्षत्र स्वामी	राहु
योग	सिद्धि
करण	वणिज
गण	मनुष्य
योनि	श्वान
नाड़ी	आद्य
वर्ण	शूद्र
वश्य	मानव
वर्ग	मांजर
युँजा	मध्य
हंसक	वायु
जन्म नामाक्षर	कु–कुणाल
पाया(राशि–नक्षत्र)	स्वर्ण – रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	कन्या

पंचांग

आजोबांचें नांव _____:
बडीलांचे नांव _____:
आईचें नांव _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	माह	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1913	भाद्रपद	12
पंजाबी	संवत : 2048	भाद्रपद	18
बंगाली	सन् : 1398	भाद्रपद	17
तमिल	संवत : 2048	अवानी	18
केरल	कोल्लम : 1167	चिमगम	18
नेपाली	संवत : 2048	भाद्रपद	18
चैत्रादी	संवत : 2048	भाद्रपद	कृष्ण 9
कार्तिकादी	संवत : 2048	श्रावण	कृष्ण 9

पंचांग

सूर्योदय समयी तिथि _____: 9
तिथि समाप्ति वेल _____: 08:41:24
जन्म तिथि _____: 10
सूर्योदय समयी नक्षत्र _____: मृगशिरा
नक्षत्र समाप्ति वेल _____: 12:31:02 कला
जन्म योग _____: आर्द्रा
सूर्योदय समयी योग _____: वज्र
योग समाप्ति वेल _____: 07:26:38 कला
जन्म योग _____: सिद्धि
सूर्योदय समयी करण _____: गर
करण समाप्ति वेल _____: 08:41:24 कला
जन्म करण _____: वणिज
भयात _____: 13:04:54
भभोग _____: 55:45:20
भोग्य दशा वेल _____: राहु 13 वर्ष 9 मा 16 दि

घात चक्र

मास _____: आषाढ़
तिथि _____: 2-7-12
दिवस _____: सोमवार
नक्षत्र _____: स्वाति
योग _____: परिघ
करण _____: कौलव
प्रहर _____: 3
वर्ग _____: उंदीर
लग्न _____: कर्क
रवि _____: मीन
चन्द्र _____: कुम्भ
मंगळ _____: मेष
बुध _____: मकर
गुरु _____: वृषभ
शुक्र _____: मिथुन
शनि _____: कुम्भ
राहु _____: कर्क

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

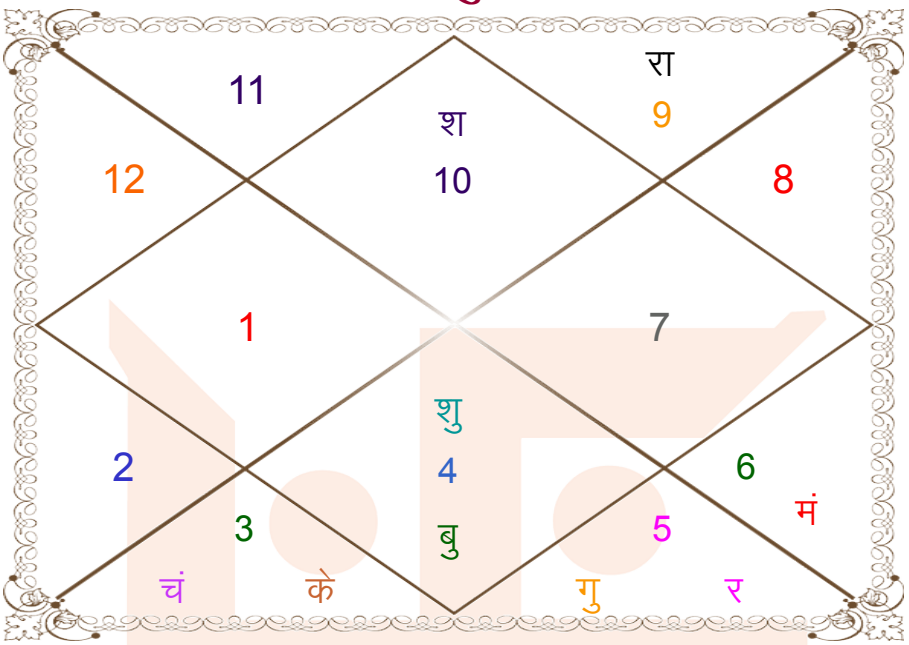

चन्द्र कुंडली

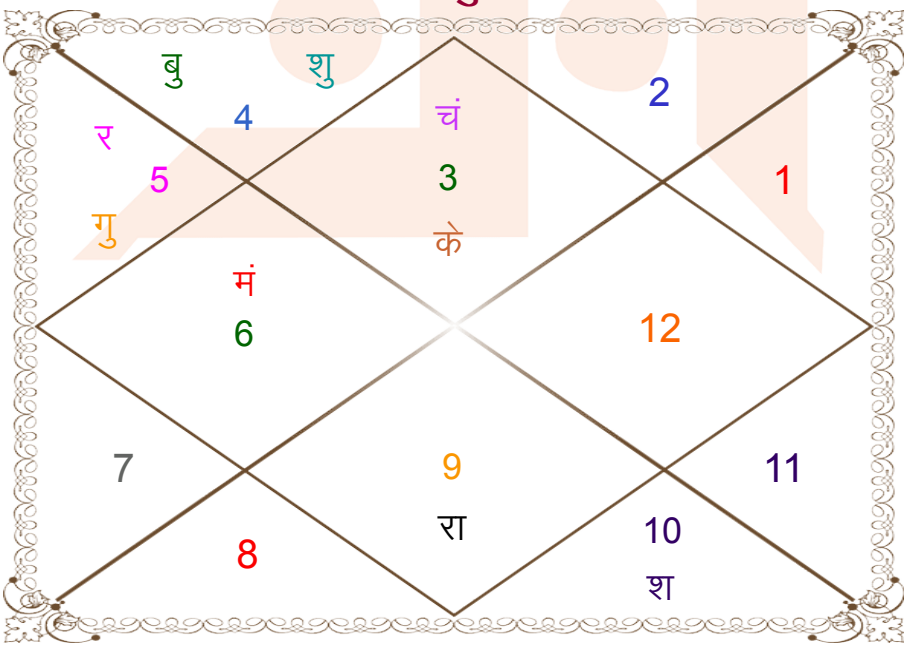

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

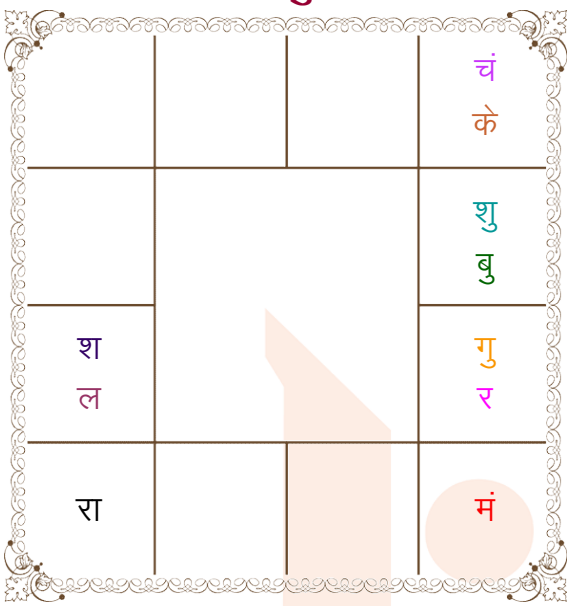

लग्न कुंडली

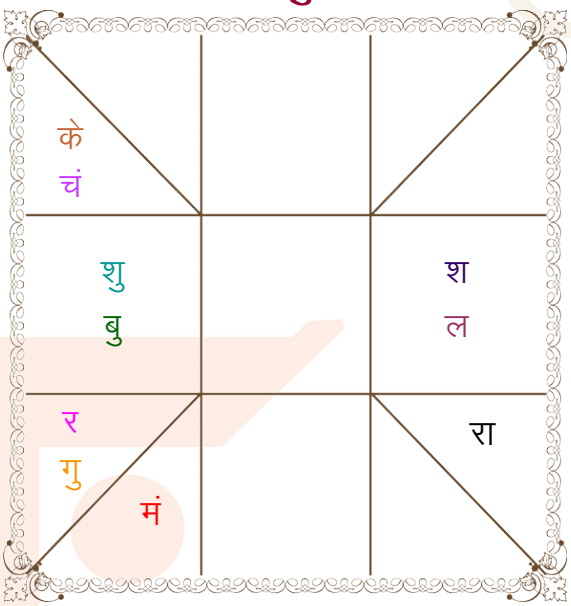

विंशोत्तरी
राहु 13वर्ष 9मा 16दि

राहु

03/09/1991

22/06/2107

राहु	20/06/2005
गुरु	20/06/2021
शनि	20/06/2040
बुध	20/06/2057
केतु	20/06/2064
शुक्र	20/06/2084
रवि	20/06/2090
चन्द्र	21/06/2100
मंगळ	22/06/2107

योगिनी
मंगळा 0वर्ष 9मा 5दि

संकटा

10/06/2019

10/06/2027

संकटा	20/03/2021
मंगळा	09/06/2021
पिंगला	19/11/2021
धान्या	20/07/2022
भ्रामरी	10/06/2023
भद्रिका	20/07/2024
उल्का	19/11/2025
सिद्धा	10/06/2027

ग्रह स्पष्ट तथा त्यांची स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मक	29:16:43	462:21:24	धनिष्ठा	2	23	शनि	मंगळ	शनि	----
सूर्य			सिंह	16:45:37	00:58:07	पू.फाल्गुनी	2	11	सूर्य	शुक्र	चंद्र	मूलत्रिकोण
चंद्र			मिथु	09:46:52	14:18:18	आर्द्रा	1	6	बुध	राहु	गुरु	मित्र राशि
मंगळ			कन्या	07:41:34	00:38:41	उ.फाल्गुनी	4	12	बुध	सूर्य	केतु	शत्रु राशि
बुध			कर्क	29:53:56	00:24:34	आश्लेषा	4	9	चंद्र	बुध	शनि	शत्रु राशि
गुरु			सिंह	04:22:49	00:12:58	मघा	2	10	सूर्य	केतु	चंद्र	मित्र राशि
शुक्र	व		कर्क	29:11:13	00:23:10	आश्लेषा	4	9	चंद्र	बुध	शनि	शत्रु राशि
शनि	व		मक	07:14:38	00:02:54	उत्तराषाढ़ा	4	21	शनि	सूर्य	केतु	स्वगृही
राहु			धनु	23:53:34	00:00:55	पूर्वाषाढ़ा	4	20	गुरु	शुक्र	शनि	नीच राशि
केतु			मिथु	23:53:34	00:00:55	पुनर्वसु	2	7	बुध	गुरु	बुध	नीच राशि
हर्ष	व		धनु	16:11:42	00:00:47	पूर्वाषाढ़ा	1	20	गुरु	शुक्र	सूर्य	----
नेप	व		धनु	20:22:52	00:00:43	पूर्वाषाढ़ा	3	20	गुरु	शुक्र	गुरु	----
प्लूटो			तुला	24:11:36	00:01:13	विशाखा	2	16	शुक्र	गुरु	बुध	----
दशम भाव			वृश्चि	11:17:54	--	अनुराधा	--	17	मंगळ	शनि	चंद्र	--

व – वक्री स – स्थिर
अ – अस्त पू – पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट
लाहिरी अयनांश : 23:44:44

लग्न–चलित

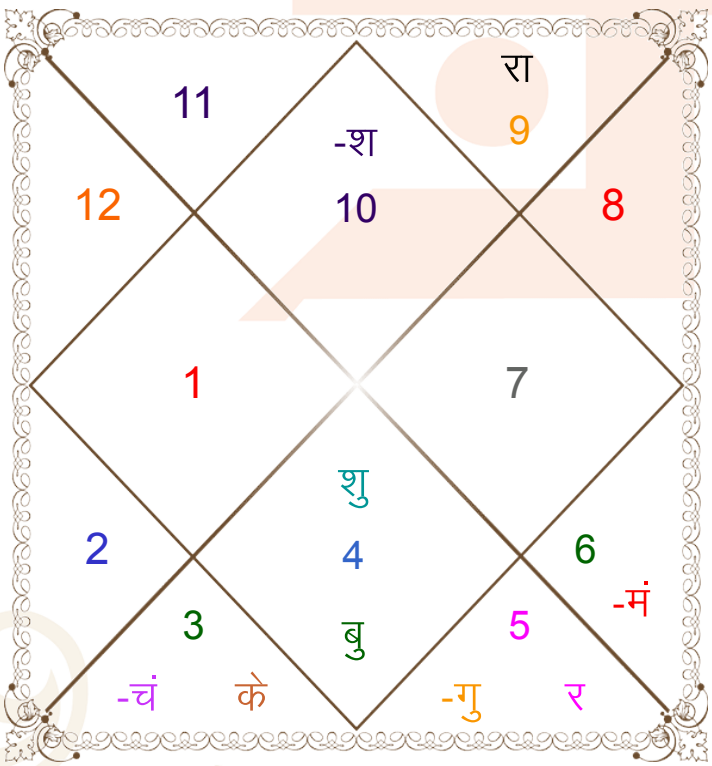

चन्द्र कुंडली

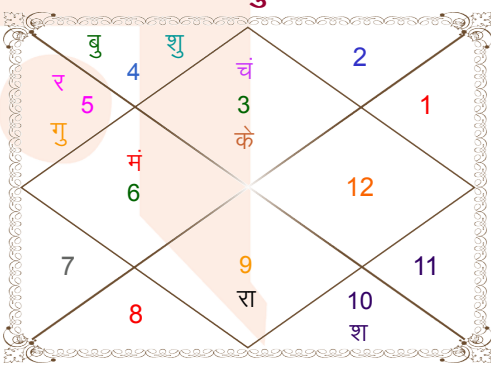

नवमांश कुंडली

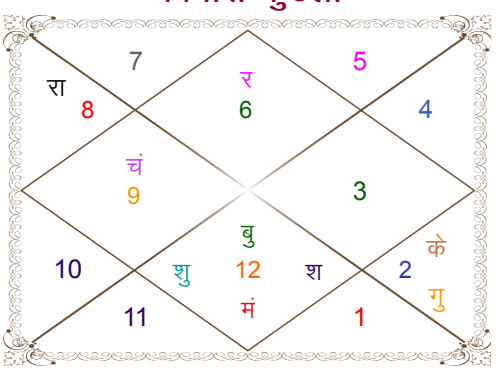

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	मकर	16:16:55	मकर	29:16:43
2	कुम्भ	16:16:55	मीन	03:17:07
3	मीन	20:17:18	मेष	07:17:30
4	मेष	24:17:42	वृषभ	11:17:54
5	वृषभ	24:17:42	मिथुन	07:17:30
6	मिथुन	20:17:18	कर्क	03:17:07
7	कर्क	16:16:55	कर्क	29:16:43
8	सिंह	16:16:55	कन्या	03:17:07
9	कन्या	20:17:18	तुला	07:17:30
10	तुला	24:17:42	वृश्चिक	11:17:54
11	वृश्चिक	24:17:42	धनु	07:17:30
12	धनु	20:17:18	मकर	03:17:07

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मकर	29:16:43
2	मीन	10:16:10
3	मेष	14:22:52
4	वृषभ	11:17:54
5	मिथुन	04:54:43
6	मिथुन	29:15:08
7	कर्क	29:16:43
8	कन्या	10:16:10
9	तुला	14:22:52
10	वृश्चिक	11:17:54
11	धनु	04:54:43
12	धनु	29:15:08

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू.फाल्गुनी	उ.फाल्गुनी	हस्त	चित्रा
स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा
शतभिषा	पू.भाद्रपद	उ.भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा

चलित कुंडली

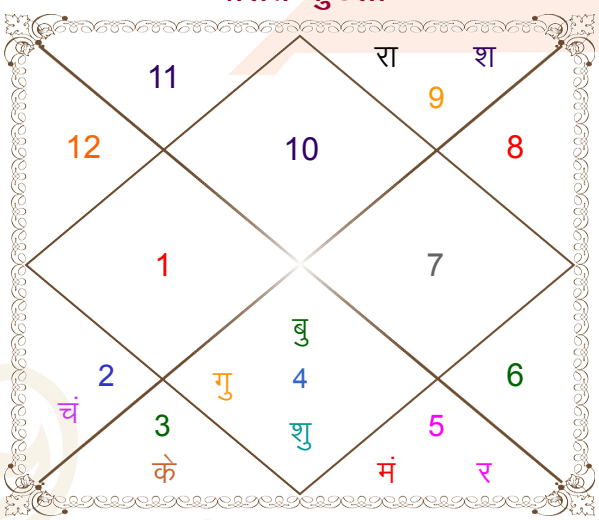

भाव कुंडली

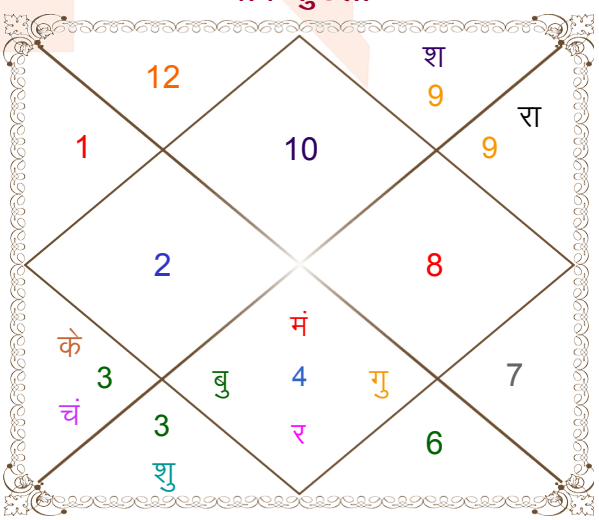

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	——— कारक ———		——— अवस्था ———				
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	भ्रातृ	पितृ	युवा	स्वस्थ	नेत्रपाणि	5.92	72 %
चंद्र	मातृ	मातृ	कुमार	मुदित	भोजन	9.55	69 %
मंगळ	पुत्र	भ्रातृ	वृद्ध	खल	भोजन	1.10	52 %
बुध	आत्मा	ज्ञाति	बाल	खल	भोजन	3.75	68 %
गुरु	कलत्र	धन	बाल	मुदित	शयन	5.86	54 %
शुक्र	अमात्य	कलत्र	बाल	खल	नेत्रपाणि	2.57	24 %
शनि	ज्ञाति	आयुष्य	वृद्ध	स्वस्थ	आगमन	4.28	26 %
राहु	———	ज्ञान	वृद्ध	भीत	गमन	0.00	72 %
केतु	———	मोक्ष	वृद्ध	भीत	भोजन	0.00	72 %
एकुण						**33.02**	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू.फाल्गुनी	उ.फाल्गुनी	हस्त	चित्रा
स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा
शतभिषा	पू.भाद्रपद	उ.भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा

चलित कुंडली

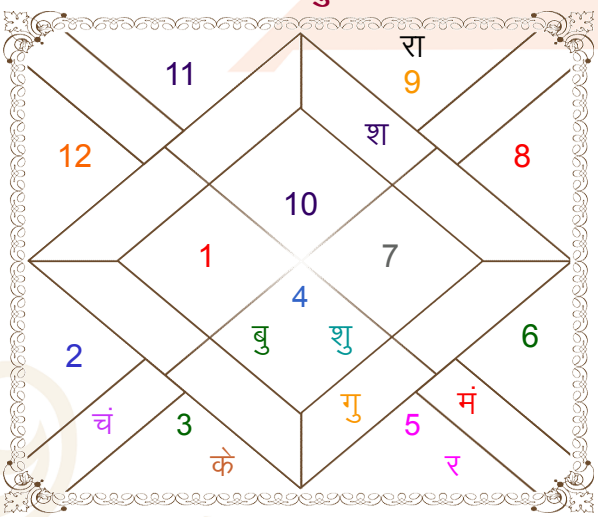

लग्न–चलित

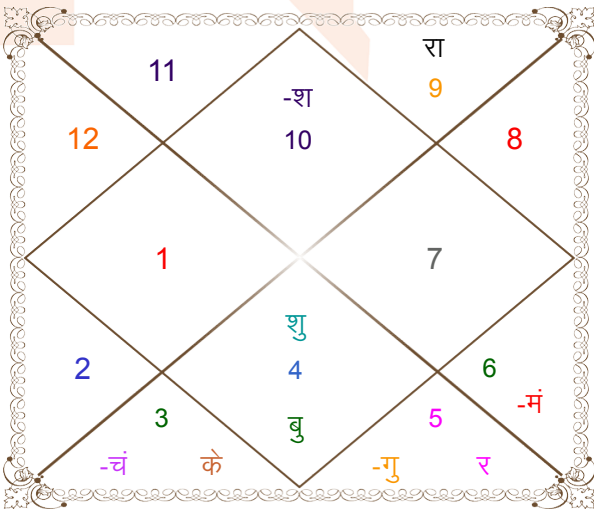

सुदर्शन चक्र

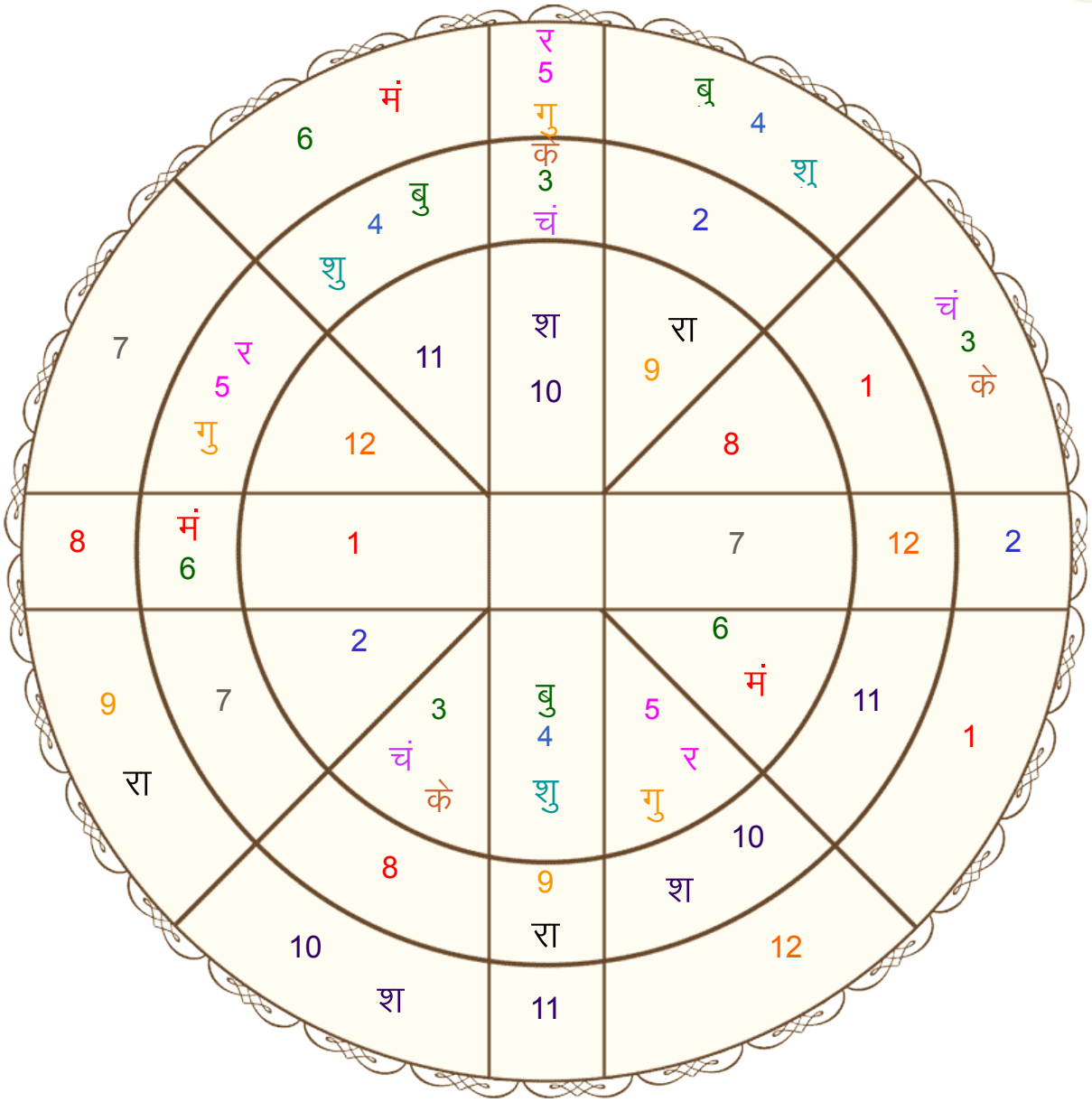

नोटः सुदर्शन चक्र क्रमानुसार बाहेरील वृत्ता पासून अन्तर वृत्ता पर्यंत रवि, चन्द्र व जन्मागं कुंडली मधील ग्रहांची तुलनात्मक स्थिती दर्शावित आहे. कोणत्या ही भावाचा विचार करन्या साठी त्या भावाला प्रकट करनारया तीनी राशिचां विचार करावा.

भोग्य दशा वेल : राहु 13 वर्ष 7 महिना 24 दिवस

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		सिंह	16:52:07	सूर्य	शुक्र	चंद्र	शनि
चंद्र		मिथु	09:53:22	बुध	राहु	गुरु	सूर्य
मंगळ		कन्या	07:48:04	बुध	सूर्य	शुक्र	शुक्र
बुध		सिंह	00:00:26	सूर्य	केतु	केतु	केतु
गुरु		सिंह	04:29:19	सूर्य	केतु	चंद्र	केतु
शुक्र	व	कर्क	29:17:42	चंद्र	बुध	शनि	मंगळ
शनि	व	मक	07:21:08	शनि	सूर्य	केतु	राहु
राहु		धनु	24:00:04	गुरु	शुक्र	बुध	बुध
केतु		मिथु	24:00:04	बुध	गुरु	बुध	बुध
हर्ष	व	धनु	16:18:11	गुरु	शुक्र	चंद्र	चंद्र
नेप	व	धनु	20:29:22	गुरु	शुक्र	गुरु	शनि
प्लूटो		तुला	24:18:06	शुक्र	गुरु	बुध	शुक्र

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	मक	29:23:13	शनि	मंगळ	शनि	मंगळ
2	मीन	10:22:40	गुरु	शनि	सूर्य	चंद्र
3	मेष	14:29:22	मंगळ	शुक्र	शुक्र	गुरु
4	वृष	11:24:23	शुक्र	चंद्र	मंगळ	शनि
5	मिथु	05:01:13	बुध	मंगळ	सूर्य	राहु
6	मिथु	29:21:37	बुध	गुरु	सूर्य	शुक्र
7	कर्क	29:23:13	चंद्र	बुध	शनि	मंगळ
8	कन्या	10:22:40	बुध	चंद्र	चंद्र	गुरु
9	तुला	14:29:22	शुक्र	राहु	केतु	केतु
10	वृश्चि	11:24:23	मंगळ	शनि	चंद्र	गुरु
11	धनु	05:01:13	गुरु	केतु	मंगळ	गुरु
12	धनु	29:21:37	गुरु	सूर्य	राहु	राहु

के.पी. अयनांश : 23:38:14

फॉरच्युना : वृश्चिक 22:24:28

लग्न कुंडली

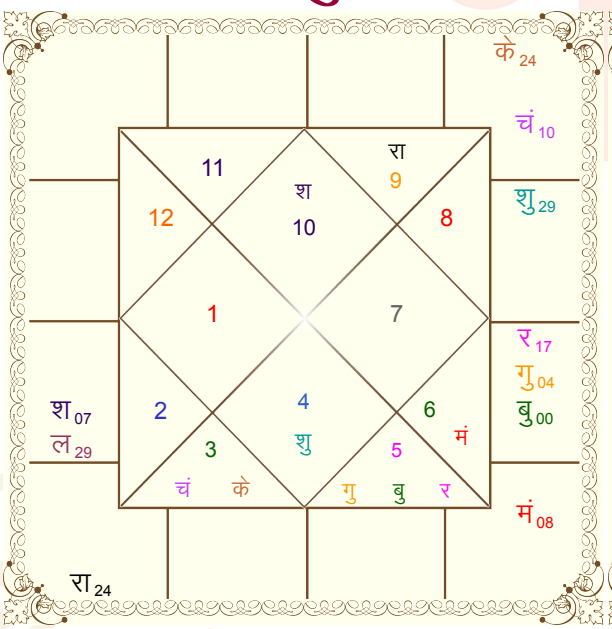

भाव कुंडली

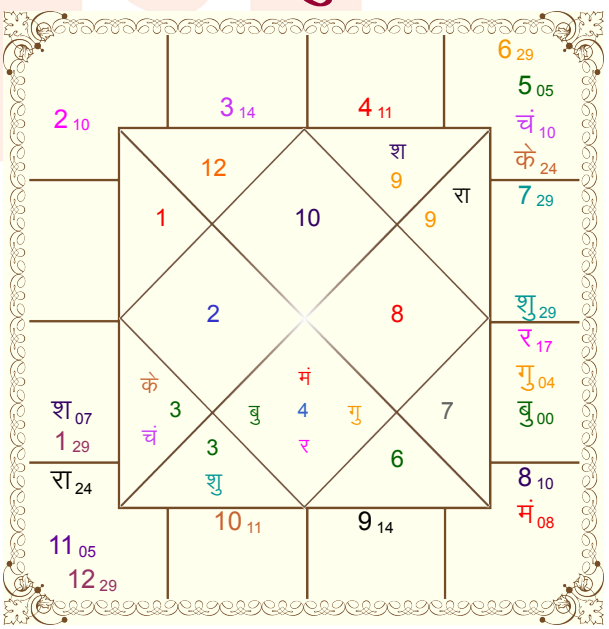

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	शनि–
2	गुरु– केतु–
3	मंगळ–
4	सूर्य– शुक्र– राहु–
5	चंद्र, बुध+ गुरु, शुक्र– केतु,
6	सूर्य, बुध– शुक्र+ राहु,
7	सूर्य, चंद्र– मंगळ+ बुध, गुरु, शुक्र, शनि, केतु,
8	बुध– शुक्र–
9	सूर्य– शुक्र– राहु–
10	मंगळ–
11	चंद्र, गुरु– राहु, केतु–
12	गुरु– शनि, केतु–

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	4- 6, 7, 9-
चंद्र	5, 7- 11,
मंगळ	3- 7+ 10-
बुध	5+ 6- 7, 8-
गुरु	2- 5, 7, 11- 12-
शुक्र	4- 5- 6+ 7, 8- 9-
शनि	1- 7, 12,
राहु	4- 6, 9- 11,
केतु	2- 5, 7, 11- 12-

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	मंगळ
लग्न राशि स्वामी	शनि
राशि नक्षत्र स्वामी	राहु
राशि स्वामी	बुध
वार स्वामी	मंगळ
लग्न अन्तर स्वामी	शनि
राशि अन्तर स्वामी	गुरु

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न चा विस्तार होत आहेत. प्रत्येक कुंडली चा एक विशेष लक्ष्य होत आहेत, खालील पत्रिका मदी वर्णन दिले आहेत. हे कुंडलिया कुटला विषय चा प्रतिनिधित्व करते ते आपण समझु शकते. हे चा अध्ययन मूल जन्मपत्रिका बरोबर केला पाहिजे. पूर्ण लक्ष देउन हे पत्रिकाचा अभ्यास करायचे, कारण ईथे ग्रहांची दृष्टि नाहीं होती. साधारणपणे ग्रहांचा आचरण ते राशि चा भाव पर्यंत सिमित राहतो, ते हे वर्गीय पत्रिकेत स्थित आहे.

रवि कुंडली

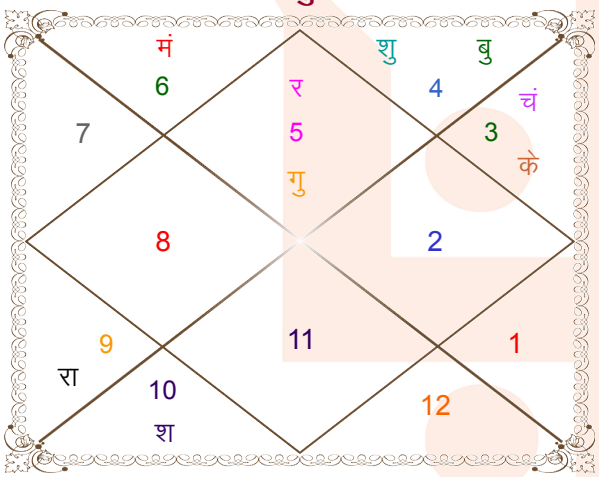

आत्मविचारः

चन्द्र कुंडली

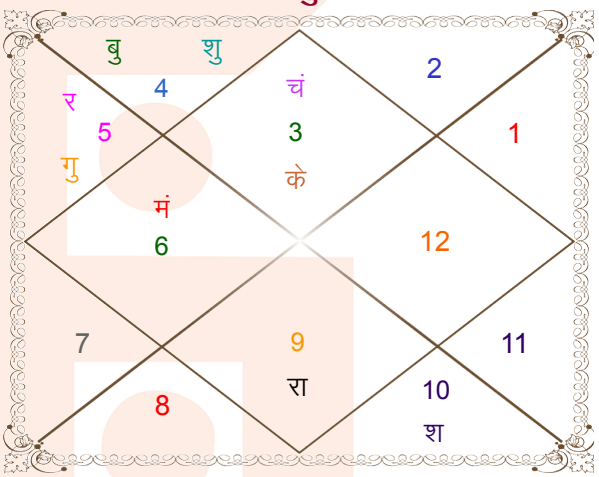

मनोबलविचारः

लग्न कुंडली

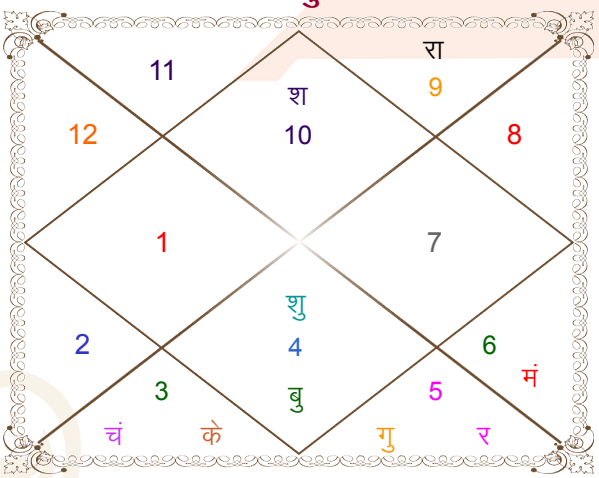

देह विचारः

होरा कुंडली

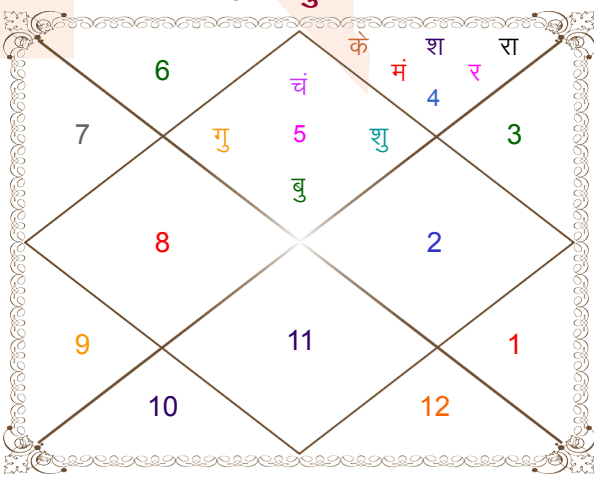

सम्पदाविचारः

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

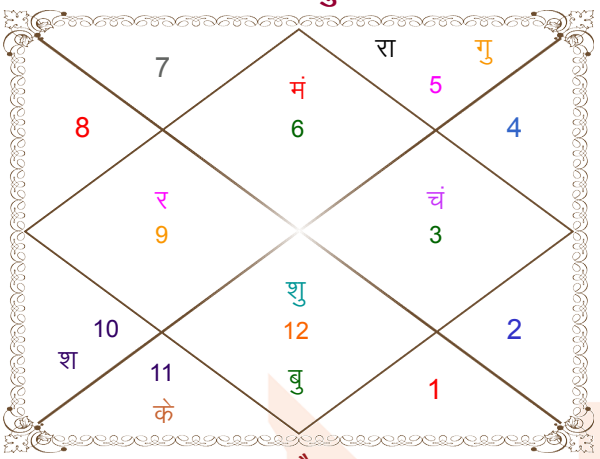

भ्रातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

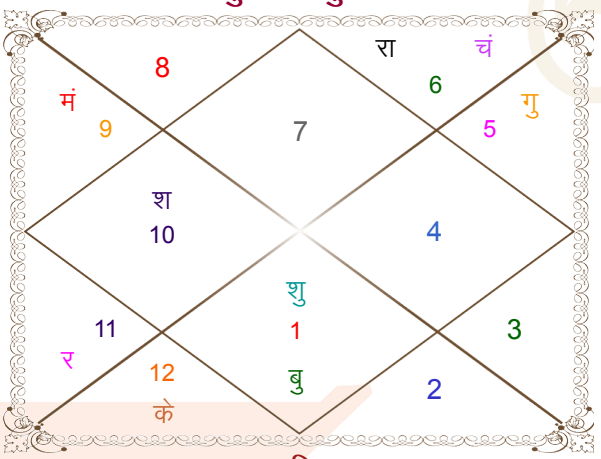

भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली

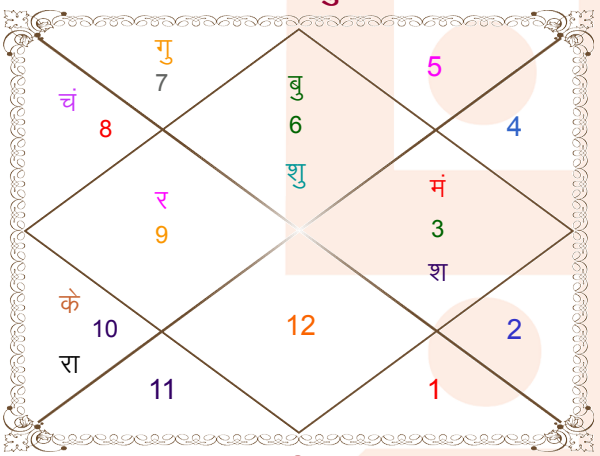

ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली

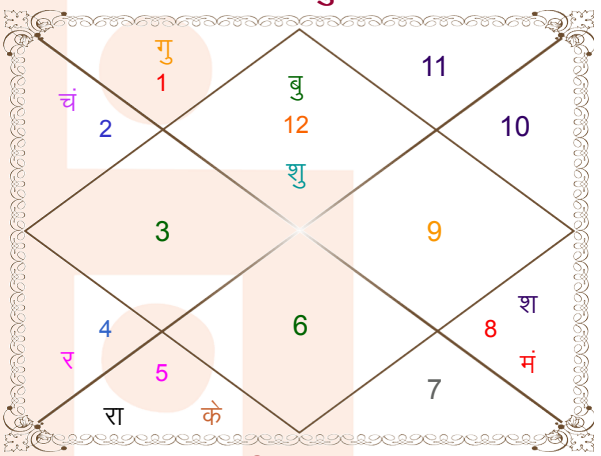

रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

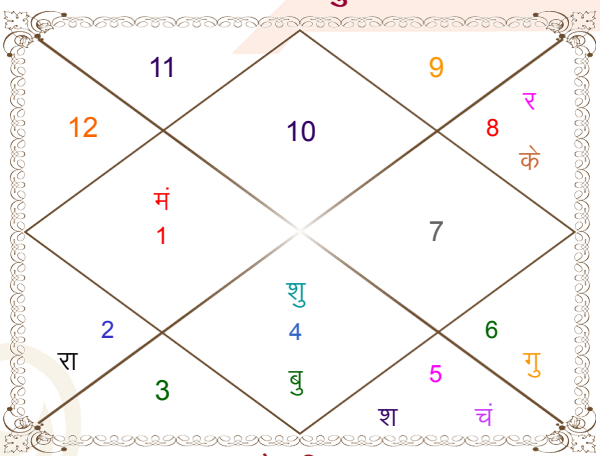

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली

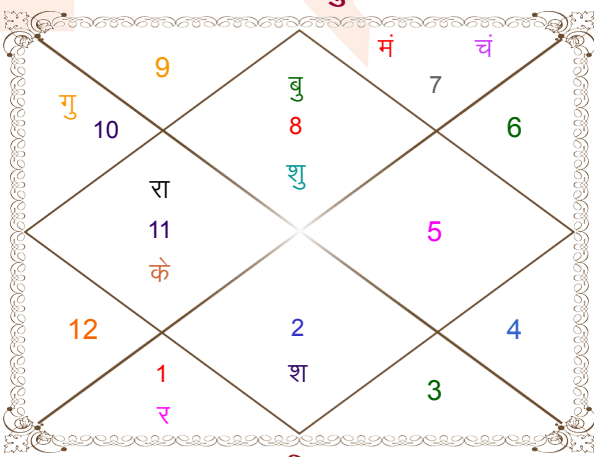

आयुविचारः

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

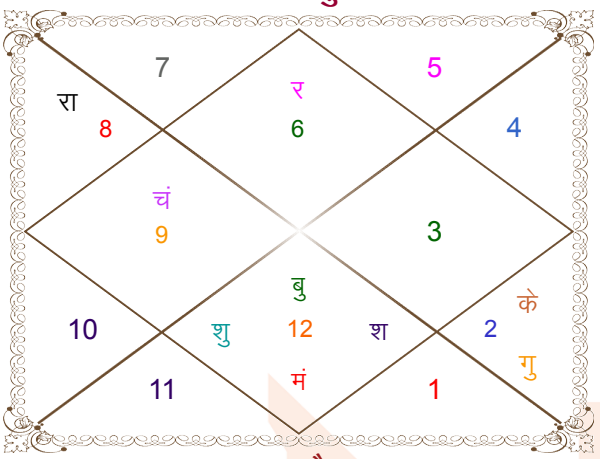

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

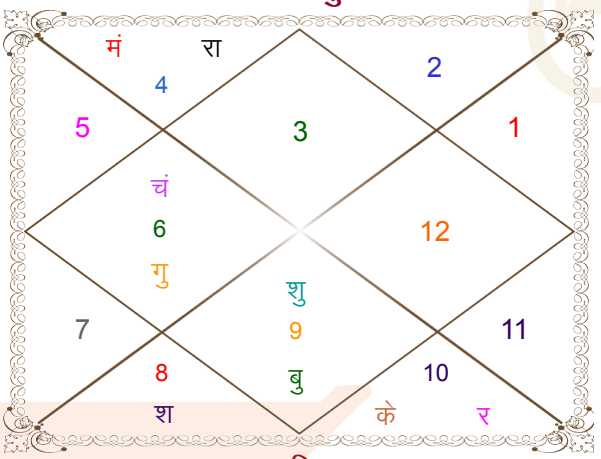

राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली

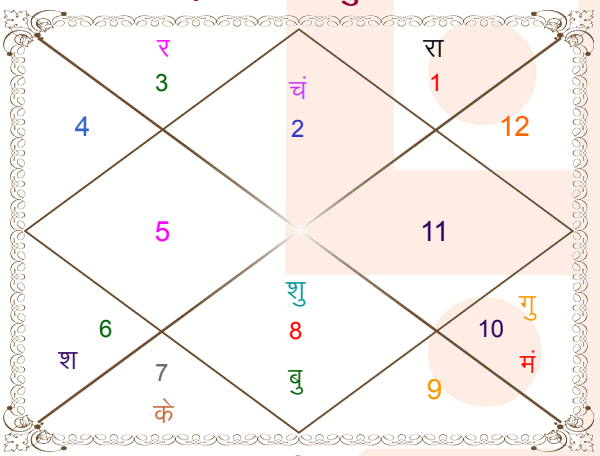

लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली

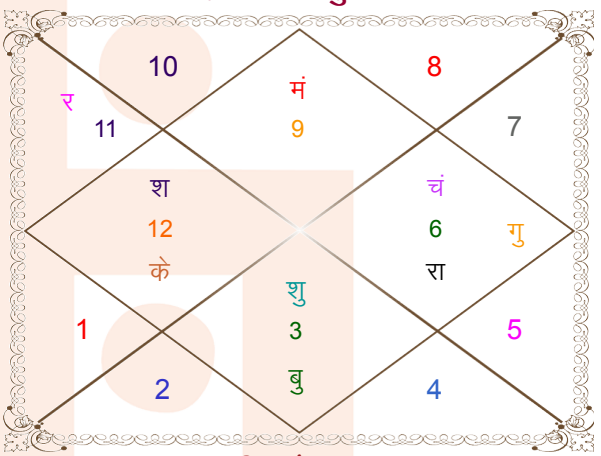

पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली

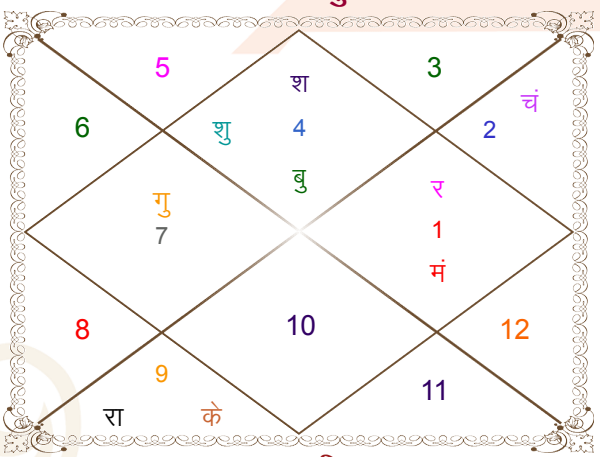

वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली

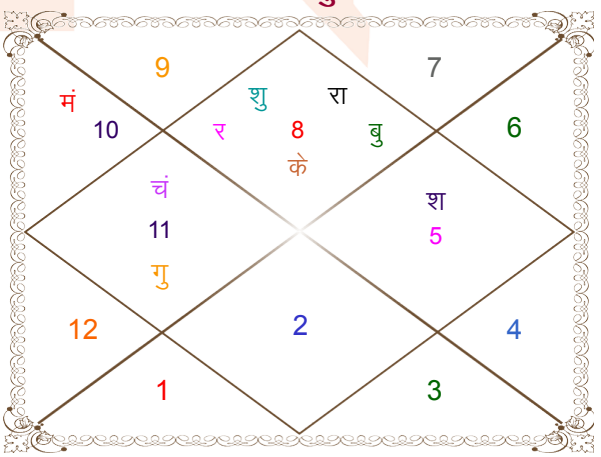

उपासनाज्ञानम्

षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशांश कुंडली

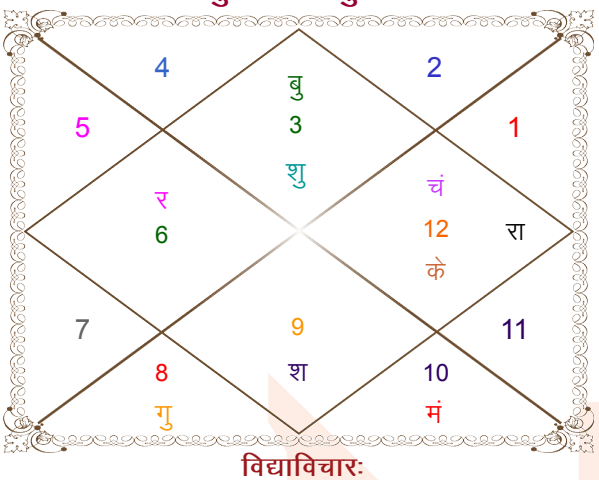

विद्याविचारः

सप्तविंशांश कुंडली

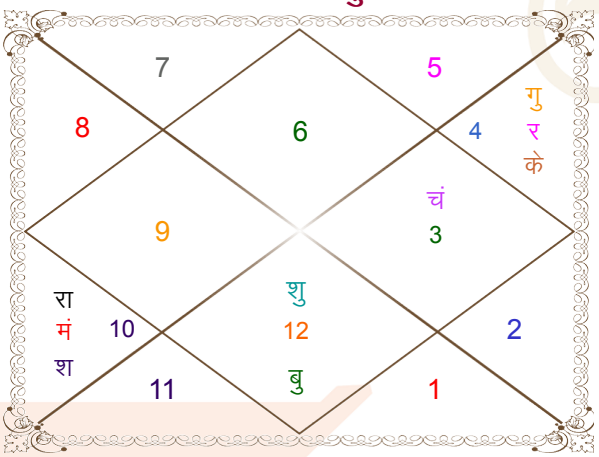

बलाबलज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

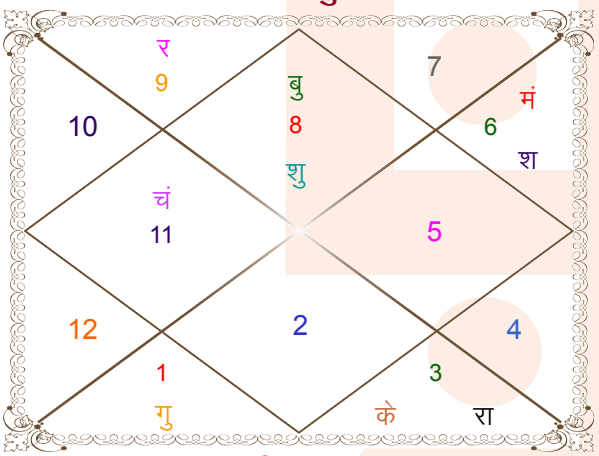

अरिष्टज्ञानम्

खवेदांश कुंडली

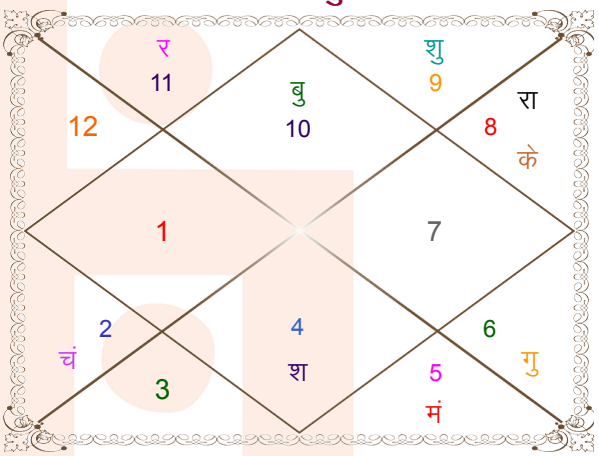

शुभाशुभज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली

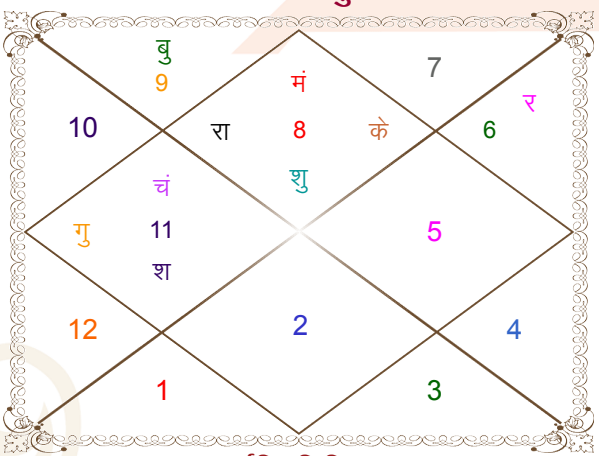

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

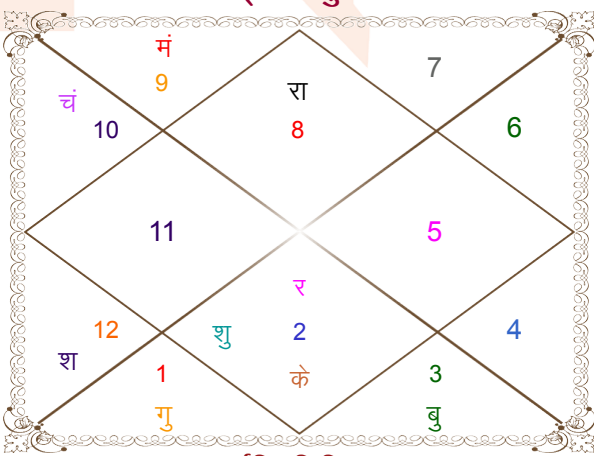

सर्वास्थितिविचारः

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगळ	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	मक	सिंह	मिथु	कन्या	कर्क	सिंह	कर्क	मक	धनु	मिथु
होरा	सिंह	कर्क	सिंह	कर्क	सिंह	सिंह	सिंह	कर्क	कर्क	कर्क
द्रेष्काण	कन्या	धनु	मिथु	कन्या	मीन	सिंह	मीन	मक	सिंह	कुंभ
चतुर्थांश	तुला	कुंभ	कन्या	धनु	मेष	सिंह	मेष	मक	कन्या	मीन
सप्तमांश	मक	वृश्चि	सिंह	मेष	कर्क	कन्या	कर्क	सिंह	वृष	वृश्चि
नवमांश	कन्या	कन्या	धनु	मीन	मीन	वृष	मीन	मीन	वृश्चि	वृष
दशमांश	मिथु	मक	कन्या	कर्क	धनु	कन्या	धनु	वृश्चि	कर्क	मक
द्वादशांश	धनु	कुंभ	कन्या	धनु	मिथु	कन्या	मिथु	मीन	कन्या	मीन
षोडशांश	कर्क	मेष	वृष	मेष	कर्क	तुला	कर्क	कर्क	धनु	धनु
विंशांश	वृश्चि	वृश्चि	कुंभ	मक	वृश्चि	कुंभ	वृश्चि	सिंह	वृश्चि	वृश्चि
चतुर्विंशांश	मिथु	कन्या	मीन	मक	मिथु	वृश्चि	मिथु	धनु	मीन	मीन
सप्तविंशांश	कन्या	कर्क	मिथु	मक	मीन	कर्क	मीन	मक	मक	कर्क
त्रिंशांश	वृश्चि	धनु	कुंभ	कन्या	वृश्चि	मेष	वृश्चि	कन्या	मिथु	मिथु
खवेदांश	मक	कुंभ	वृष	सिंह	मक	कन्या	धनु	कर्क	वृश्चि	वृश्चि
अक्षवेदांश	वृश्चि	कन्या	कुंभ	वृश्चि	धनु	कुंभ	वृश्चि	कुंभ	वृश्चि	वृश्चि
षष्ट्यंश	वृश्चि	वृष	मक	धनु	मिथु	मेष	वृष	मीन	वृश्चि	वृष

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
रवि	1 –––	1 –––	2 पारिजात	2 भेदक
चन्द्र	0 –––	0 –––	1 –––	2 भेदक
मंगळ	0 –––	1 –––	2 पारिजात	6 केरल
बुध	1 –––	1 –––	2 पारिजात	3 कुसुम
गुरु	0 –––	0 –––	0 –––	1 –––
शुक्र	2 किंसुक	2 किंसुक	3 उत्तम	4 नागपुष्प
शनि	2 किंसुक	2 किंसुक	2 पारिजात	5 कन्दुक
राहु	2 किंसुक	2 किंसुक	2 पारिजात	3 कुसुम
केतु	1 –––	1 –––	2 पारिजात	4 नागपुष्प

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगळ	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	14.55	16.70	13.60	14.30	10.40	12.50	13.45	7.15	12.75
सप्तवर्ग	14.93	16.78	14.65	13.93	10.40	12.13	11.90	7.55	13.55
दशवर्ग	12.93	13.98	15.90	15.35	12.60	14.00	9.55	7.75	13.95
षोडशवर्ग	14.05	13.80	15.28	14.70	12.25	14.00	10.55	8.38	14.85

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगळ	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	———	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	———	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगळ	मित्र	मित्र	———	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	———	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	———	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	———	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	———	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	———	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	———

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगळ	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	———	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र
चंद्र	मित्र	———	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु
मंगळ	मित्र	मित्र	———	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र
बुध	मित्र	मित्र	मित्र	———	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र
गुरु	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	———	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र
शुक्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	———	शत्रु	शत्रु	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	———	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	———	शत्रु
केतु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	———

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगळ	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	———	अधिमित्र	अधिमित्र	मित्र	सम	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम
चंद्र	अधिमित्र	———	मित्र	अधिमित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु
मंगळ	अधिमित्र	अधिमित्र	———	सम	अधिमित्र	मित्र	शत्रु	सम	अधिमित्र
बुध	अधिमित्र	सम	मित्र	———	मित्र	सम	शत्रु	शत्रु	मित्र
गुरु	सम	अधिमित्र	अधिमित्र	सम	———	सम	शत्रु	शत्रु	मित्र
शुक्र	सम	सम	मित्र	सम	मित्र	———	सम	सम	अधिमित्र
शनि	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	शत्रु	सम	———	अधिमित्र	अधिशत्रु
राहु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	सम	अधिमित्र	———	अधिशत्रु
केतु	सम	अधिशत्रु	अधिमित्र	मित्र	मित्र	अधिमित्र	अधिशत्रु	अधिशत्रु	———

षट्बल आणि भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगळ	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	18	48	13	45	50	19	34
सप्तवर्गज बल	122	131	120	113	68	75	79
ओजयुग्मक बल	15	0	0	0	15	30	0
केन्द्र बल	30	15	15	60	30	60	60
द्रेष्काण बल	0	0	15	0	15	15	0
एकुण स्थान बल	185	194	163	217	178	199	173
एकुण दिग्बल	32	51	39	0	2	34	7
नतोन्नत बल	33	27	27	60	33	33	27
पक्ष बल	38	75	38	22	22	22	38
त्रिभाग बल	0	0	0	0	60	0	60
अब्द बल	0	0	0	0	15	0	0
महिना बल	0	0	0	0	0	0	30
वार बल	0	0	45	0	0	0	0
होरा बल	0	60	0	0	0	0	0
अयन बल	80	0	29	48	46	48	56
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
एकुण कालबल	151	162	139	130	176	103	210
एकुण चेष्टाबल	0	0	9	32	6	54	47
एकुण नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
एकुण दृग्बल	-16	-6	-16	-15	-15	-15	-16
एकुण षट्बल	412	453	352	391	381	419	430
रूप षट्बल	6.9	7.5	5.9	6.5	6.3	7.0	7.2
किमान आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
प्रमाण	1.4	1.3	1.2	0.9	1.0	1.3	1.4
तौलनिक स्थिति	2	4	5	7	6	3	1

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगळ	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	25.45	32.65	11.12	37.82	16.82	32.26	40.10
कष्ट फल	31.51	21.49	48.68	20.58	23.07	15.62	18.34

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	430	381	352	419	391	453	453	391	419	352	381	430
भावदिग्बल	30	40	10	0	20	40	30	10	20	30	40	40
भावदृष्टि बल	106	66	60	5	-5	-14	-15	-15	21	75	52	13
एकुण भाव बल	567	487	422	424	406	479	468	385	460	457	472	483
रूप भाव बल	9.4	8.1	7.0	7.1	6.8	8.0	7.8	6.4	7.7	7.6	7.9	8.0
तौलनिक स्थिति	1	2	10	9	11	4	6	12	7	8	5	3

उपग्रह आणि आरूढ

उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	मक	29:16:43	––	––	धनिष्ठा	2	23
गुलिक	गु	वृश्चि	29:08:54	––	––	ज्येष्ठा	4	18
काल	का	धनु	21:31:13	––	––	पूर्वाषाढ़ा	3	20
मृत्यु	मृ	कन्या	06:37:52	––	––	उ.फाल्गुनी	3	12
यमघंटक	यम	तुला	17:57:03	––	––	स्वाति	4	15
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	कन्या	27:21:16	––	––	चित्रा	2	14
धूम	धू	मक	00:05:37	––	मूल	उत्तराषाढ़ा	2	21
व्यतिपात	व्य	मिथु	29:54:23	––	मूल	पुनर्वसु	3	7
परिवेश	परि	धनु	29:54:23	नीच	मूल	उत्तराषाढ़ा	1	21
इन्द्रचाप	इ	कर्क	00:05:37	––	मूल	पुनर्वसु	4	7
उपकेतु	उप	कर्क	16:45:37	––	मूल	आश्लेषा	1	9

प्राणपद	:	कुंभ	02:34:56	कारकाँश लग्न	:	मीन	29:05:20
भाव लग्न	:	कर्क	25:34:11	होरा लग्न	:	मक	21:51:39
घटी लग्न	:	मक	28:12:57	वर्णद लग्न	:	सिंह	08:51:38

उपग्रह कुंडली

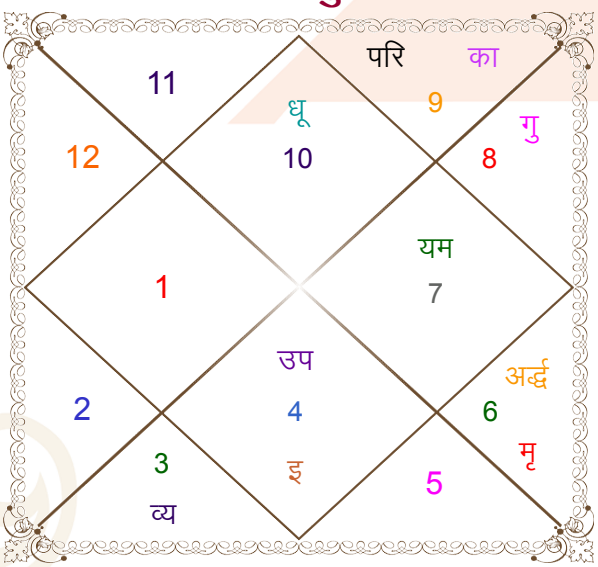

आरूढ़ कुंडली

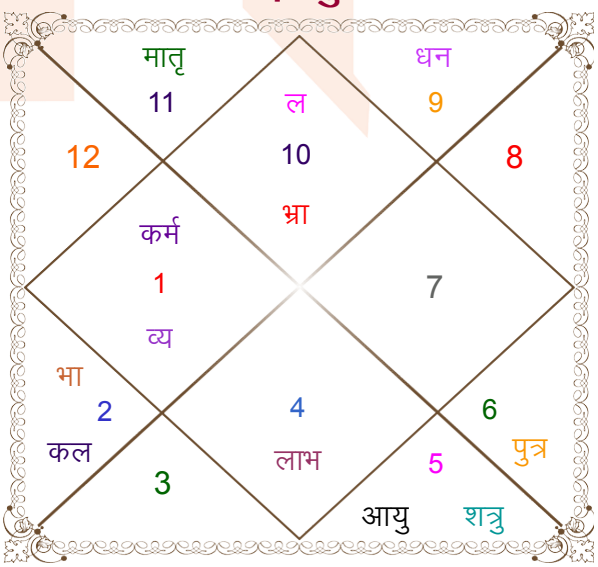

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्कुण
शनि	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1 8
गुरु	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	0 4
मंगळ	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1 8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0 8
शुक्र	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	0 3
बुध	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	0 7
चंद्र	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	0	0 4
लग्न	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0 6
एकुण	**3**	**4**	**3**	**5**	**5**	**3**	**2**	**5**	**7**	**3**	**6**	**2 48**

चंद्र का अष्टकवर्ग

	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृकुण
शनि	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	1 4
गुरु	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1 7
मंगळ	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	0	0 6
सूर्य	1	0	0	0	1	0	0	1	1	1	0	1 6
शुक्र	0	0	0	1	1	1	0	1	0	1	1	1 7
बुध	0	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1 8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0 7
लग्न	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0 4
एकुण	**6**	**2**	**2**	**3**	**5**	**7**	**1**	**4**	**5**	**6**	**3**	**5 49**

मंगळ का अष्टकवर्ग

	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सिंकुण
शनि	1	1	1	0	1	0	0	1	0	0	1	1 7
गुरु	0	0	0	0	1	0	0	0	1	1	1	0 4
मंगळ	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0 7
सूर्य	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	0	0 5
शुक्र	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0 4
बुध	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0 4
चंद्र	0	0	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1 3
लग्न	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0 5
एकुण	**3**	**4**	**4**	**4**	**4**	**1**	**2**	**3**	**4**	**5**	**3**	**2 39**

बुद्ध का अष्टकवर्ग

	कर्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मिंकुण
शनि	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0 8
गुरु	1	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1 4
मंगळ	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1 8
सूर्य	1	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1 5
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0 8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1 8
चंद्र	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	0 6
लग्न	0	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1 7
एकुण	**7**	**3**	**5**	**4**	**5**	**3**	**5**	**3**	**5**	**6**	**3**	**5 54**

गुरू का अष्टकवर्ग

	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्कुण
शनि	0	0	0	0	1	0	0	1	0	1	1	0 4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0 8
मंगळ	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1 7
सूर्य	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	1	0 9
शुक्र	1	0	0	1	1	0	0	1	1	1	0	0 6
बुध	1	0	1	1	1	0	0	1	1	1	0	1 8
चंद्र	0	0	1	0	1	0	1	0	1	0	0	1 5
लग्न	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1 9
एकुण	**4**	**4**	**6**	**5**	**5**	**1**	**4**	**6**	**6**	**6**	**5**	**4 56**

शुक्र का अष्टकवर्ग

	कर्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मिंकुण
शनि	0	1	1	1	1	0	0	0	1	1	1	0 7
गुरु	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	1	1 5
मंगळ	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	1	0 6
सूर्य	1	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1 3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0 9
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0 5
चंद्र	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	1 9
लग्न	0	1	1	0	1	0	1	1	1	1	1	0 8
एकुण	**4**	**5**	**5**	**3**	**5**	**3**	**2**	**4**	**6**	**5**	**7**	**3 52**

शनि का अष्टकवर्ग

	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृश्चि	धकुण
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0 4
गुरु	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1 4
मंगळ	1	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	0 6
सूर्य	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0 7
शुक्र	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	0	1 3
बुध	0	1	1	1	1	1	0	0	0	0	0	1 6
चंद्र	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	0 3
लग्न	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	0 6
एकुण	**3**	**3**	**4**	**3**	**4**	**7**	**2**	**3**	**1**	**1**	**5**	**3 39**

लग्न का अष्टकवर्ग

	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृश्चि	धकुण
शनि	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	0 6
गुरु	1	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1 9
मंगळ	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	0 5
सूर्य	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0 6
शुक्र	0	1	1	0	0	0	1	1	1	1	1	0 7
बुध	0	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1 7
चंद्र	0	0	1	1	1	0	0	1	0	0	1	0 5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0 4
एकुण	**3**	**4**	**4**	**4**	**4**	**5**	**4**	**4**	**3**	**5**	**7**	**2 49**

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	एकुण
शनि	3	4	7	2	3	1	1	5	3	3	3	4	39
गुरु	6	6	5	4	4	4	6	5	5	1	4	6	56
मंगळ	3	4	5	3	2	3	4	4	4	4	1	2	39
सूर्य	7	3	6	2	3	4	3	5	5	3	2	5	48
शुक्र	5	7	3	4	5	5	3	5	3	2	4	6	52
बुध	6	3	5	7	3	5	4	5	3	5	3	5	54
चंद्र	3	5	6	2	2	3	5	7	1	4	5	6	49
बिन्दु	33	32	37	24	22	25	26	36	24	22	22	34	337
रेखा	23	24	19	32	34	31	30	20	32	34	34	22	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	एकुण
शनि	0	3	6	0	0	0	0	3	0	2	2	2	18
गुरु	2	5	1	0	0	3	2	1	1	0	0	2	17
मंगळ	1	1	4	1	0	0	3	2	2	1	0	0	15
सूर्य	4	0	4	0	0	1	1	3	2	0	0	3	18
शुक्र	2	5	0	0	2	3	0	1	0	0	1	2	16
बुध	3	0	2	2	0	2	1	0	0	2	0	0	12
चंद्र	2	2	1	0	1	0	0	5	0	1	0	4	16
रेखा	14	16	18	3	3	9	7	15	5	6	3	13	112

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	एकुण
शनि	0	3	6	0	0	0	0	3	0	2	0	2	16
गुरु	1	3	1	0	0	3	2	1	1	0	0	1	13
मंगळ	1	1	4	1	0	0	2	1	2	1	0	0	13
सूर्य	1	0	4	0	0	1	1	3	2	0	0	1	13
शुक्र	1	5	0	0	2	3	0	1	0	0	1	2	15
बुध	3	0	2	2	0	2	1	0	0	2	0	0	12
चंद्र	2	2	1	0	1	0	0	3	0	1	0	4	14
रेखा	9	14	18	3	3	9	6	12	5	6	1	10	96

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगळ	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	105	129	98	72	103	135	136
ग्रह पिंड	28	25	37	60	29	54	40
शोध्य पिंड	133	154	135	132	132	189	176

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

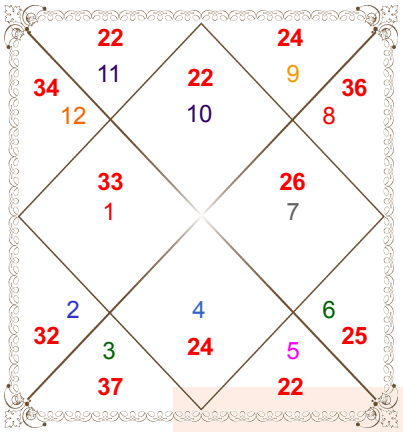

सूर्य का अष्टकवर्ग

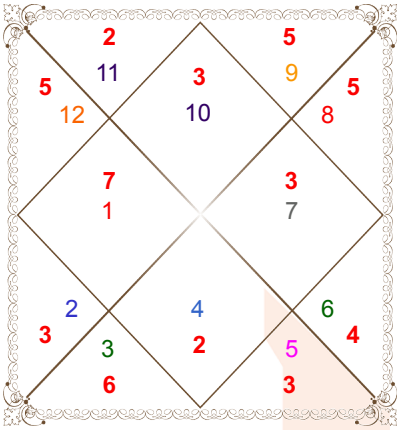

चंद्र का अष्टकवर्ग

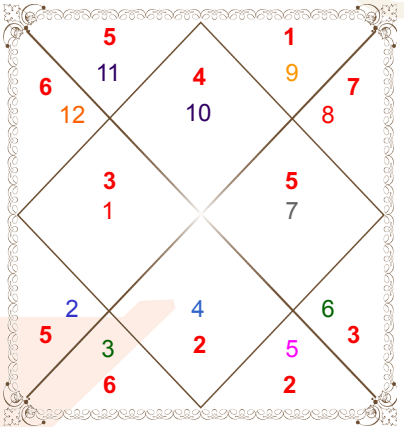

मंगळ का अष्टकवर्ग

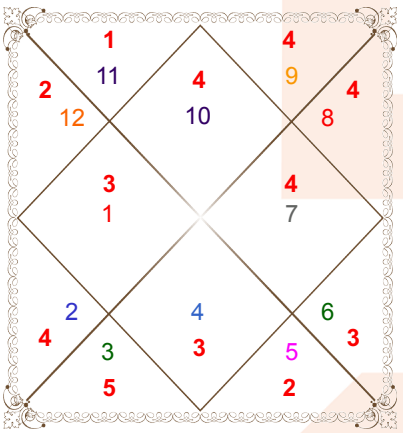

बुद्ध का अष्टकवर्ग

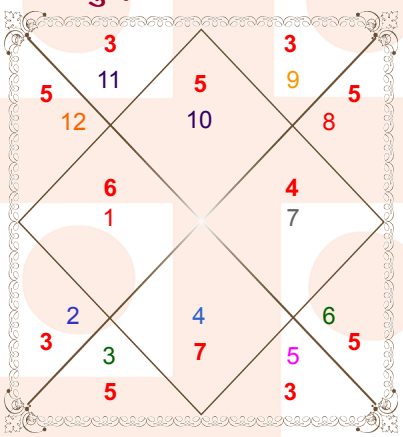

गुरू का अष्टकवर्ग

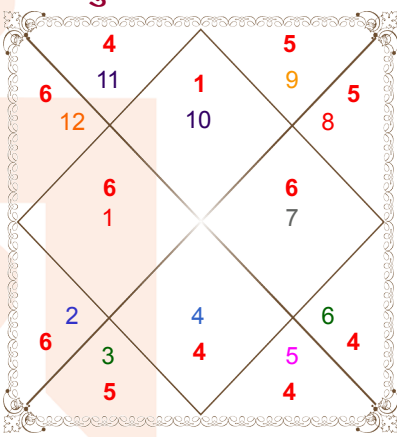

शुक्र का अष्टकवर्ग

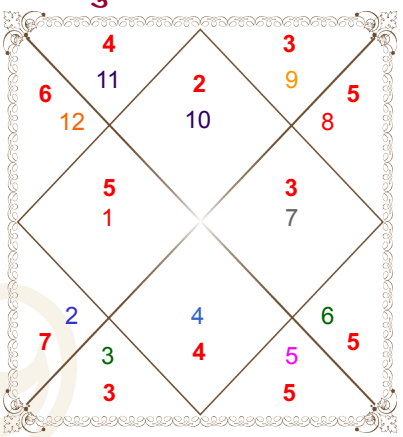

शनि का अष्टकवर्ग

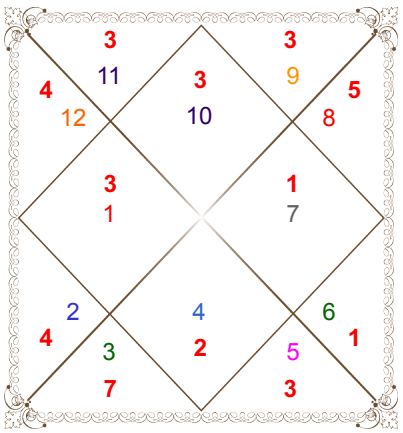

लग्न का अष्टकवर्ग

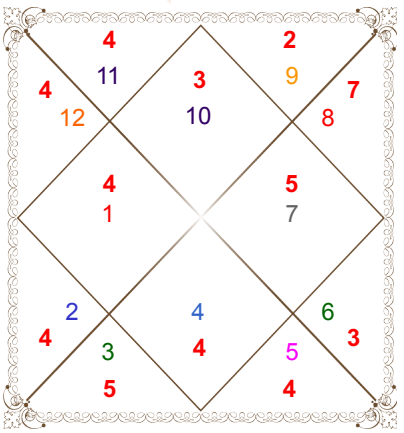

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा वेल : राहु 13 वर्ष 9 महिना 16 दिवस

राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष	
03/09/1991		20/06/2005		20/06/2021		20/06/2040		20/06/2057	
20/06/2005		20/06/2021		20/06/2040		20/06/2057		20/06/2064	
	03/09/1991	गुरु	08/08/2007	शनि	23/06/2024	बुध	16/11/2042	केतु	16/11/2057
गुरु	26/07/1992	शनि	19/02/2010	बुध	03/03/2027	केतु	14/11/2043	शुक्र	16/01/2059
शनि	02/06/1995	बुध	26/05/2012	केतु	11/04/2028	शुक्र	14/09/2046	सूर्य	24/05/2059
बुध	20/12/1997	केतु	02/05/2013	शुक्र	11/06/2031	सूर्य	21/07/2047	चंद्र	23/12/2059
केतु	07/01/1999	शुक्र	01/01/2016	सूर्य	23/05/2032	चंद्र	19/12/2048	मंगळ	20/05/2060
शुक्र	07/01/2002	सूर्य	20/10/2016	चंद्र	23/12/2033	मंगळ	17/12/2049	राहु	08/06/2061
सूर्य	02/12/2002	चंद्र	19/02/2018	मंगळ	01/02/2035	राहु	05/07/2052	गुरु	15/05/2062
चंद्र	02/06/2004	मंगळ	25/01/2019	राहु	08/12/2037	गुरु	11/10/2054	शनि	24/06/2063
मंगळ	20/06/2005	राहु	20/06/2021	गुरु	20/06/2040	शनि	20/06/2057	बुध	20/06/2064

शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगळ 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष	
20/06/2064		20/06/2084		20/06/2090		21/06/2100		22/06/2107	
20/06/2084		20/06/2090		21/06/2100		22/06/2107		00/00/0000	
शुक्र	20/10/2067	सूर्य	07/10/2084	चंद्र	21/04/2091	मंगळ	17/11/2100	राहु	04/03/2110
सूर्य	20/10/2068	चंद्र	08/04/2085	मंगळ	20/11/2091	राहु	05/12/2101	गुरु	04/09/2111
चंद्र	20/06/2070	मंगळ	14/08/2085	राहु	21/05/2093	गुरु	11/11/2102		00/00/0000
मंगळ	20/08/2071	राहु	09/07/2086	गुरु	20/09/2094	शनि	21/12/2103		00/00/0000
राहु	20/08/2074	गुरु	27/04/2087	शनि	20/04/2096	बुध	17/12/2104		00/00/0000
गुरु	20/04/2077	शनि	08/04/2088	बुध	19/09/2097	केतु	16/05/2105		00/00/0000
शनि	20/06/2080	बुध	12/02/2089	केतु	20/04/2098	शुक्र	16/07/2106		00/00/0000
बुध	21/04/2083	केतु	20/06/2089	शुक्र	20/12/2099	सूर्य	20/11/2106		00/00/0000
केतु	20/06/2084	शुक्र	20/06/2090	सूर्य	21/06/2100	चंद्र	22/06/2107		00/00/0000

- वरील दशा चन्द्रमा चे अंशा चे आधार वर्ती दीलेली आहे. भयात भभोग चे आधार अनुसार दशाच्या भोग्यकाल राहु 13 वर्ष 9 मा 10 दि होता आहेत.
- वरील दिनांक दशा समाप्ति चा समय दाखवते. विंशोत्तरी दशा पूर्ण 120 वर्षाची बिना आयुनिर्णय दिलेली आहे.

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - गुरु		राहु - शनि		राहु - बुध		राहु - केतु		राहु - शुक्र	
03/09/1991		26/07/1992		02/06/1995		20/12/1997		07/01/1999	
26/07/1992		02/06/1995		20/12/1997		07/01/1999		07/01/2002	
	00/00/0000	शनि	07/01/1993	बुध	12/10/1995	केतु	11/01/1998	शुक्र	09/07/1999
	00/00/0000	बुध	04/06/1993	केतु	06/12/1995	शुक्र	16/03/1998	सूर्य	02/09/1999
	00/00/0000	केतु	03/08/1993	शुक्र	09/05/1996	सूर्य	04/04/1998	चंद्र	02/12/1999
	03/09/1991	शुक्र	24/01/1994	सूर्य	24/06/1996	चंद्र	06/05/1998	मंगळ	04/02/2000
शुक्र	01/10/1991	सूर्य	17/03/1994	चंद्र	10/09/1996	मंगळ	28/05/1998	राहु	17/07/2000
सूर्य	14/11/1991	चंद्र	12/06/1994	मंगळ	03/11/1996	राहु	25/07/1998	गुरु	10/12/2000
चंद्र	26/01/1992	मंगळ	11/08/1994	राहु	23/03/1997	गुरु	14/09/1998	शनि	02/06/2001
मंगळ	17/03/1992	राहु	14/01/1995	गुरु	25/07/1997	शनि	14/11/1998	बुध	04/11/2001
राहु	26/07/1992	गुरु	02/06/1995	शनि	20/12/1997	बुध	07/01/1999	केतु	07/01/2002

राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगळ		गुरु - गुरु		गुरु - शनि	
07/01/2002		02/12/2002		02/06/2004		20/06/2005		08/08/2007	
02/12/2002		02/06/2004		20/06/2005		08/08/2007		19/02/2010	
सूर्य	23/01/2002	चंद्र	16/01/2003	मंगळ	24/06/2004	गुरु	02/10/2005	शनि	02/01/2008
चंद्र	20/02/2002	मंगळ	17/02/2003	राहु	20/08/2004	शनि	02/02/2006	बुध	12/05/2008
मंगळ	11/03/2002	राहु	10/05/2003	गुरु	11/10/2004	बुध	24/05/2006	केतु	05/07/2008
राहु	29/04/2002	गुरु	23/07/2003	शनि	10/12/2004	केतु	08/07/2006	शुक्र	06/12/2008
गुरु	12/06/2002	शनि	17/10/2003	बुध	03/02/2005	शुक्र	15/11/2006	सूर्य	21/01/2009
शनि	03/08/2002	बुध	03/01/2004	केतु	25/02/2005	सूर्य	24/12/2006	चंद्र	08/04/2009
बुध	19/09/2002	केतु	04/02/2004	शुक्र	30/04/2005	चंद्र	27/02/2007	मंगळ	01/06/2009
केतु	08/10/2002	शुक्र	05/05/2004	सूर्य	19/05/2005	मंगळ	13/04/2007	राहु	18/10/2009
शुक्र	02/12/2002	सूर्य	02/06/2004	चंद्र	20/06/2005	राहु	08/08/2007	गुरु	19/02/2010

गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र	
19/02/2010		26/05/2012		02/05/2013		01/01/2016		20/10/2016	
26/05/2012		02/05/2013		01/01/2016		20/10/2016		19/02/2018	
बुध	16/06/2010	केतु	15/06/2012	शुक्र	12/10/2013	सूर्य	16/01/2016	चंद्र	29/11/2016
केतु	03/08/2010	शुक्र	11/08/2012	सूर्य	29/11/2013	चंद्र	09/02/2016	मंगळ	28/12/2016
शुक्र	19/12/2010	सूर्य	28/08/2012	चंद्र	19/02/2014	मंगळ	26/02/2016	राहु	11/03/2017
सूर्य	30/01/2011	चंद्र	26/09/2012	मंगळ	16/04/2014	राहु	10/04/2016	गुरु	15/05/2017
चंद्र	09/04/2011	मंगळ	15/10/2012	राहु	09/09/2014	गुरु	19/05/2016	शनि	31/07/2017
मंगळ	27/05/2011	राहु	06/12/2012	गुरु	17/01/2015	शनि	04/07/2016	बुध	08/10/2017
राहु	28/09/2011	गुरु	20/01/2013	शनि	21/06/2015	बुध	15/08/2016	केतु	05/11/2017
गुरु	16/01/2012	शनि	15/03/2013	बुध	06/11/2015	केतु	01/09/2016	शुक्र	25/01/2018
शनि	26/05/2012	बुध	02/05/2013	केतु	01/01/2016	शुक्र	20/10/2016	सूर्य	19/02/2018

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - मंगळ		गुरु - राहु		शनि - शनि		शनि - बुध		शनि - केतु	
19/02/2018		25/01/2019		20/06/2021		23/06/2024		03/03/2027	
25/01/2019		20/06/2021		23/06/2024		03/03/2027		11/04/2028	
मंगळ	10/03/2018	राहु	06/06/2019	शनि	11/12/2021	बुध	09/11/2024	केतु	27/03/2027
राहु	01/05/2018	गुरु	01/10/2019	बुध	16/05/2022	केतु	05/01/2025	शुक्र	02/06/2027
गुरु	15/06/2018	शनि	17/02/2020	केतु	19/07/2022	शुक्र	18/06/2025	सूर्य	22/06/2027
शनि	08/08/2018	बुध	20/06/2020	शुक्र	18/01/2023	सूर्य	06/08/2025	चंद्र	26/07/2027
बुध	25/09/2018	केतु	10/08/2020	सूर्य	14/03/2023	चंद्र	27/10/2025	मंगळ	19/08/2027
केतु	15/10/2018	शुक्र	03/01/2021	चंद्र	13/06/2023	मंगळ	24/12/2025	राहु	18/10/2027
शुक्र	11/12/2018	सूर्य	16/02/2021	मंगळ	17/08/2023	राहु	20/05/2026	गुरु	11/12/2027
सूर्य	28/12/2018	चंद्र	30/04/2021	राहु	28/01/2024	गुरु	28/09/2026	शनि	13/02/2028
चंद्र	25/01/2019	मंगळ	20/06/2021	गुरु	23/06/2024	शनि	03/03/2027	बुध	11/04/2028

शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगळ		शनि - राहु	
11/04/2028		11/06/2031		23/05/2032		23/12/2033		01/02/2035	
11/06/2031		23/05/2032		23/12/2033		01/02/2035		08/12/2037	
शुक्र	21/10/2028	सूर्य	29/06/2031	चंद्र	11/07/2032	मंगळ	15/01/2034	राहु	07/07/2035
सूर्य	17/12/2028	चंद्र	28/07/2031	मंगळ	13/08/2032	राहु	17/03/2034	गुरु	22/11/2035
चंद्र	24/03/2029	मंगळ	17/08/2031	राहु	08/11/2032	गुरु	10/05/2034	शनि	05/05/2036
मंगळ	30/05/2029	राहु	08/10/2031	गुरु	24/01/2033	शनि	13/07/2034	बुध	30/09/2036
राहु	20/11/2029	गुरु	23/11/2031	शनि	26/04/2033	बुध	08/09/2034	केतु	29/11/2036
गुरु	23/04/2030	शनि	17/01/2032	बुध	17/07/2033	केतु	02/10/2034	शुक्र	22/05/2037
शनि	23/10/2030	बुध	06/03/2032	केतु	19/08/2033	शुक्र	09/12/2034	सूर्य	13/07/2037
बुध	05/04/2031	केतु	27/03/2032	शुक्र	24/11/2033	सूर्य	29/12/2034	चंद्र	08/10/2037
केतु	11/06/2031	शुक्र	23/05/2032	सूर्य	23/12/2033	चंद्र	01/02/2035	मंगळ	08/12/2037

शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य	
08/12/2037		20/06/2040		16/11/2042		14/11/2043		14/09/2046	
20/06/2040		16/11/2042		14/11/2043		14/09/2046		21/07/2047	
गुरु	10/04/2038	बुध	22/10/2040	केतु	08/12/2042	शुक्र	04/05/2044	सूर्य	29/09/2046
शनि	03/09/2038	केतु	13/12/2040	शुक्र	06/02/2043	सूर्य	25/06/2044	चंद्र	25/10/2046
बुध	12/01/2039	शुक्र	08/05/2041	सूर्य	24/02/2043	चंद्र	19/09/2044	मंगळ	12/11/2046
केतु	07/03/2039	सूर्य	21/06/2041	चंद्र	26/03/2043	मंगळ	18/11/2044	राहु	29/12/2046
शुक्र	09/08/2039	चंद्र	03/09/2041	मंगळ	16/04/2043	राहु	23/04/2045	गुरु	08/02/2047
सूर्य	24/09/2039	मंगळ	24/10/2041	राहु	10/06/2043	गुरु	08/09/2045	शनि	29/03/2047
चंद्र	10/12/2039	राहु	05/03/2042	गुरु	28/07/2043	शनि	19/02/2046	बुध	12/05/2047
मंगळ	02/02/2040	गुरु	30/06/2042	शनि	23/09/2043	बुध	15/07/2046	केतु	30/05/2047
राहु	20/06/2040	शनि	16/11/2042	बुध	14/11/2043	केतु	14/09/2046	शुक्र	21/07/2047

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - चंद्र	
21/07/2047	
19/12/2048	
चंद्र	02/09/2047
मंगळ	02/10/2047
राहु	19/12/2047
गुरु	26/02/2048
शनि	18/05/2048
बुध	30/07/2048
केतु	29/08/2048
शुक्र	24/11/2048
सूर्य	19/12/2048

बुध - मंगळ	
19/12/2048	
17/12/2049	
मंगळ	10/01/2049
राहु	05/03/2049
गुरु	22/04/2049
शनि	19/06/2049
बुध	09/08/2049
केतु	30/08/2049
शुक्र	29/10/2049
सूर्य	16/11/2049
चंद्र	17/12/2049

बुध - राहु	
17/12/2049	
05/07/2052	
राहु	05/05/2050
गुरु	07/09/2050
शनि	01/02/2051
बुध	13/06/2051
केतु	06/08/2051
शुक्र	09/01/2052
सूर्य	24/02/2052
चंद्र	12/05/2052
मंगळ	05/07/2052

बुध - गुरु	
05/07/2052	
11/10/2054	
गुरु	23/10/2052
शनि	03/03/2053
बुध	29/06/2053
केतु	16/08/2053
शुक्र	01/01/2054
सूर्य	11/02/2054
चंद्र	21/04/2054
मंगळ	09/06/2054
राहु	11/10/2054

बुध - शनि	
11/10/2054	
20/06/2057	
शनि	16/03/2055
बुध	02/08/2055
केतु	28/09/2055
शुक्र	10/03/2056
सूर्य	28/04/2056
चंद्र	19/07/2056
मंगळ	14/09/2056
राहु	09/02/2057
गुरु	20/06/2057

केतु - केतु	
20/06/2057	
16/11/2057	
केतु	29/06/2057
शुक्र	24/07/2057
सूर्य	31/07/2057
चंद्र	12/08/2057
मंगळ	21/08/2057
राहु	13/09/2057
गुरु	02/10/2057
शनि	26/10/2057
बुध	16/11/2057

केतु - शुक्र	
16/11/2057	
16/01/2059	
शुक्र	26/01/2058
सूर्य	17/02/2058
चंद्र	24/03/2058
मंगळ	18/04/2058
राहु	21/06/2058
गुरु	17/08/2058
शनि	23/10/2058
बुध	22/12/2058
केतु	16/01/2059

केतु - सूर्य	
16/01/2059	
24/05/2059	
सूर्य	23/01/2059
चंद्र	02/02/2059
मंगळ	10/02/2059
राहु	01/03/2059
गुरु	18/03/2059
शनि	07/04/2059
बुध	25/04/2059
केतु	03/05/2059
शुक्र	24/05/2059

केतु - चंद्र	
24/05/2059	
23/12/2059	
चंद्र	11/06/2059
मंगळ	23/06/2059
राहु	25/07/2059
गुरु	23/08/2059
शनि	25/09/2059
बुध	26/10/2059
केतु	07/11/2059
शुक्र	13/12/2059
सूर्य	23/12/2059

केतु - मंगळ	
23/12/2059	
20/05/2060	
मंगळ	01/01/2060
राहु	23/01/2060
गुरु	12/02/2060
शनि	07/03/2060
बुध	28/03/2060
केतु	06/04/2060
शुक्र	30/04/2060
सूर्य	08/05/2060
चंद्र	20/05/2060

केतु - राहु	
20/05/2060	
08/06/2061	
राहु	17/07/2060
गुरु	06/09/2060
शनि	06/11/2060
बुध	30/12/2060
केतु	21/01/2061
शुक्र	26/03/2061
सूर्य	15/04/2061
चंद्र	17/05/2061
मंगळ	08/06/2061

केतु - गुरु	
08/06/2061	
15/05/2062	
गुरु	23/07/2061
शनि	15/09/2061
बुध	03/11/2061
केतु	22/11/2061
शुक्र	18/01/2062
सूर्य	04/02/2062
चंद्र	05/03/2062
मंगळ	25/03/2062
राहु	15/05/2062

केतु - शनि	
15/05/2062	
24/06/2063	
शनि	18/07/2062
बुध	13/09/2062
केतु	07/10/2062
शुक्र	13/12/2062
सूर्य	03/01/2063
चंद्र	05/02/2063
मंगळ	01/03/2063
राहु	01/05/2063
गुरु	24/06/2063

केतु - बुध	
24/06/2063	
20/06/2064	
बुध	14/08/2063
केतु	04/09/2063
शुक्र	03/11/2063
सूर्य	22/11/2063
चंद्र	22/12/2063
मंगळ	12/01/2064
राहु	06/03/2064
गुरु	23/04/2064
शनि	20/06/2064

शुक्र - शुक्र	
20/06/2064	
20/10/2067	
शुक्र	09/01/2065
सूर्य	11/03/2065
चंद्र	20/06/2065
मंगळ	30/08/2065
राहु	01/03/2066
गुरु	10/08/2066
शनि	19/02/2067
बुध	10/08/2067
केतु	20/10/2067

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगळ		शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु	
20/10/2067		20/10/2068		20/06/2070		20/08/2071		20/08/2074	
20/10/2068		20/06/2070		20/08/2071		20/08/2074		20/04/2077	
सूर्य	08/11/2067	चंद्र	09/12/2068	मंगळ	15/07/2070	राहु	01/02/2072	गुरु	28/12/2074
चंद्र	08/12/2067	मंगळ	14/01/2069	राहु	17/09/2070	गुरु	26/06/2072	शनि	31/05/2075
मंगळ	29/12/2067	राहु	15/04/2069	गुरु	13/11/2070	शनि	16/12/2072	बुध	16/10/2075
राहु	22/02/2068	गुरु	05/07/2069	शनि	19/01/2071	बुध	21/05/2073	केतु	12/12/2075
गुरु	11/04/2068	शनि	10/10/2069	बुध	21/03/2071	केतु	24/07/2073	शुक्र	22/05/2076
शनि	08/06/2068	बुध	04/01/2070	केतु	15/04/2071	शुक्र	22/01/2074	सूर्य	10/07/2076
बुध	29/07/2068	केतु	08/02/2070	शुक्र	25/06/2071	सूर्य	18/03/2074	चंद्र	29/09/2076
केतु	20/08/2068	शुक्र	21/05/2070	सूर्य	16/07/2071	चंद्र	17/06/2074	मंगळ	25/11/2076
शुक्र	20/10/2068	सूर्य	20/06/2070	चंद्र	20/08/2071	मंगळ	20/08/2074	राहु	20/04/2077

शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र	
20/04/2077		20/06/2080		21/04/2083		20/06/2084		07/10/2084	
20/06/2080		21/04/2083		20/06/2084		07/10/2084		08/04/2085	
शनि	20/10/2077	बुध	13/11/2080	केतु	16/05/2083	सूर्य	25/06/2084	चंद्र	23/10/2084
बुध	02/04/2078	केतु	13/01/2081	शुक्र	26/07/2083	चंद्र	04/07/2084	मंगळ	02/11/2084
केतु	09/06/2078	शुक्र	04/07/2081	सूर्य	16/08/2083	मंगळ	11/07/2084	राहु	30/11/2084
शुक्र	18/12/2078	सूर्य	25/08/2081	चंद्र	20/09/2083	राहु	27/07/2084	गुरु	24/12/2084
सूर्य	14/02/2079	चंद्र	19/11/2081	मंगळ	15/10/2083	गुरु	11/08/2084	शनि	22/01/2085
चंद्र	22/05/2079	मंगळ	19/01/2082	राहु	18/12/2083	शनि	28/08/2084	बुध	17/02/2085
मंगळ	28/07/2079	राहु	23/06/2082	गुरु	13/02/2084	बुध	13/09/2084	केतु	27/02/2085
राहु	18/01/2080	गुरु	08/11/2082	शनि	20/04/2084	केतु	19/09/2084	शुक्र	30/03/2085
गुरु	20/06/2080	शनि	21/04/2083	बुध	20/06/2084	शुक्र	07/10/2084	सूर्य	08/04/2085

सूर्य - मंगळ		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - बुध	
08/04/2085		14/08/2085		09/07/2086		27/04/2087		08/04/2088	
14/08/2085		09/07/2086		27/04/2087		08/04/2088		12/02/2089	
मंगळ	15/04/2085	राहु	02/10/2085	गुरु	17/08/2086	शनि	21/06/2087	बुध	22/05/2088
राहु	05/05/2085	गुरु	15/11/2085	शनि	02/10/2086	बुध	09/08/2087	केतु	09/06/2088
गुरु	22/05/2085	शनि	06/01/2086	बुध	12/11/2086	केतु	29/08/2087	शुक्र	31/07/2088
शनि	11/06/2085	बुध	22/02/2086	केतु	29/11/2086	शुक्र	26/10/2087	सूर्य	15/08/2088
बुध	29/06/2085	केतु	13/03/2086	शुक्र	17/01/2087	सूर्य	12/11/2087	चंद्र	10/09/2088
केतु	06/07/2085	शुक्र	07/05/2086	सूर्य	01/02/2087	चंद्र	11/12/2087	मंगळ	28/09/2088
शुक्र	28/07/2085	सूर्य	23/05/2086	चंद्र	25/02/2087	मंगळ	31/12/2087	राहु	14/11/2088
सूर्य	03/08/2085	चंद्र	19/06/2086	मंगळ	14/03/2087	राहु	21/02/2088	गुरु	25/12/2088
चंद्र	14/08/2085	मंगळ	09/07/2086	राहु	27/04/2087	गुरु	08/04/2088	शनि	12/02/2089

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगळ		चंद्र - राहु	
12/02/2089		20/06/2089		20/06/2090		21/04/2091		20/11/2091	
20/06/2089		20/06/2090		21/04/2091		20/11/2091		21/05/2093	
केतु	20/02/2089	शुक्र	20/08/2089	चंद्र	16/07/2090	मंगळ	03/05/2091	राहु	10/02/2092
शुक्र	13/03/2089	सूर्य	07/09/2089	मंगळ	02/08/2090	राहु	04/06/2091	गुरु	23/04/2092
सूर्य	19/03/2089	चंद्र	08/10/2089	राहु	17/09/2090	गुरु	02/07/2091	शनि	19/07/2092
चंद्र	30/03/2089	मंगळ	29/10/2089	गुरु	28/10/2090	शनि	05/08/2091	बुध	04/10/2092
मंगळ	06/04/2089	राहु	23/12/2089	शनि	15/12/2090	बुध	04/09/2091	केतु	05/11/2092
राहु	26/04/2089	गुरु	09/02/2090	बुध	27/01/2091	केतु	17/09/2091	शुक्र	05/02/2093
गुरु	13/05/2089	शनि	08/04/2090	केतु	14/02/2091	शुक्र	22/10/2091	सूर्य	04/03/2093
शनि	02/06/2089	बुध	30/05/2090	शुक्र	05/04/2091	सूर्य	02/11/2091	चंद्र	19/04/2093
बुध	20/06/2089	केतु	20/06/2090	सूर्य	21/04/2091	चंद्र	20/11/2091	मंगळ	21/05/2093

चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र	
21/05/2093		20/09/2094		20/04/2096		19/09/2097		20/04/2098	
20/09/2094		20/04/2096		19/09/2097		20/04/2098		20/12/2099	
गुरु	25/07/2093	शनि	20/12/2094	बुध	02/07/2096	केतु	02/10/2097	शुक्र	31/07/2098
शनि	10/10/2093	बुध	12/03/2095	केतु	01/08/2096	शुक्र	06/11/2097	सूर्य	30/08/2098
बुध	18/12/2093	केतु	15/04/2095	शुक्र	27/10/2096	सूर्य	17/11/2097	चंद्र	20/10/2098
केतु	15/01/2094	शुक्र	20/07/2095	सूर्य	22/11/2096	चंद्र	05/12/2097	मंगळ	25/11/2098
शुक्र	06/04/2094	सूर्य	18/08/2095	चंद्र	04/01/2097	मंगळ	17/12/2097	राहु	24/02/2099
सूर्य	01/05/2094	चंद्र	05/10/2095	मंगळ	03/02/2097	राहु	18/01/2098	गुरु	16/05/2099
चंद्र	10/06/2094	मंगळ	08/11/2095	राहु	21/04/2097	गुरु	16/02/2098	शनि	20/08/2099
मंगळ	09/07/2094	राहु	03/02/2096	गुरु	29/06/2097	शनि	21/03/2098	बुध	15/11/2099
राहु	20/09/2094	गुरु	20/04/2096	शनि	19/09/2097	बुध	20/04/2098	केतु	20/12/2099

चंद्र - सूर्य		मंगळ - मंगळ		मंगळ - राहु		मंगळ - गुरु		मंगळ - शनि	
20/12/2099		21/06/2100		17/11/2100		05/12/2101		11/11/2102	
21/06/2100		17/11/2100		05/12/2101		11/11/2102		21/12/2103	
सूर्य	29/12/2099	मंगळ	30/06/2100	राहु	13/01/2101	गुरु	20/01/2102	शनि	14/01/2103
चंद्र	14/01/2100	राहु	22/07/2100	गुरु	06/03/2101	शनि	15/03/2102	बुध	13/03/2103
मंगळ	24/01/2100	गुरु	11/08/2100	शनि	05/05/2101	बुध	02/05/2102	केतु	05/04/2103
राहु	21/02/2100	शनि	03/09/2100	बुध	29/06/2101	केतु	22/05/2102	शुक्र	12/06/2103
गुरु	17/03/2100	बुध	25/09/2100	केतु	21/07/2101	शुक्र	18/07/2102	सूर्य	02/07/2103
शनि	15/04/2100	केतु	03/10/2100	शुक्र	23/09/2101	सूर्य	04/08/2102	चंद्र	05/08/2103
बुध	11/05/2100	शुक्र	28/10/2100	सूर्य	12/10/2101	चंद्र	01/09/2102	मंगळ	28/08/2103
केतु	21/05/2100	सूर्य	05/11/2100	चंद्र	13/11/2101	मंगळ	21/09/2102	राहु	28/10/2103
शुक्र	21/06/2100	चंद्र	17/11/2100	मंगळ	05/12/2101	राहु	11/11/2102	गुरु	21/12/2103

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शनि - बुध - राहु	
24/12/2025 06:16	
20/05/2026 17:32	
राहु	15/01/2026 09:09
गुरु	04/02/2026 01:04
शनि	27/02/2026 09:27
बुध	20/03/2026 06:50
केतु	28/03/2026 21:18
शुक्र	22/04/2026 11:11
सूर्य	29/04/2026 20:08
चंद्र	12/05/2026 03:05
मंगळ	20/05/2026 17:32

शनि - बुध - गुरु	
20/05/2026 17:32	
28/09/2026 19:33	
गुरु	07/06/2026 05:00
शनि	27/06/2026 23:08
बुध	16/07/2026 12:49
केतु	24/07/2026 04:20
शुक्र	15/08/2026 00:40
सूर्य	21/08/2026 13:58
चंद्र	01/09/2026 12:08
मंगळ	09/09/2026 03:39
राहु	28/09/2026 19:33

शनि - बुध - शनि	
28/09/2026 19:33	
03/03/2027 11:27	
शनि	23/10/2026 11:04
बुध	14/11/2026 12:20
केतु	23/11/2026 14:15
शुक्र	19/12/2026 12:54
सूर्य	27/12/2026 07:42
चंद्र	09/01/2027 07:01
मंगळ	18/01/2027 08:57
राहु	10/02/2027 17:20
गुरु	03/03/2027 11:27

शनि - केतु - केतु	
03/03/2027 11:27	
27/03/2027 02:12	
केतु	04/03/2027 20:31
शुक्र	08/03/2027 18:58
सूर्य	09/03/2027 23:19
चंद्र	11/03/2027 22:32
मंगळ	13/03/2027 07:36
राहु	16/03/2027 20:37
गुरु	20/03/2027 00:11
शनि	23/03/2027 17:55
बुध	27/03/2027 02:12

शनि - केतु - शुक्र	
27/03/2027 02:12	
02/06/2027 13:29	
शुक्र	07/04/2027 08:05
सूर्य	10/04/2027 17:03
चंद्र	16/04/2027 07:59
मंगळ	20/04/2027 06:27
राहु	30/04/2027 09:20
गुरु	09/05/2027 09:14
शनि	20/05/2027 01:37
बुध	29/05/2027 15:01
केतु	02/06/2027 13:29

शनि - केतु - सूर्य	
02/06/2027 13:29	
22/06/2027 19:16	
सूर्य	03/06/2027 13:46
चंद्र	05/06/2027 06:15
मंगळ	06/06/2027 10:35
राहु	09/06/2027 11:27
गुरु	12/06/2027 04:13
शनि	15/06/2027 09:08
बुध	18/06/2027 05:58
केतु	19/06/2027 10:18
शुक्र	22/06/2027 19:16

शनि - केतु - चंद्र	
22/06/2027 19:16	
26/07/2027 12:54	
चंद्र	25/06/2027 14:44
मंगळ	27/06/2027 13:58
राहु	02/07/2027 15:24
गुरु	07/07/2027 03:21
शनि	12/07/2027 11:33
बुध	17/07/2027 06:15
केतु	19/07/2027 05:29
शुक्र	24/07/2027 20:25
सूर्य	26/07/2027 12:54

शनि - केतु - मंगळ	
26/07/2027 12:54	
19/08/2027 03:39	
मंगळ	27/07/2027 21:57
राहु	31/07/2027 10:58
गुरु	03/08/2027 14:32
शनि	07/08/2027 08:16
बुध	10/08/2027 16:34
केतु	12/08/2027 01:37
शुक्र	16/08/2027 00:05
सूर्य	17/08/2027 04:25
चंद्र	19/08/2027 03:39

शनि - केतु - राहु	
19/08/2027 03:39	
18/10/2027 20:59	
राहु	28/08/2027 06:15
गुरु	05/09/2027 08:34
शनि	14/09/2027 23:18
बुध	23/09/2027 13:46
केतु	27/09/2027 02:47
शुक्र	07/10/2027 05:40
सूर्य	10/10/2027 06:32
चंद्र	15/10/2027 07:59
मंगळ	18/10/2027 20:59

शनि - केतु - गुरु	
18/10/2027 20:59	
11/12/2027 20:25	
गुरु	26/10/2027 01:43
शनि	03/11/2027 14:49
बुध	11/11/2027 06:20
केतु	14/11/2027 09:54
शुक्र	23/11/2027 09:49
सूर्य	26/11/2027 02:35
चंद्र	30/11/2027 14:32
मंगळ	03/12/2027 18:06
राहु	11/12/2027 20:25

शनि - केतु - शनि	
11/12/2027 20:25	
13/02/2028 22:43	
शनि	21/12/2027 23:59
बुध	31/12/2027 01:54
केतु	03/01/2028 19:38
शुक्र	14/01/2028 12:01
सूर्य	17/01/2028 16:56
चंद्र	23/01/2028 01:08
मंगळ	26/01/2028 18:52
राहु	05/02/2028 09:37
गुरु	13/02/2028 22:43

शनि - केतु - बुध	
13/02/2028 22:43	
11/04/2028 07:06	
बुध	22/02/2028 01:43
केतु	25/02/2028 10:00
शुक्र	05/03/2028 23:24
सूर्य	08/03/2028 20:13
चंद्र	13/03/2028 14:55
मंगळ	16/03/2028 23:12
राहु	25/03/2028 13:40
गुरु	02/04/2028 05:11
शनि	11/04/2028 07:06

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शनि - शुक्र - शुक्र	
11/04/2028 07:06	
21/10/2028 01:36	
शुक्र	13/05/2028 10:11
सूर्य	23/05/2028 01:31
चंद्र	08/06/2028 03:03
मंगळ	19/06/2028 08:56
राहु	18/07/2028 06:55
गुरु	12/08/2028 23:47
शनि	12/09/2028 12:18
बुध	09/10/2028 19:44
केतु	21/10/2028 01:36

शनि - शुक्र - सूर्य	
21/10/2028 01:36	
17/12/2028 21:33	
सूर्य	23/10/2028 23:00
चंद्र	28/10/2028 18:40
मंगळ	01/11/2028 03:38
राहु	09/11/2028 19:49
गुरु	17/11/2028 12:53
शनि	26/11/2028 16:38
बुध	04/12/2028 21:16
केतु	08/12/2028 06:14
शुक्र	17/12/2028 21:33

शनि - शुक्र - चंद्र	
17/12/2028 21:33	
24/03/2029 06:48	
चंद्र	25/12/2028 22:20
मंगळ	31/12/2028 13:16
राहु	15/01/2029 00:15
गुरु	27/01/2029 20:41
शनि	12/02/2029 02:57
बुध	25/02/2029 18:40
केतु	03/03/2029 09:36
शुक्र	19/03/2029 11:09
सूर्य	24/03/2029 06:48

शनि - शुक्र - मंगळ	
24/03/2029 06:48	
30/05/2029 18:05	
मंगळ	28/03/2029 05:16
राहु	07/04/2029 08:09
गुरु	16/04/2029 08:04
शनि	27/04/2029 00:27
बुध	06/05/2029 13:50
केतु	10/05/2029 12:18
शुक्र	21/05/2029 18:11
सूर्य	25/05/2029 03:09
चंद्र	30/05/2029 18:05

शनि - शुक्र - राहु	
30/05/2029 18:05	
20/11/2029 05:56	
राहु	25/06/2029 18:40
गुरु	18/07/2029 21:50
शनि	15/08/2029 09:07
बुध	08/09/2029 23:00
केतु	19/09/2029 01:53
शुक्र	17/10/2029 23:52
सूर्य	26/10/2029 16:03
चंद्र	10/11/2029 03:02
मंगळ	20/11/2029 05:56

शनि - शुक्र - गुरु	
20/11/2029 05:56	
23/04/2030 11:08	
गुरु	10/12/2029 19:25
शनि	04/01/2030 05:27
बुध	26/01/2030 01:47
केतु	04/02/2030 01:41
शुक्र	01/03/2030 18:33
सूर्य	09/03/2030 11:37
चंद्र	22/03/2030 08:03
मंगळ	31/03/2030 07:57
राहु	23/04/2030 11:08

शनि - शुक्र - शनि	
23/04/2030 11:08	
23/10/2030 14:18	
शनि	22/05/2030 11:02
बुध	17/06/2030 09:41
केतु	28/06/2030 02:04
शुक्र	28/07/2030 14:36
सूर्य	06/08/2030 18:21
चंद्र	22/08/2030 00:37
मंगळ	01/09/2030 17:00
राहु	29/09/2030 04:17
गुरु	23/10/2030 14:18

शनि - शुक्र - बुध	
23/10/2030 14:18	
05/04/2031 10:50	
बुध	15/11/2030 19:25
केतु	25/11/2030 08:49
शुक्र	22/12/2030 16:14
सूर्य	30/12/2030 20:52
चंद्र	13/01/2031 12:34
मंगळ	23/01/2031 01:58
राहु	16/02/2031 15:51
गुरु	10/03/2031 12:11
शनि	05/04/2031 10:50

शनि - शुक्र - केतु	
05/04/2031 10:50	
11/06/2031 22:06	
केतु	09/04/2031 09:17
शुक्र	20/04/2031 15:10
सूर्य	24/04/2031 00:08
चंद्र	29/04/2031 15:04
मंगळ	03/05/2031 13:32
राहु	13/05/2031 16:25
गुरु	22/05/2031 16:19
शनि	02/06/2031 08:43
बुध	11/06/2031 22:06

शनि - सूर्य - सूर्य	
11/06/2031 22:06	
29/06/2031 06:29	
सूर्य	12/06/2031 18:56
चंद्र	14/06/2031 05:37
मंगळ	15/06/2031 05:55
राहु	17/06/2031 20:22
गुरु	20/06/2031 03:53
शनि	22/06/2031 21:49
बुध	25/06/2031 08:48
केतु	26/06/2031 09:06
शुक्र	29/06/2031 06:29

शनि - सूर्य - चंद्र	
29/06/2031 06:29	
28/07/2031 04:28	
चंद्र	01/07/2031 16:19
मंगळ	03/07/2031 08:48
राहु	07/07/2031 16:54
गुरु	11/07/2031 13:26
शनि	16/07/2031 03:19
बुध	20/07/2031 05:37
केतु	21/07/2031 22:06
शुक्र	26/07/2031 17:46
सूर्य	28/07/2031 04:28

शनि - सूर्य - मंगळ	
28/07/2031 04:28	
17/08/2031 10:15	
मंगळ	29/07/2031 08:48
राहु	01/08/2031 09:40
गुरु	04/08/2031 02:27
शनि	07/08/2031 07:21
बुध	10/08/2031 04:11
केतु	11/08/2031 08:31
शुक्र	14/08/2031 17:29
सूर्य	15/08/2031 17:46
चंद्र	17/08/2031 10:15

योगिनी दशा

भोग्य दशा वेल : मंगळा 0 वर्ष 9 महिना 5 दिवस

मंगळा 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष	
03/09/1991		09/06/1992		10/06/1994		09/06/1997		09/06/2001	
09/06/1992		10/06/1994		09/06/1997		09/06/2001		10/06/2006	
	00/00/0000	पिंग	20/07/1992	धान्य	09/09/1994	भ्राम	19/11/1997	भद्रि	18/02/2002
	00/00/0000	धान्य	19/09/1992	भ्राम	09/01/1995	भद्रि	10/06/1998	उल्क	19/12/2002
	03/09/1991	भ्राम	09/12/1992	भद्रि	10/06/1995	उल्क	08/02/1999	सिद्ध	10/12/2003
भ्राम	19/09/1991	भद्रि	20/03/1993	उल्क	10/12/1995	सिद्ध	19/11/1999	संक	18/01/2005
भद्रि	09/11/1991	उल्क	20/07/1993	सिद्ध	10/07/1996	संक	09/10/2000	मंग	10/03/2005
उल्क	09/01/1992	सिद्ध	09/12/1993	संक	10/03/1997	मंग	19/11/2000	पिंग	20/06/2005
सिद्ध	20/03/1992	संक	20/05/1994	मंग	10/04/1997	पिंग	08/02/2001	धान्य	19/11/2005
संक	09/06/1992	मंग	10/06/1994	पिंग	09/06/1997	धान्य	09/06/2001	भ्राम	10/06/2006

उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगळा 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष	
10/06/2006		09/06/2012		10/06/2019		10/06/2027		09/06/2028	
09/06/2012		10/06/2019		10/06/2027		09/06/2028		10/06/2030	
उल्क	10/06/2007	सिद्ध	19/10/2013	संक	20/03/2021	मंग	20/06/2027	पिंग	20/07/2028
सिद्ध	09/08/2008	संक	10/05/2015	मंग	09/06/2021	पिंग	10/07/2027	धान्य	19/09/2028
संक	09/12/2009	मंग	21/07/2015	पिंग	19/11/2021	धान्य	10/08/2027	भ्राम	09/12/2028
मंग	08/02/2010	पिंग	10/12/2015	धान्य	20/07/2022	भ्राम	19/09/2027	भद्रि	20/03/2029
पिंग	10/06/2010	धान्य	10/07/2016	भ्राम	10/06/2023	भद्रि	09/11/2027	उल्क	20/07/2029
धान्य	09/12/2010	भ्राम	20/04/2017	भद्रि	20/07/2024	उल्क	09/01/2028	सिद्ध	09/12/2029
भ्राम	10/08/2011	भद्रि	10/04/2018	उल्क	19/11/2025	सिद्ध	20/03/2028	संक	20/05/2030
भद्रि	09/06/2012	उल्क	10/06/2019	सिद्ध	10/06/2027	संक	09/06/2028	मंग	10/06/2030

नोट :– योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :–

मंगला : चन्द्र पिंगला : सूर्य धान्या : गुरु भ्रामरी : मंगल

भद्रिका : बुध उल्का : शनि सिद्धा : शुक्र संकटा : राहु/केतु

वरील दिनांक दशा समाप्ति चा समय दाखवते.

योगिनी दशा पूर्ण 36 वर्षाची बिना आयुनिर्णय दिलेली आहे.

योगिनी दशा

धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष	
10/06/2030		09/06/2033		09/06/2037		10/06/2042		09/06/2048	
09/06/2033		09/06/2037		10/06/2042		09/06/2048		10/06/2055	
धान्य	09/09/2030	भ्राम	19/11/2033	भद्रि	18/02/2038	उल्क	10/06/2043	सिद्ध	19/10/2049
भ्राम	09/01/2031	भद्रि	10/06/2034	उल्क	19/12/2038	सिद्ध	09/08/2044	संक	10/05/2051
भद्रि	10/06/2031	उल्क	08/02/2035	सिद्ध	10/12/2039	संक	09/12/2045	मंग	21/07/2051
उल्क	10/12/2031	सिद्ध	19/11/2035	संक	18/01/2041	मंग	08/02/2046	पिंग	10/12/2051
सिद्ध	10/07/2032	संक	09/10/2036	मंग	10/03/2041	पिंग	10/06/2046	धान्य	10/07/2052
संक	10/03/2033	मंग	19/11/2036	पिंग	20/06/2041	धान्य	09/12/2046	भ्राम	20/04/2053
मंग	10/04/2033	पिंग	08/02/2037	धान्य	19/11/2041	भ्राम	10/08/2047	भद्रि	10/04/2054
पिंग	09/06/2033	धान्य	09/06/2037	भ्राम	10/06/2042	भद्रि	09/06/2048	उल्क	10/06/2055

संकटा 8 वर्ष		मंगळा 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष	
10/06/2055		10/06/2063		09/06/2064		10/06/2066		09/06/2069	
10/06/2063		09/06/2064		10/06/2066		09/06/2069		09/06/2073	
संक	20/03/2057	मंग	20/06/2063	पिंग	20/07/2064	धान्य	09/09/2066	भ्राम	19/11/2069
मंग	09/06/2057	पिंग	10/07/2063	धान्य	19/09/2064	भ्राम	09/01/2067	भद्रि	10/06/2070
पिंग	19/11/2057	धान्य	10/08/2063	भ्राम	09/12/2064	भद्रि	10/06/2067	उल्क	08/02/2071
धान्य	20/07/2058	भ्राम	19/09/2063	भद्रि	20/03/2065	उल्क	10/12/2067	सिद्ध	19/11/2071
भ्राम	10/06/2059	भद्रि	09/11/2063	उल्क	20/07/2065	सिद्ध	10/07/2068	संक	09/10/2072
भद्रि	20/07/2060	उल्क	09/01/2064	सिद्ध	09/12/2065	संक	10/03/2069	मंग	19/11/2072
उल्क	19/11/2061	सिद्ध	20/03/2064	संक	20/05/2066	मंग	10/04/2069	पिंग	08/02/2073
सिद्ध	10/06/2063	संक	09/06/2064	मंग	10/06/2066	पिंग	09/06/2069	धान्य	09/06/2073

भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगळा 1 वर्ष	
09/06/2073		10/06/2078		09/06/2084		10/06/2091		10/06/2099	
10/06/2078		09/06/2084		10/06/2091		10/06/2099		00/00/0000	
भद्रि	18/02/2074	उल्क	10/06/2079	सिद्ध	19/10/2085	संक	20/03/2093	मंग	20/06/2099
उल्क	19/12/2074	सिद्ध	09/08/2080	संक	10/05/2087	मंग	09/06/2093	पिंग	10/07/2099
सिद्ध	10/12/2075	संक	09/12/2081	मंग	21/07/2087	पिंग	19/11/2093	धान्य	10/08/2099
संक	18/01/2077	मंग	08/02/2082	पिंग	10/12/2087	धान्य	20/07/2094	भ्राम	03/09/2099
मंग	10/03/2077	पिंग	10/06/2082	धान्य	10/07/2088	भ्राम	10/06/2095		00/00/0000
पिंग	20/06/2077	धान्य	09/12/2082	भ्राम	20/04/2089	भद्रि	20/07/2096		00/00/0000
धान्य	19/11/2077	भ्राम	10/08/2083	भद्रि	10/04/2090	उल्क	19/11/2097		00/00/0000
भ्राम	10/06/2078	भद्रि	09/06/2084	उल्क	10/06/2091	सिद्ध	10/06/2099		00/00/0000

शुभाशुभ ज्ञान

शुभाशुभ ज्ञान करण्याची आपणास आपल्या मित्र व शत्रुविषयी बोध करते. मूलांक, भाग्यांक व, मित्रांकद्वारे मैत्री व भागीदारी करण्यात फायदा होईल, त्याच प्रमाणे शुभ दिवस व शुभवर्ष प्रगतिकारक ठरेल, शुभग्रहांची, दशा सुद्धा लाभकारक धरते, मित्रलग्न व मित्रराशि लाभदायक अस्ते.

शुभरत्न व धातु तसेच रंग धारण केल्याने शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य लाभते, भाग्य रत्न धारण केल्याने भाग्यवृद्धि होते. शुभ वेली कोणत्याही कार्यांचा आरम्भ केल्याने अपेक्षित यश मिलते. इष्टदेव–देवतांचे ध्यान व जप केल्याने मानसिक शक्ति वाढते व यश लवकर मिलते. शुभ पदार्थ, अन्न, द्रव्य इत्यादि चे दान केल्याने ही शुभफल मिलते. व्यापार–उधोग शुभ दिशेला केल्यास त्यात भरभराट होउन अपेक्षत लाभ होतो. शुभ–अशुभ ज्ञानाचा प्रयोग दैनंदिन जीवनात शुभफलदायी ठरतो.

मूलांक	3
भाग्यांक	5
मित्र अंक	3, 5, 7, 9
शत्रु अंक	1, 4, 8
शुभ वर्ष	21,30,39,48,57
शुभ दिवस	शुक्र, शनि, बुध
शुभ ग्रह	शुक्र, शनि, बुध
मित्र राशि	कन्या, कुम्भ
मित्र लग्न	मेष, कन्या, वृश्चिक
अनुकूल देवता	गणेश
शुभ रत्न	नीलम
शुभ उपरत्न	लाजवर्त, मरगज
भाग्य रत्न	पन्ना
शुभ धातु	लौह
शुभ रंग	काला
शुभ दिशा	पश्चिम
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	कस्तूरी, काली गाय, खडाउ
दान अन्न	उड़द
दान द्रव्य	तेल

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं. वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं. यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है. ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो. यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो. मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है. बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है. चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है. उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है. साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है. विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है. जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए. जिन्हें 50–75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए. जो रत्न केवल 25–50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए. अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
नीलम	शनि	100%	स्वास्थ्य, धन
हीरा	शुक्र	94%	दम्पति, सन्तति सुख, व्यावसायिक उन्नति
पोवले	मंगळ	70%	भाग्योदय, सुख, धनार्जन
पन्ना	बुध	69%	दम्पति, शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय
मोती	चंद्र	19%	शत्रु व रोग, दाम्पत्य कष्ट
लहसुनिया	केतु	16%	शत्रु व रोग, दाम्पत्य कष्ट
माणिक्य	सूर्य	0%	दुर्घटना
पुष्कराज	गुरु	0%	दुर्घटना, व्यय, पराक्रम हानि
गोमेद	राहु	0%	व्यय, दुर्घटना

रत्न की शुभता

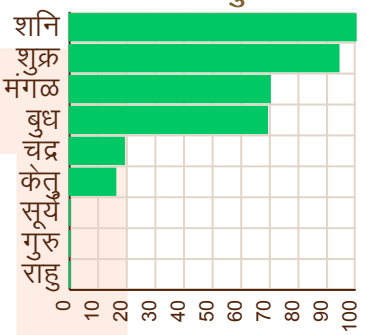

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	पोवले	पन्ना	पुष्कराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
राहु	20/06/2005	0%	0%	58%	69%	0%	100%	100%	3%	0%
गुरु	20/06/2021	0%	31%	77%	56%	0%	81%	100%	0%	16%
शनि	20/06/2040	0%	0%	58%	75%	0%	100%	100%	0%	0%
बुध	20/06/2057	0%	0%	70%	81%	0%	100%	100%	0%	16%
केतु	20/06/2064	0%	0%	77%	69%	0%	100%	97%	0%	41%
शुक्र	20/06/2084	0%	0%	70%	75%	0%	100%	100%	0%	28%
सूर्य	20/06/2090	0%	31%	77%	69%	0%	81%	97%	0%	0%
चंद्र	21/06/2100	0%	44%	70%	75%	0%	94%	100%	0%	0%
मंगळ	22/06/2107	0%	31%	83%	56%	0%	94%	100%	0%	28%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह–नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते है। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते है। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते है अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुडंली और रत्न

आपके लिए नीलम व हीरा रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

नीलम आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

हीरा आपका कारक रत्न है। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए मूंगा एवं पन्ना रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

मोती, लहसुनिया, माणिक्य, पुखराज व गोमेद रत्न पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। क्योंकि इनके स्वामी ग्रह आपकी कुंडली में बिल्कुल भी शुभ फलदायक नहीं हैं। अतः इन रत्नों का आप सर्वदा त्याग ही करें। इनके पहनने से आपको सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य के पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं। मान-सम्मान में कमी, धन-धान्य का अभाव तथा उन्नति बाधित हो सकती है। इन रत्नों का आप जीवन पर्यन्त ही त्याग करें क्योंकि ये रत्न किसी भी दशा या गोचर में शुभफलदायी नहीं हो सकते।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

नीलम

आपकी कुंडली में शनि लग्न भाव में स्थित है। आपको शनि रत्न नीलम धारण करना चाहिए। शनि रत्न नीलम आपकी परिश्रम क्षमता एवं कार्यकुशलता में वृद्धि करेगा। सरकारी पक्ष व पिता से सहयोग प्राप्त होगा। प्रथम भाव में स्थित शनि की दृष्टि तृतीय, सप्तम एवं दशम भाव पर आ रही है। शनि रत्न नीलम की शुभता से भाग्योदय, सम्मान एवं लाभ की प्राप्ति होगी। जीवन साथी से सहयोग प्राप्त होगा। भाई-बंधुओं से सुख-स्नेह प्राप्ति में भी यह रत्न सहयोग करेगा। नीलम रत्न आपके पुरुषार्थ भाव में वृद्धि कर रहे है।

आपकी मकर लग्न की कुंडली में शनि लग्नेश एवं द्वितीयेश है। शनि रत्न नीलम धारण कर आप शनि के सभी शुभफल प्राप्त कर सकते है। यह नीलम रत्न आपको स्वभाव, शरीर आरोग्यता, आयु, यश एवं प्रतिष्ठा दे सकता है। इस रत्न को धारण करने से आपके संचित धन में वृद्धि हो सकती है। रत्न शुभता से स्वास्थ्य शुभ, व्यक्तित्व उज्जवल, अचल संपत्ति, कुटुंब, उत्तम भोजन, पारिवारिक सुख, वाणी की मधुरता एवं आरम्भिक शिक्षा उत्तम हो सकती है। नीलम रत्न प्रभाव से आपके परिवार में बढ़ोतरी हो सकती है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ऊँ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र सप्तम भाव में स्थित है। आपको शुक्र रत्न हीरा धारण करना चाहिए। यह रत्न धारण कर आप श्रेष्ठ व्यक्तियों से स्नेह करने वाले भाग्यवान व्यक्ति बनेंगे। रत्न शुभता से आप चंचल, विलासी और संगीत को पसंद करने वाले व्यक्ति बनेंगे। रत्न शुभता से आप एक श्रेष्ठ कलाकार हो सकते हैं। गायन और अभिनय में आपकी रुचि जागृत करने में भी हीरा रत्न लाभदायक साबित हो सकता है। हीरा रत्न वैवाहिक जीवन को सुखमय बनाये रखने में उपयोगी रहेगा। रत्न शुभता से आपको विदेश यात्राओं अथवा दूर की यात्राओं के अवसर प्राप्त हो सकते है।

आपकी मकर लग्न की कुंडली में शुक्र पंचमेश एवं दशमेश है। आप शुक्र रत्न हीरा धारण कर सकते है। हीरा रत्न आपको माता-पिता से सुख, शारीरिक सौंदर्य की वृद्धि, भू-संपति का सुख दिला सकता है। इस रत्न को धारण कर आप वाहन, राज्य व आजीविका क्षेत्र से शुभ

फल प्राप्त हो सकते है। लाभ व प्रतिष्ठा प्राप्ति के लिए भी आप यह हीरा रत्न धारण कर सकते है। यह रत्न पंचमेश का होने के कारण आपको विद्या, बुद्धि एवं संतान सुख को अनुकूल करने में सहयोग कर सकता है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ऊँ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा 1 रत्ती से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल नवम भाव में स्थित है। मंगल रत्न मूंगा धारण कर आप मंगल ग्रह की शुभता प्राप्त करें। मूंगा रत्न आपकी नेतृत्व शक्ति बढ़ाकर आपको उच्चाधिकारी बनाएगा। मूंगा रत्न से आप स्वाभिमानी बनेंगे। मूंगा रत्न आपको मित्रों में श्रेष्ठ बनाएगा। रत्न शुभता विदेशी यात्राओं को सफल कर आपको लाभ दिलाएगी। रत्न शक्तियां आपको आत्मिक रूप से धार्मिक बनाए रखेंगी। यह रत्न आपके पुरुषार्थ भाव को बढ़ाकर आपको साहसपूर्ण कार्य करने की ओर प्रेरित करेगा। मूंगा रत्न धारण से भूमि-भवन के कार्य भी पूरे होंगे।

आपकी मकर लग्न की कुंडली में मंगल चतुर्थेश एवं एकादशेश है। आप मंगल रत्न मूंगा धारण कर मंगल ग्रह की शुभता बढ़ा सकते है। मूंगा रत्न धारण कर आप सुख-सुविधाओं से युक्त हो सकते है। इसकी शुभता से आप घर एवं भूमि-भवन संपति के स्वामी बन सकते है। रत्न शुभता से आपको माता का स्नेह व संतोषी जीवन प्राप्त हो सकता है। मूंगा रत्न स्वयं अर्जित धन में उन्नति व सफलता दे सकता है। रत्न शुभता से आप लोभ से बचेंगे तथा आपकी महत्वकांक्षाओं की पूर्ति के योग बन सकते है। मूंगा रत्न धारण से आप सफल व्यक्ति बन सकते है।

मूंगा रत्न अनामिका अंगूली में, चांदी धातु में जड़वाकर मंगलवार को प्रातः काल में स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर इस रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर अपने ईष्ट देव का पूजन करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने के पश्चात मंगल मंत्र ऊँ अं अंगारकाय नमः का १ माला जाप करना चाहिए। इसके पश्चात मंगल वस्तुएं जैसे - गेहूं, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मूंगा रत्न कम से कम ६ रत्ती से लेकर अधिकतम ८ रत्ती तक का धारण करना शुभ रहता है।

मूंगा रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ हीरा, गोमेद एवं नीलम रत्न को धारण करना अनुकूल नहीं माना गया है। यदि आप इस रत्न को अंगूठी रूप में धारण न कर पाएं तो आप इसे लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। यह रत्न रजत धातु के अलावा स्वर्ण धातु में भी धारण किया जा सकता है। मूंगा रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में आप इस रत्न के उपरत्न लाल हकीक एवं ३ मुखी रुद्राक्ष भी आप धारण कर सकते है।

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध सप्तम भाव में स्थित है। आपको बुध रत्न पन्ना धारण करना चाहिए। पन्ना रत्न आपको धनवान बनाएगा। रत्न शुभता से आपका विवाह कुलीन परिवार में होगा। यह रत्न आपको उदार और धार्मिक प्रवृति का रखेगा। आपके लिये यह शुभ रत्न होने के कारण इसे धारण कर आप विद्वान, लेखक या सम्पादक हो सकते है। पन्ना आपको शिल्पकला में निपुण, चतुर और विनोदी बनाएगा। रत्न शुभता से आप एक कुशल व्यवसायी बनेंगे। क्रय-विक्रय विषयों से आपको लाभ प्राप्त होगा। व्यावसायिक साझेदारी से आपके अनुकूल फल प्राप्त होंगे।

आपकी मकर लग्न की कुंडली में बुध नवमेश व षष्ठेश है। बुध रत्न पन्ना आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण कर आप अपने भाग्य को प्रगतिशील बना सकते है। धर्म, कर्म और आध्यात्मिक विषयों से सहज जुड़ सकते है। पन्ना रत्न धारण से आप शत्रुओं को बुद्धिमानी से परास्त कर पायेंगे। यह रत्न आपको यथायोग्य सम्मान दिलाएगा। रत्न शुभता से आपके बाधित कार्य फिर से बनने लगेंगे। पन्ना रत्न की शुभता से आप अपने ऋणों का समय पर भुगतान करने में सफल रहेंगे। दैनिक व्यवसाय की कठिनाईयां रत्न शुभता से दूर हो सकती है।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ऊँ बुं बुधाय नमः का १ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न 3 रत्ती का कम से कम, अन्यथा 6 रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र षष्ठ भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः चंद्रमा का मोती रत्न धारण करने पर किसी विशेष मामले में आपको अपमानित होना पड सकता है। आपके अपने मामा-मौसी से संबंध प्रतिकूल हो सकते है। अपने शत्रुओं की पहचान करना आपके लिए सरल नहीं होगा। यह रत्न आपको कफ रोगी,

नेत्र रोगी, अल्पायु, आसक्त, व्ययी बना सकता है। इसके प्रभाव से आप अस्वस्थ्यता का अनुभव करेंगें। बढ़ते कर्ज आपको मानसिक चिंताएं दे सकते है। कर्ज का भुगदान ज्यादा आपके लिए कष्टकारी हो सकता है। कार्यो को शीघ्रता से करने की प्रवृर्ति कार्यो में गुणवत्ता का अभाव ला सकती है। मोती रत्न आपमें असंतोष का भाव ला सकता है। आपको आंखों और पेट से संबंधित परेशानियां हो सकती हैं।

आपकी मकर लग्न की कुंडली में चंद्र सप्तम भाव के स्वामी है। सप्तमेश चंद्र का मोती रत्न धारण करने पर आपके जीवन की मुख्य क्रियाएं वैवाहिक जीवन के इर्दि-गर्द केन्द्रित हो सकती है। जीवन साथी के प्रति विशेष अनुग्रह के कारण आप अपने अन्य दायित्वों के निर्वाह में चूक सकते है। रत्न की शुभता का पूर्ण सहयोग प्राप्त न होने के कारण आपका ग्रहस्थ सुख आंशिक रूप से कष्टपूर्ण हो सकता है। मोती रत्न आपको साझेदारी व्यापार में अनियमितता दे सकता है। मोती रत्न आपकी प्रसन्नता, सदबुद्धि तथा यश सम्मान में कमी कर सकता है। यह रत्न आपकी विदेश यात्राओं में बाधक का कार्य कर सकता है। आप भ्रमणशील हो सकते है। साथ ही यह रत्न धन-धान्य में भी कमी कर सकता है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु छ्ठें भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः केतु रत्न लहसुनिया पहनने पर आपके रोग ठीक होने में समय अधिक ले सकते है। माता से मतभेद की स्थिति यह रत्न बना सकता है। नैनिहाल पक्ष से आदर सम्मान की प्राप्ति कम हो सकती है। यह रत्न आपका स्वभाव झगडालू बना सकता है। रत्न प्रभाव से आप फिजूलखची के आदी हो सकते है। आपको विवादों में सफलता पाने में कुछ अधिक समय लग सकता है। भूत-प्रेत जैसी बाधाओं से आपको कष्ट मिल सकते है। दांत का रोग अथवा होंठों से संबंधित कोई परेशानी हो सकती है। लहसुनिया रत्न रोगों को प्रभावी करेगा। ऋणों को बढ़ाएगा तथा शत्रुओं से कष्ट दे सकता है।

केतु मिथुन राशि में स्थित है व इसका स्वामी बुध सातवें भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न आपके वैवाहिक जीवन को कष्टमय बनाएगा। यह रत्न आपकी छवि व चरित्र को विवादास्पद बना सकता है। इस रत्न प्रतिकूलता से आपकी निष्ठा दांपत्य जीवन के प्रति कुछ कम होगी। रत्न प्रभाव से आपको उदर संबंधित रोग विशेषकर आंतों से जुड़े रोग हो सकते हैं। यह रत्न धारण करने पर आपके विवाह तय होने में भी विलम्ब की स्थितियां बन सकती है। यह रत्न आपको स्वतन्त्र व्यापार में हानि दिला सकता है तथा आपके लिए इस रत्न की शुभता के कारण प्रशासनिक एवं राजनैतिक जीवन में उतार-चढ़ाव के योग बन सकते है।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः सूर्य रत्न माणिक्य पहनने पर आपको समय समय पर सरकारी क्षेत्रों में बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है। पिता के स्वास्थ्य में कमी हो सकती है। सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने पर आपकी रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो सकती है। इस रत्न को पहनने पर आपको पित्त संबंधी रोग हो सकते है। ह्रदय रोग भी यह रत्न आपक दे

सकता है। यह रत्न आपकी धैर्य शक्ति में कमी कर क्रोध भाव में वृद्धि कर सकता है। रत्न प्रभाव से आप पर कार्य भार बढ़ सकता है। आपको आंखों से संबंधित रोग परेशान कर सकते है। पिता से संबंध मधुर बनाए रखने के लिए आपको विशेष प्रयास करने पड़ सकते है।

आपकी मकर लग्न की कुंड़ली में सूर्य अष्टमेश है। अष्टमेश सूर्य का माणिक्य रत्न धारण करना आपके लिए प्रतिकूल सिद्ध हो सकता है। माणिक्य रत्न धारण करने पर आपके स्वास्थ्य सुख में कमी हो सकती है। इस रत्न में शुभता की कमी के कारण आप पदोन्नति के लिए विशेष चातुर्य का प्रयोग करने का प्रयास कर सकते है। सरकारी क्षेत्रों से अपना काम निकलवाने के लिए भी आप अन्य स्त्रोतों का सहयोग लेने से पीछे नहीं हटेंगे। रत्न प्रभाव से आप अपनी अधिकारिक शक्तियों का आंशिक दुरुपयोग कर सकते है। रत्न की अनुकूलता आपके साथ नहीं है। इसलिए यह रत्न आपके पिता के स्वास्थ्य में कमी का कारण बन सकता है। यह रत्न आपको दीर्घकालीन रोग दे सकता है।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः गुरु रत्न पुखराज धारण करने पर आपका स्वजनों से लगाव कुछ कम हो सकता है। यह रत्न पैतृक धन की हानि करा सकता है। पुखराज रत्न प्रभाव से आपकी आर्थिक उन्नति में बाधाएं आ सकती है। धन, आय और लाभ रुक रुक कर आगे बढ़ेंगे। यह रत्न आपको सुमार्ग से हटा सकता है। आपकी अस्वस्थता बढ़ सकती है। कुल परंपराओं से आप हट सकते है। पुखराज रत्न आपको कंजूस और लालची भी बना सकता है। आपको अपनी योग्यता अनुसार कार्य न मिलने के योग भी बन रहे है। गैरधार्मिक विषयों पर आपके व्यय अधिक हो सकते है।

आपकी मकर लग्न के कुंडली में गुरु तृतीयेश एवं द्वादशेश है। गुरु का रत्न पुखराज धारण करना आपके लिए अनुकूल नहीं रहेगा। पुखराज रत्न पहनने पर अनिद्रा रोग प्रभावी होकर आपके स्वास्थ्य में कमी कर सकते है। कार्यो को पूर्ण करने के लिए आपको अधिक प्रयास करने पड़ सकते है। जिसके कारण आपको आराम के अवसर कम मिलेंगे। यह भी आपको अस्वस्थ करेगा। इस रत्न के प्रभाव से आप चिंता और अपमान से पीड़ित हो सकते है। मोक्ष प्राप्ति के मार्ग को यह रत्न बाधित कर सकता है। पुखराज रत्न आपके विदेश भाव को प्रबल कर आपको व्यर्थ की यात्राएं दे सकता है। इसके अतिरिक्त इस रत्न को धारण करने पर आपको आर्थिक दंड के रूप में टैक्स (कर) देने पड़ सकते है।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहू द्वादश भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः राहू रत्न गोमेद धारण करना आपके मन में भ्रम दे सकता है। रत्न प्रभाव से आपके सुख चैन में कमी हो सकती है। आपके दिमाग में अनेक भ्रांतियां जन्म ले सकती है। उन्नतिशील होने के लिए आप अत्यधिक महत्वाकांक्षी हो सकते है। अनेक योजनाएं आपके मस्तिषक में निर्मित हो सकती है। यह रत्न आपके दिमाग को अत्यधिक क्रियाशील बनाए रखेगा। गोमेद रत्न प्रभाव से आप बढ़ चढ़ कर बातें करने वाले हो सकते

है। यह रत्न आपको अनिद्रा रोग दे सकता है। गोमेद रत्न आपको वैचारिक अस्थिरता दे सकता है। इस रत्न के प्रभाव से आपको पिता को सुख भी कम ही मिल पाएगा। कार्यो में अनिष्टता का भाव प्रभावी हो सकता है।

राहु धनु राशि में स्थित है व इसका स्वामी गुरु आठवें भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न धारण करने से आपकी आयु में कमी होगी। आप असाध्य रोगों से पीड़ित हो सकते हैं। बुरे मित्रों से आपके संबंध हो सकते हैं। यह रत्न आपमें साहस की कमी करेगा तथा आपमें उतावलापन देगा। धन संचय करना आपके लिए बेहद कठिन होगा। इस रत्न से आपके मान-सम्मान में कमी हो सकती है। यह रत्न आपकी वृद्धावस्था में कष्ट का कारण बन सकता है। रत्न प्रतिकूलता आपकी भाषा में अशिष्टता का भाव देगी। इस रत्न को पहनकर आप दुरूसाधनों से धन संचय का प्रयास करेंगे। यह रत्न आपको अवैध धन कमाने की ओर अग्रसर करेगा।

दशानुसार रत्न विचार

शनि
(20/06/2021 - 20/06/2040)

शनि की दशा में आपका हीरा, नीलम व पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मूंगा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य, मोती, पुखराज, गोमेद व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

बुध
(20/06/2040 - 20/06/2057)

बुध की दशा में आपका हीरा, नीलम व पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मूंगा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया, माणिक्य, मोती, पुखराज व गोमेद रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

केतु
(20/06/2057 - 20/06/2064)

केतु की दशा में आपका हीरा, नीलम व मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं और माणिक्य, मोती, पुखराज व गोमेद रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुक्र
(20/06/2064 - 20/06/2084)

शुक्र की दशा में आपका हीरा, नीलम व पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मूंगा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं और माणिक्य, मोती, पुखराज व गोमेद रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

सूर्य
(20/06/2084 - 20/06/2090)

सूर्य की दशा में आपका नीलम, हीरा व मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती रत्न नेष्ट हैं और माणिक्य, पुखराज, गोमेद व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

चन्द्र
(20/06/2090 - 21/06/2100)

चन्द्र की दशा में आपका नीलम, हीरा व पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मूंगा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती रत्न नेष्ट हैं और माणिक्य, पुखराज, गोमेद व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

मंगल
(21/06/2100 - 22/06/2107)

मंगल की दशा में आपका नीलम, हीरा व मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती व लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं और माणिक्य, पुखराज व गोमेद रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - लापीज

आपका जन्म मकर राशि के लग्न में हुआ है। इसका स्वामी शनि होता है। शनि सबसे अधिक महत्वपूर्ण ग्रह है क्योंकि यह ज्योतिष शास्त्र में न्याय का प्रतीक व न्यायप्रिय माना जाता है तथा शनि को ज्योतिष में आध्यात्मिक ज्ञान के लिये शुभ माना जाता है। किसी भी जातक के लिये लग्न सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे जातक की आयुष्य, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, स्वभाव, भौतिक संरचना तथा सुख का ज्ञान होता है। यदि किसी व्यक्ति का लग्न बलवान हो तो उस जातक को जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होते हुए अच्छी पद प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान की प्राप्ति होती है।

अतः मकर राशि के लग्न वाले जातकों को मकर राशि के स्वामी ग्रह शनि को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। शनि ग्रह के लिये लापीज रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को उपर्युक्त सभी लाभ मिलेंगे अर्थात जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी शनि न्यायप्रिय एवं नौकरी का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को समाज में सम्मान तथा नौकरी पेशा लोगों के लिये अपने वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग व सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को घर के बुजुर्गों तथा सेवकों का सहयोग भी प्राप्त होता है। शनि ग्रह एकाग्रता तथा आत्मिक शक्ति का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको जोड़ों से संबंधित रोग हों तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा जिसको कोर्ट कचहरी मुकदमे आदि से संबंधित परेशानी हों उनको यह रत्न अल्प प्रयास से समस्याओं से मुक्ति दिलवाता है।

लापीज रत्न को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि मध्यमा अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में शनि की अंगुली मानी जाती है । लापीज रत्न शनि का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात शनिवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय सांयकाल सूर्यास्त के पश्चात होता है। शनिवार के दिन सूर्यास्त से एक घंटे के समय के अंदर इसको धारण करना होता है। लापीज को यदि शनिवार के साथ-साथ शनि के नक्षत्र अर्थात् पुष्य, अनुराधा और उ. भाद्रपद में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

लापीज को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पटरे पर काले रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, शनि के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए।

शनि का मंत्र - ऊँ शं शनैश्चराय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि शनि से संबंधित पदार्थ जैसे काली उड़द, सरसों का तेल़, सवा मीटर काले कपड़े का दान करें तो लापीज रत्न की अंगूठी धारण करना और भी अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन शनि का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें और शनि देव की उपासना करें तो यह लापीज रत्न की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक शनिवार को शनिदेव जी की उपासना करें तथा शनिदेव जी का सरसों के तेल से अभिषेक करें तो यह और अधिक शुभकारी हो जाता है।

मकर लग्न वाले जातक यदि लापीज रत्न की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन स्वस्थ जीवन का आनंद उठाते हुए पूर्ण मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त जीवन प्राप्त करते हैं।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के ह्रदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरू ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुडंली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली मकर लग्न की है। आपके व्यक्तित्व पर शनि का प्रभाव दिखाई पड़ता है। आप मेहनती हैं, इसलिए बिना रूके निरन्तर कार्य करते रहते हैं, जिस कारण इनके किये हुए कार्यो में गलतियों की संभावना कम रहती है। आप दृढ़ निश्चयी और संयमी हैं। जीवन से आने वाली बाधाओं से घबराते नहीं हैं, बल्कि उनका डटकर मुकाबला करते हैं। दूसरों की मदद करने की प्रवृति रखते है। साथ ही आप हंसमुख है। आप में व्यय अधिक करने का स्वभाव हो सकता हैं। दूसरों की मदद करने वाले होते हैं। आप हँसमुख हैं। आप कम समय में किसी भी परिस्थिति में अपने का ढालने में दक्ष होते हैं।

आप गलत बातें सहन नहीं कर पाते चाहे उस विरोध में अकेले ही रह जाये। आप

अपनी समझदारी और सूझ-बूझ का परिचय देते हुए बड़ी ही आसानी से अपना कार्य करवा लेते हैं। हर विषय में आपकी रूचि रहती है और हर क्षेत्र में सफलता पाना चाहे हैं और अपनी मेहनत और लगन से सफलता हासिल कर भी लेते हैं। आप न्याय है और कभी किसी के साथ धोखा नहीं करते। असफलता मिलने पर आप शीघ्र निराश हो जाते है। व्यर्थ की बातें करने में अपना वक्त व्यय नहीं करते और अपने भविष्यके बारे में सोचते है। आप परोपकारी है और अनुशासन पसंद हैं। अपने सिद्धांतों पर जीते है। आप परोपकारी हैं।

कुंडली के सभी 12 भाव सदैव शुभ फल नहीं देते। 12 भावों में से 6, 8 व 12 वां भाव जिन्हें त्रिक भाव के नाम से भी जाना जाता हैं। इन भावों के भावेश तथा इन भावों में स्थित ग्रह अशुभ होने के कारण अशुभ फल देते हैं। त्रिक भावों के स्वामी व इनमें बैठे ग्रह किसी न किसी प्रकार आपके जीवन में बाधा डालते है। कुंडली के षष्ट भाव को रोग, ऋण और शत्रु भाव की संज्ञा की जाती हैं। छोटी अवधि के रोग भी इसी भाव से देखे जाते हैं। तथा अष्टम भाव मृत्यु, दुर्घटना, कलेश, विघ्न और अकाल मृत्यु और परेशनियों का विचार किया जाता हैं। अष्टमेश का किसी भी भाव-भावेश से सम्बन्ध बनना अनुकूल नहीं माना जाता हैं। 6 व 8 भावों के बाद एक अन्य व अंतिम त्रिक भाव 12 वां भाव है। 12 वें भाव से व्यय, सरकारी दंड, लम्बी अवधि का कारावास, शयन, मोक्ष, टैक्स तथा विदेश स्थान का विचार किया जाता हैं।

6, 8, 12 भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता हैं। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं। व 6, 8, 12 भाव के स्वामी तथा इन भावों में स्थित ग्रह अपनी महादशा-अन्तर्दशा में अनिष्ट तथा अशुभ फल देते है।

बुध आपके षष्टेश व नवमेश है, आपका पारिवारिक जीवन कष्टकारी हो सकता है। व्यापारिक विषयों में भी हानि के योग बन सकते हैं। इसके अलावा यह आपको शत्रुओं के द्वारा धन-हानि की संभावनाएं दे सकता है। यह योग पिता के स्वास्थ्य के पक्ष से भी शुभ नहीं है। सूर्य अष्टमेश गुरु द्वादशेश तथा तृतीयेश हैं।

आपकी कुंडली में चन्द्र षष्ठ भाव में स्थित हैं। इसके परिणाम से शत्रुओं से कष्टों का सामना करना पड़ सकता हैं। आप रोग पीड़ित, चिंताग्रस्त, व्याधिक्य करने की प्रवृति से ग्रस्त हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त चन्द्र की अशुभता से आपके ऋण लेन-देन में बाधाएं आ सकती हैं।

आपकी कुंडली के छठे भाव में केतु स्थित हैं, आप अपने शत्रुओं पर हावी रहेंगे, वात सम्बन्धी रोग शीघ्र अपने प्रभाव में ले सकते हैं, भूत-प्रेत बाधा से पीड़ित हो सकते हैं, अत्यधिक बोलने वाले, तथा ननिहाल पक्ष से अपमानित हो सकते हैं। आप अल्पकालीन रोगों से पीड़ित हो सकते है।

सूर्य का अष्टम भाव में होना, सन्तान और शिक्षा क्षेत्र को बाधायुक्त बना रहा हैं। जीवन में अप्रत्याशित घटनाएं, सरकारी कार्यों में बाधाएं, सरकारी क्षेत्रों से पूर्ण सहयोग प्राप्त न होना, हृदय सम्बन्धी लम्बी अवधि के रोग, पुलिस और ससुराल पक्ष से संबंधों में मधुरता में

कमी हो सकती हैं। सूर्य आपकी विद्वता में कमी कर रहा है, वाणी में कटुता का भाव कुछ अंश तक आ सकता है, धन-संचय में कमी, कुटुंब से मतभेद, अल्पकाल के लिए मिथ्याभाषी हो सकते है।

गुरु का अष्टम भाव में स्थित होने से पैतृक संपति का नाश हो सकता है। बुद्धि विवेक से धनार्जन करने में सफल, माता के सहयोग से भाग्योन्नति, उन्नति में विलम्ब, कारावास संभव। आपका भाग्योदय विलम्ब से होगा। संघर्षो के उपरान्त आपको कार्यो में सफलता, धन और यश की प्राप्ति होगी। व्यय शुभ कार्यो पर होंगे। धन, कुटुंब और विद्या से सुख की प्राप्ति होगी। माता, घर, जमीन -जायदाद और वाहन सुख दे रहे हैं।

राहु आपके द्वादश भाव में स्थित है, राहु की यह स्थिति आपको अवनति का कारण बन सकती है, आप शत्रुहंता बनेंगे। आप नीच प्रवृतियुक्त, कपटी, कुटिल, नेत्ररोगी, असत्यभाषी, दुराचारी, पत्नी की चिंता से ग्रस्त, दुष्ट संगती में धन का अपव्यय करने वाला हो सकते है। धानार्जन तथा व्यय दोनों ही अधिक होते है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 1, 2, 5, 8, 9 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

साढ़ेसाती विषयी माहिती

गोचर शनि जेव्हां कुंडलीतीत चंद्राला बारावा, पहिला व दूसरा येईल, तेव्हा साडेसाती सुरु होते. कुंडलीतीत चन्द्राला गोचर शनि चौथा व आठवा आला असता, ढैय्या म्हणजे अडीचकी सुरु होते. साडेसाती चा प्रभाव साडेसात वर्ष व ढैय्या चा प्रभाव अडीच वर्षें मानला गेला आहे साडेसाती चा प्रभाव सामान्यापणे शारिरीक, मानसिक व आर्थिक त्रासाचा जातो तर काहीवेलप आश्चर्यचकित प्रगतिही या कालात होते.

सामान्यापणे मनुष्याच्या जीवनात साडेसाती तीन वेला एते– पहिल्यांदा बालपणि, दूस्रयांदा तरुणपणि व तीस्रयांदा म्हातारपणि. पहिलया साडेसाती चा प्रभाव शिक्षण व आई–वडिलावर पडतो. दुस्रया साडेसाती चा प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति व कुटुंबावर पड़तो. तिसरया साडेसाती चा प्रभाव शारिरीक आरोग्यावर पडतो.

खाली दिलेल्या कोष्टकवरुन साडेसाती चा काल व प्रत्येक अडीचकी (ढय्या) चे शुभाशुभ फलासंबंधीची माहिती समजू शकेल.

प्रथम चक्रः

अष्टमस्थान चरण	03/09/1991-05/03/1993	15/10/1993-10/11/1993	----------
साढ़ेसातीचा पहला चरण	07/06/2000-23/07/2002	08/01/2003-07/04/2003	----------
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	23/07/2002-08/01/2003	07/04/2003-06/09/2004	13/01/2005-26/05/2005
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	06/09/2004-13/01/2005	26/05/2005-01/11/2006	10/01/2007-16/07/2007
चतुर्थस्थान चरण	10/09/2009-15/11/2011	16/05/2012-04/08/2012	----------

द्वितीय चक्रः

अष्टमस्थान चरण	24/01/2020-29/04/2022	12/07/2022-17/01/2023	----------
साढ़ेसातीचा पहला चरण	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	----------
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	31/05/2032-13/07/2034	----------	----------
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	13/07/2034-27/08/2036	----------	----------
चतुर्थस्थान चरण	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041

तृतीय चक्रः

अष्टमस्थान चरण	06/03/2049-10/07/2049	04/12/2049-25/02/2052	----------
साढ़ेसातीचा पहला चरण	27/05/2059-11/07/2061	13/02/2062-07/03/2062	----------
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	11/07/2061-13/02/2062	07/03/2062-24/08/2063	06/02/2064-09/05/2064
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066
चतुर्थस्थान चरण	30/08/2068-04/11/2070	----------	----------

शनि चा ढैया फल

ढैया चा प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टमस्थान चरण	शुभ	स्वास्थ्य
साढ़ेसातीचा पहला चरण	शुभ	सन्तति सुख
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	शुभ	शत्रु व रोग
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	सम	दाम्पत्य कलह
चतुर्थस्थान चरण	शुभ	भाग्योदय

साढेसाती वर उपाय

शनि च्या साडेसाती दरम्यान होणार्या अशुभ प्रभावांची तीव्रता कमी होना साठी दान, पूजन व्रत, मंत्रोच्चार आदि उपाय आहेत. शनिवारी काली काम्बल, काली उड़द, काले–तिल, कालयारंगाची चर्मची चप्पल, काले कापड़, लोखंडाचे दान करावे. शनिदेवाची पूजा, दर्शन व शनिवार चा उपवास करावा उपावास च्या दिवशी फले उड़द चा खाध वस्तु, हरभरे, बेसन, काले तिल, काले मीठ या वस्तुंचेच सेवन करावे पाईजे. स्वतः किवां योग्य गुरुजीकड्न खालील शनिमंत्रचा 19000 जप करुन ध्यावा.

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि चा साडेसातीत शारीरिक, मानसिक व कौटुंबिक शान्ति आणि समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता व अंगीकृत कार्यात प्रगति होण्या साठी खालील महामृत्युंजय मंत्रचा 125000 जप स्वतः करावा किंवा योग्य पूरोहिताकड्न करवून ध्यावा.

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

किवां खालील मंत्रचा कमीत कमी 108 वेला जप करावौं.

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

साढ़ेसाती च अशुभत्व कमी करुन् शुभत्व वाढवण्या साठी 5–1/4 रत्ती वजना च नीलम रत्न पंचधातु उजव्या हाताचा मध्ल्या बोटात धारण करावे. घोडायाच्या नालेची किंवा बोटीच्या कीलची अंगठी मधल्या बोटात वापरवी.

अंगठी किंवा पेन्डन्ट शुक्ल पक्षा चा शनिवारी सायंकाली सूयदृस्ता चा अर्धातास पूवदृ धारण करावी. पुष्य, अनुराधा किंवा उतरा भाद्रपदा या नक्षत्र पैकी जे नक्षत्र शनिवारी असेल त्या दिवशी अंगठी धारण करावी. अंगठी धारण करण्या पूवदृ शुद्ध निरसे दूध व गंगाजलानें अंगठीस अभिषेक करावा. धूप–दीप लावून पूजा करावी व खालील मंत्र 108 वेला जपून अंगुठी धारण करावी.

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगठी धारण केल्या नंतर शनि च्या वस्तूंचे दान करावे या मुले शनिचा अशुभ परिणामांची तीव्रता कमी होईल व आपल्या सुख–शान्ति–समृद्धि ची वाढ़ होईल.

मांगलिक विचार

जेह्वा वर किंवा कन्या ची कुंडलीत मंगळ, लग्न चतुर्थ, सप्तम, तसेच द्वादश भाव असेल तेह्वा असे जातक मंगळ दोषी होतात.।। यथोक्तम।। लग्ने व्यये च पातले जामित्रे चाष्टमे कुजे. स्त्री भर्तुविनाशाय भर्तुः पत्नी विनाशयेत्. मांगळिक दोष लग्न पासून जास्ती प्रबल होतात, पण चंद्रमा पासून यांचा दोष कम आहे. जर शस्त्रनुसार वर अणि कन्या चा मांगळिक दोष भंग होतात तर यांचे दम्पती जीवन सुखी अणि प्रसन्नता युद्ध होणार. यांचे विपरीत बगैर दोष भंग झाले, मांगळिक वर कन्या ला जीवनां चे अनेक अनावश्यक त्रास तसेच अडचणांचे सामना होणार. अतः विवाहा पूर्वी शुद्ध कुंडली मिलान करून हा दोष उचित निवारण करून दांपत्य जीवन शुरू कराय ला पहिजे. ज्यापासून जीवनात शान्ती तसेच संपन्नता होणारी.

****

तुमचे जन्म समय मधे मंगळ ची स्थिति चंद्रमा पासून चतुर्थ भावात आहे अतः आपण चंद्र कुंडली पासून मांगळिक आहात, आणि योग पण नाय भंग आहे. अतः मंगळ प्रभावा पासून जीवना ला आवश्यक सुख साधन तसेच चल–अचल संपत्ति परिश्रम पासून एकत्रित करणारी पण शारीरिक सुख सामान्य होणार तसेच मानसिक संतुष्टि पण रहणारी. यांचा प्रभावातून तुमचा विवाह काही उशीर होणार. विवाह पूर्व गोष्ठी मधे पण अडचणे येणारी पण आखेर समया मधे सफळता मिळेल, तुमची बायको चा स्वास्थ्य वरा होणार पण स्वभाव मधे काही उष्णता रहणारी पण ह्या प्रभाव दंपती जीवन वर नाय पडणार तसेच सुखी जीवन व्यतीत होणार. चतुर्थ भावात मंगळ प्रभाव पासून आपण जीवन मधे भौतिक सुख साधन एकत्रित करणारे. सप्तम भाव वर दृष्टि पासून पत्नी चा स्वास्थ्य चांगला रहणार पण स्वभावात उग्रता रहणारी. दशम भाव वर मंगळ ची दृष्टि पासून आपण कार्य क्षेत्र मधे परिश्रम पासून नेहमी उन्नति शीळ रहणारे, आणि कोणी महत्व पूर्ण पद प्राप्त होणार. तसेच समाजातील सम्मान अर्जित कराय साठी सफळता भेटणारी एकादश भाव वर दृष्टि होण्या मुळे आर्थिक स्थिति सामान्य अनुकूल रहणारी. आवश्यक धन लाभ होणार आणि परिश्रम पासून धन वृद्धि कराय साठी तुम्हाला मांगळिक जातक पासून विवाह कराय ला पाहिजे. ज्या मुळे परस्पर मांगळिक दोष भंग होतात. ह्या साठी जातक ची कुंडली मधे मांगळिक भाव प्रथम चतुर्थ सप्तम अष्टम आणि द्व ादश भावात शनि तसेच राहु सारख्या पापी ग्रहांची स्थिति होणार पाहिजे हा दोष भंग होण्या वर तुम्हाला सर्व सांसारिक सुख संसाधनांची प्राप्ती होणारी. तसेच चल–अचल संपत्ति वापरय साठी सफळ होणारे तसेच सुख सौभाग्य ऐश्वर्य मिळेल परस्पर सम्बन्धातील मधुरता आणि एक दूसरे ला सहयोग आणि संतुष्टि होणारी.

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में शेषनाग नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप जातक के शरीर में रोग व्याधि कभी लग जाती है, जिसमें नेत्र रोग, उदर रोग, अनिद्रा आदि सम्मिलित हैं। मानसिक उद्विग्नता के कारण दिल और दिमाग थोड़ा बहुत परेशान रहता है और शारीरिक सुख का प्रायः अभाव रहता है।

इस योग के कारण जातक को अपने जन्मस्थान व देश से दूर रहना पड़ता है और बेवजह अनेक शत्रु हो जाते हैं। वे समय-समय पर षड्यन्त्र रचते रहते हैं। परन्तु वे अपने षड्यन्त्र में प्रायः सफल नहीं होते। झगड़ा-झंझट, वाद-विवाद में जातक को हार का सामना करना पड़ता है। जातक को न्यायालय से प्रायः नुकसान ही उठाना पड़ता है। जातक को अपनी जिन्दगी में समय-समय पर बदनाम होने का भय बना रहता है। काम बनते-बनते रह जाते हैं। काम करने का ढंग निराला होता है। कामों को सफल करने के लिए थोड़ा बहुत संघर्ष करना पड़ता है, पर सफलता संदिग्ध रहती है।

इसके प्रभाव से आमदनी से अधिक व्यय होने के कारण आर्थिक संकट घेर लेते हैं। जातक के प्रायः अनेक कर्जदार हो जाते हैं। कर्जा उतारने हेतु किए गए प्रयासों में सफलता मिलती है पर थोड़ा बहुत नुकसान भी उठाना पड़ता है। मनोनुकूल काम पूरा होने में थोड़ा विलम्ब होता है। लेकिन इतना सब कुछ होने के बाद भी जातक के जीवन में एक अच्छा समय आता है और सामाजिक मान-सम्मान भी मिलता है। जीवन के अन्त में या मरणोपरान्त इनका नाम प्रसिद्ध होता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. ऊँ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अट्ठारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।
9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ऊँ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक

करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।

11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम् भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है।
- नवम् भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है।

आपकी कुडली में बुध और शुक्र के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आर्शीवाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें।

आपकी कुंडली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें। 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त

वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

अंकविज्ञान फलित

तुमचा जन्म दिनांक तीन आहे अंक ज्योतिष आधार वर तुमचा मूलांक तीन आहे मूलांक तीन चा स्वामी गुरु आहे. म्हणून आपण अनुशासन कठोर होणारे तसेच अनुशासन सम्बन्धी शक्ती पासून कार्य करणारे. कार्यात उशीर नाय बर्दास्त करणारे या मुळे तुमचे शत्रु जास्ती होणारे. आपण एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति होणारे आणि दुसरे वर शासन करायची इच्छा होणारी शिक्षण प्रशिक्षण बौद्धिक कार्य धर्म–कर्म क्षेत्रात चांगली सफळता प्राप्त होणारी. मषतिष्क–सन्तुलित आणि विकसित होणार तसेच कोणी पण विषय मधे अनुसंधान करायची विशेष क्षमता होणारी तर्क आणि ज्ञान शक्ति चांगली रहणारी. आपण कोणाचे आहित नाय करणारे दुसरे लोकांची भलाई कराय ची संवय होणारी आणि दान, पुण्य जास्ती करणारे सामाजिक स्थित चांगली रहणारी समाजातीळ गावाचे पाटील सारख्या पद पसंद करणारे. तसेच दुसरे लोकांचे सम्मान देणारे आणि असे संवन्धातीळ कार्य कराय चा धर्म समझणारे. स्वभावात शान्त कोमल खरे वक्ता मधुर आणि तसेच सत्य मार्ग वर चलणारे आणि त्रास वर्दास्त करुन विजय श्री प्राप्त करणारे. स्वास्थ्य साधारण अनुकूळ रहणार पण कधीं–मधीं मंदाग्नि जठराग्नि, पोटे विकार वगेर होउ सकतात.

भाग्यांक 5 चा स्वामी बुध ग्रह होण्या मुळे तुमचा भाग्योदय स्वतः ची वुद्धि विवेक पासून होणार. वुध वाणिज्य आणि व्यवसाय कळा चा दाता आहे गणित लेखन शिल्प चिकित्सा लेखा कार्य मधे प्रगति प्रदान करणार, तुमाचा मधे व्यापारिक कळा चांगळी होणारी बोलण्या ची कळा तर्क शक्ति जास्ती रहणारी, आपण रोजगार क्षेत्रा मधे प्रगति प्रदान करणारे आणि नवीन उन्नती आणि तरक्की चा मार्ग मजवूत करणारे, वाणिज्य कळा मधे आपण दक्ष रहणारे दर रोज चा कार्य लवकरच पूर्ण करणारे दुसरे चा कार्य पूर्ण कराय ची कळा पण होणारी तुमची चांगुल वुद्धि होण्या पासून धन संग्रह मधे लक्ष होणार आणि धन एकत्रित करणारे आर्थिक क्षेत्रातीळ स्थित सामान्य रहणार कानून चा उचित ज्ञान होण्या मुळे कार्य क्षेत्र मधे सर्व कार्य समुचित सम्पन्न करुन आपळे नाव स्मारक करणारे.

आपळा मूळांक 3 तसेच भाग्यांक 5 आहे मूळांक 3 चा स्वामी गुरु आणि भाग्यांक 5 चा स्वामी बुध आहे, मूळांक आणि भाग्यांक चा परस्पर समान सम्बन्ध आहे, गुरु आणि वुध चा कारण आपण प्रतिभा सम्पन्न कार्य ठेवणारे. आणि वुद्धि–विवेक चा उपयोग करुन रोजगार व्यापार चा निवल चुनाव करणारे. व्यापारिक क्षेत्रा मधे सफळ आणि स्वयं ची योजने चे कारण आपळे भाग्योदय प्राप्त करुन, ज्ञान विज्ञान चा क्षेत्रा मधे आपळी विशेष पसंद होइळ तसेच आपळे प्रत्येक कार्य ला व्यवस्थित सह करणारी रोजगार व्यापार चा क्षेत्रा मधे श्रीमंत साठी विशेष लक्ष्य होणार भौतिक सुख साधना चा वस्तु एकत्रित करुन आपळी मानसिक स्थिति धर्म क्षेत्र आणि खरा विचारसारिणी वर निरन्तर रहणार. आपळी सामाजिक सिथित श्रेष्ठ होणारी आणि वौद्धिक पुरुष सारख्या आपळे चिन्ह स्थापित होणार. आणि जीवना मधे सफळ महिला सारख्या प्रसिद्धी मिळेल आणि धन, सम्पत्ति, जमीन, जायदाद, हे सर्वां चा सुख भेटणार. आपळा भाग्योदय 23 वर्ष ची आयुष्य वर शुरु होऊन 32 वर्ष वर विशेष उन्नति प्राप्त होइळ. आपळे मूलांक 3 ची मित्रता 6 आणि 9 ते आहे तसेच भाग्यांक 5 ची मित्रता 3 आणि 9 ते आहे अतः जीवन मधे 3,

5, 6, 9 चा अंक विशेष महत्वपूर्ण असेळ तसेच आपल्या आयुष्य मधे घटणे पण करणार. आपळे मूळांक आणि भाग्यांक चा सम्वन्ध सामान्य आहे आणि प्रभाव आपल्या अनुकूल जाणार आपळे जीवना ची प्रमुख घटणे घटणार जेह्वा कधी असे अंका चा संवन्धित तारीख, मास, वार, ईस्वी, सन् आपळे निर्धारित अंक सह असेळ तर असा दिवसी विशेष लाभ होतो कोण पण नवीन कार्य पत्र लेखन, मोठे अधिकारयांची भेंट हे सर्व कार्य या वेली जास्त शुभ होणार. आपळे गेलेला समया मधे घटणा चा अवलोकन करा तर ही तारीख, मास, वर्ष, सन् ची अंका वर विशेष घटणे झाले होते. गेलेला समया मधे उपयुक्त सर्व अंक चा निरीक्षण करा नंतर जे अंक आपळे जास्ती अनुकूल आहे असे अंका ची समया वर आपले विशेष योजने ठेवा, तसेच अंका ची फायदे प्राप्त करावे. आपळे–मार्च, मई, जून, सितम्वर महिला विशेष घटने साठी आहे. कोण पण नवीन कार्य असा दिवसी शुरु करा ज्या दिवसी आपळे मूळांक आणि भाग्यांक बरोवर असणार तर असे समया वर सर्व कार्य शुभ रहणार. ह्या प्रकारी आपळी आयुष्य चा असा वर्ष ज्यांचा योग 3, 5, 6, 9 होतो हा आपळे शुभ फळ देतो. 3 – 12, 21, 30, 39, 48, 57, 66, 75. 5 – 14, 23, 32, 41, 50, 59, 68, 77. 6 – 15, 24, 33, 42, 51, 60, 69, 78. 9 – 18, 27, 36, 45, 54, 63, 72म्हणून आपळी आयुष्य चा हा वर्ष परिवर्तना चा कारण होणार आणि घटणे चा योग करणार हे वर्षा मधे आपळा जीवना चा दशा परिवर्तित होणार आणि स्मारक होणार.

ग्रह फल

सूर्य

अष्टमभाव में सूर्य हो तो जातक धैर्यहीन, निबुद्धि, सुखी, धनी, क्रोधी, चिन्तायुक्त एवं पित्तरोगी होता है।

सिंह राशि में रवि हो तो जातक सत्संगी पुरुषार्थी, योगाभ्यासी, वनविहारी, क्रोधी, गम्भीर, उत्साही, तेजस्वी एवं धैर्यशाली होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति अष्टम भाव में है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से वे कष्टानुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा तथा जीवन में वे धन धान्य से परिपूर्ण रहेंगे एवं आपको समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे यदा कदा आप उनसे विशेष धन या सम्पत्ति भी अर्जित कर सकेंगे। साथ ही यात्रा एवं व्यापार संबंधी कार्यों में भी आपको सहयोग एवं निर्देश प्रदान करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं समय समय पर उनकी आज्ञा का आप पालन करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों से इसमें कटुता या तनाव का वातावरण भी होगा परन्तु यह अल्प समय के लिए होगा। इसके साथ ही जीवन में आप सर्वप्रकार से पिता को सहयोग देंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे।

चन्द्र

षष्ठभाव में चन्द्रमा हो तो जातक अल्पायु, आसक्त, कफरोगी, खर्चीले स्वभाववाला, नेत्ररोगी एवं भृत्यप्रिय होता है।

मिथुन राशि में चन्द्रमा हो तो जातक विद्वान, अध्ययनशील, सुन्दर, रतिकुशल, भोगी, मर्मज्ञ, नेत्र चिकित्सक, अच्छा वक्ता एवं अच्छा अन्तर्ज्ञान वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति षष्ठ भाव में स्थित है। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। परन्तु समय समय पर उन्हें शारीरिक परेशानी होती रहेगी। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं जीवन में आपको पूर्ण सहायता प्रदान करेंगी। साथ ही आपके कार्यों के व्यवधान आदि को भी दूर करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगी एवं आपकी सफलता की हमेशा इच्छुक रहेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धावान रहेंगे एवं आजीवन उनकी सेवा के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही समय समय पर उनको अपनी ओर से वांछित सहयोग तथा सहायता भी प्रदान करेंगे। आपके संबंध मधुर रहेंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद होंगे जिससे कभी कभी अप्रिय स्थिति उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय उपरान्त सब कुछ ठीक हो जाएगा।

मंगल

नौवें भाव में मंगल हो तो जातक अभिमानी, क्रोधी, नेता, द्वेषी, अल्पलाभ करने वाला, यशस्वी, असन्तुष्ट, भातृविरोधी, अधिकारी एवं ईर्ष्यालु होता है।

कन्या राशि में मंगल हो तो जातक सुखी, शिल्पज्ञ, पापभीरु, लोकमान्य एवं व्यवहार कुशल होता है।

आपके जन्म समय में मंगल नवम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा लेकिन यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। आपके प्रति उनका अपनत्व रहेगा एवं जीवन के सुख दुःख में आपका नित्य सहयोग करते रहेंगे। इसके साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी वे वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता अवश्य प्रदान करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा इससे वे युक्त रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से स्नेह एवं सम्मान प्रदान करेंगे एवं सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में उनको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। आपके आपसी संबंधों में मधुरता रहेगी परन्तु यदा कदा आपसी सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण उनमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अस्थाई रहेगी। इसके साथ ही उनकी भाग्योन्नति में भी आप समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार से अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे एवं सुख दुःख में उनका पूर्ण साथ देंगे।

बुध

सातवेंभाव में बुध हो तो जातक सुन्दर, विद्वान्, कुलीन, व्यवसायकुशल, धनी, लेखक, सम्पादक, उदार, सुखी, अल्पवीर्य, दीर्घायु एवं धार्मिक होता है।

कर्क राशि में बुध हो तो जातक नीतिकुशल, सूक्ष्माही, अत्यन्त कामुक, छोटाकदवाला, अनैतिक चरित्र, अनिश्चित स्वभाव, वाचाल, गवैया, परदेशवासी, प्रसिद्ध एवं परिश्रमी होता है।

गुरु

अष्टमभाव में गुरु हो तो जातक दीर्घायु, नम्रव्यवहार, लेखक, सुखी, शान्त, मधुरभाषी, विवेकी, ग्रन्थकार, कुलदीपक, ज्योतिषप्रेमी, मित्रों द्वारा धननाशक, गुप्तरोगी एवं लोभी होता है।

सिंह राशि में गुरु हो तो जातक धार्मिक, प्रेमी, कार्यकुशल, सभाचतुर शत्रुजित्, आकर्षकव्यक्तित्व, उच्चाकांक्षी, सक्रिय, सुखी, कुशाबुद्धि साहित्य की ओर झुकाव, लेखक एवं उच्च सरकारी पद पर आसीन होता है।

शुक्र

सप्तमभाव में शुक्र हो तो जातक लोकप्रिय, धनिक, चिन्तित, विवाह के बाद भाग्योदय, साधुप्रेमी, स्त्री से सुख, कामी, भाग्यवान् गानप्रिय, विलासी, अल्पव्यभिचारी चंचल एवं उदार होता है।

कर्क राशि में शुक्र हो तो जातक धार्मिक, ज्ञाता, सुन्दर, सुख और धन का इच्छुक, नीतिज्ञ, आवेशपूर्ण, डरपोक, दुःखी एवं प्रचुर सन्तान होता है।

शनि

लग्न (प्रथम) में शनि मकर, कुम्भ तथा तुला का हो तो धनाढ्य, सुखी, धनु और मीन राशियों में हो तो अत्यन्त धनवान् और सम्मानित एवं अन्य राशियों का हो तो अशुभ होता है।

मकर राशि में शनि हो तो जातक कुशा बुद्धि, परिश्रमी, आस्तिक भोगी, मिथ्याभाषी, शिल्पकार, प्रवासी, अच्छा घरेलू जीवन, विद्वान्, सन्देह करनेवाला, बदला लेने वाला एवं दार्शनिक होता है।

राहु

बारहवें भाव में राहु हो तो जातक विवेकहीन, कामी, चिन्ताशील, अतिव्ययी, सेवक, परिश्रमी, मूर्ख एवं मतिमन्द होता है।

धनु राशि में राहु हो तो जातक प्रारम्भिक जीवन में सुखी, दत्तक जाने वाल एवं मित्र द्रोही होता है।

केतु

षष्ठभाव में केतु हो तो जातक वात विकारी, झगड़ालू, अरिष्टनिवारक, सुखी, मितव्ययी, भूत प्रेतजनित रोगों से रोगी, दुर्घटना, दीर्घायु एवं धनी होता है।

मिथुन राशि में केतु हो तो जातक वायुरोग से पीड़ित, अभिमानी सरलता से सन्तुष्ट होने वाला, अल्पायु एवं छोटी सी बात पर क्रोधित हो जाने वाला होता है।

शारीरिक सौष्ठ, व्यक्तित्व आणि प्रकृति

आपला जन्म मकर लग्नी झाला आहे. त्यामुळे आपले आरोग्य चांगले राहील. स्वभावाने शांत व उदार असाल आणि सर्व लोकांशी प्रेम व सहानुभूतीपूर्वक व्यवहार कराल. चेहर यावर चैतन्य थोडे कमीच असेल तसेच विशारशीलताही कमी असेल पण चेहरा अत्यंत गंभीर व शांत असेल. व्यक्तिवैशिष्ट्य म्हणजे आपण कार्यशीलपणा आणि कष्टाळूपणा. कोणतेही काम अथक परिश्रमाने संपन्न करू शकता. त्याचबरोबर शांत व न थांबता दीर्घकाळपर्यंत आपली प्रापंचिक किंवा अन्य कामे पूर्ण करण्याची क्षमता असेल. आयुष्यात हे परिश्रम व कार्यशैलीच आपल्या यशाची पुंजी असेल. सेवाव्रती असाल आणि इतर जन, समाज किंवा देशाची सेवा करणे आपले कर्तव्य समजाल आणि आपला बहुतांशी काळ सेवाकार्यात जाईल. परंतु याउलट कधी कधी कठोर कामेसुद्धा करू शकाल आणि लालच देखील निर्माण होई शकते. अशावेळी संयम व बुद्धिने आपली कामे करावीत.

आपण एक साहसी व संघर्षवान व्यक्ती आहात आणि दिलेली कामे पूर्ण करण्यास सदैव तत्पर असाल. कधी कधी आपल्या मनामध्ये इतरेजनांबद्दल इर्षा व द्वेष निर्माण होईल आणि बोलण्यात दोष येऊ शकतो. बुद्धि साशंक असेल आणि मनामध्ये औदासिन्य असेल. यशामध्ये विशेष आनंद किंवा अपयशात जास्त दुःख होणार नाही. जीवनात भौतिकतेकडे विशेष आकर्षण असणार नाही आणि त्यागी जीवनाकडे कल असेल. मित्रांशी उचित व्यवहार कराल आणि त्यांना अपेक्षित सुख व मदत देत राहाल. शत्रूलासुद्धा क्षमा करण्याची क्षमता असेल. प्रत्येक काम विचार करून सुरू करता पण पुढे गेल्यावर या कामात काही वैगुण्य राहू नये किंवा अपयश आले तर अशा शंकांनी कामाचा वेग कमी होऊ शकतो. अशा वृत्तीमुळे आपल्याला अनेकदा हानी होऊ शकते आणि विलंबसुद्धा होईल.

शिकण्याची वृत्ती असेल. त्यामुळे संशोधन, वैज्ञानिक किंवा इतर शास्त्रीय विषयांमध्ये यश प्राप्त होईल. इतिहासामध्ये रस असेल आणि राजकारणात सेवावृत्तीमुळे नेतृत्व प्राप्त होऊ शकते. दूरघ्ष्टी, त्याग व धैर्य हे गुण आपल्यात आहेत. एक आदर्शवादी व्यक्ती आहात आणि आपल्या आदर्शांचे अनुसरण कराल. आपल्या अनुयायांना उच्च आदर्शाप्रमाणे चालण्यास प्रेरित कराल. अशाप्रकारे कष्टाने कामे करून त्यागी, साधे व सेवावृत्तीने जीवन जगण्यात प्रसन्नता मिळेल. यथोक्तम–

कठिनमूर्तिर्रतीव शठः पुमात्रिजमनोगतकृद् बहुसन्तति।
सुचुतुरोळपि च लुब्धतरो वरो यदि नरो मकरोयसम्भवः।।

– जातकाभरणम

अर्थात, मकर लग्नामध्ये जन्म झालेला जातक कुरूप, शठ, मनाप्रमाणे काम करणारा म्हणजे दुसऱ्यांचा योग्यसुद्धा सल्ला न मानणारा, बहुसंतानवाला, अत्यंत चतुर व लोभी असतो.

धन, कुटुंब, डोळा आणि वाणी

आपल्या जन्मसमयी द्वितीय भावामध्ये शनिची कुंभ राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपण एक बुद्धिमान व्यक्ती असाल आणि दुष्कृत्याबद्दल नेहमी सजग असाल. स्पष्टवक्ता असल्याने आपल्या मनाला जे पटेल ते सर्वांसमोर बोलून टाकाल. निःस्वार्थी वृत्तीने प्रापंचिक कृत्ये संपन्न कराल, पण लोकांच्या बोलण्याशी पटकन सहमत होण्याच्या सवयीने कधी कधी अनावश्यक त्रासाला सामोरे जावे लागेल. कर्तव्यपरायण व्यक्ती असाल आणि कुटुंबाबद्दल आत्मियता असेल. घराला सुंदर व आकर्षक रूप देण्याचा प्रयत्न कराल.

कुटुंबाच्या भल्यासाठी नेहमी चिंतीत राहाल आणि मानसिक व भावनिकघ्ष्ट्या कुटुंबातील प्रत्येक सदस्याशी नाते जोडाल. कोणतीही गोष्ट शांतपणे ग्रहण कराल, अनावश्यक चांचल्य दाखवणार नाही. वाणीमध्ये गोडवा असेल आणि लोक आपल्या बोलण्याने प्रभावित होतील तसेच आपले विचार स्पष्टपणे मांडता येतात. विभिन्न चवीचे पदार्थ आपल्याला आवडतात. धर्मावर श्रद्धा असेल आणि कुटुंबासोबत धार्मिक कार्य करत राहाल. एखाद्या धनाढ्य व्यक्तीच्या मदतीने धनार्जन कराल आणि सज्जन व महात्म्यांचा आदर कराल. संधी मिळेल तेव्हा परोपकार कराल.

पराक्रम, संबंधी, प्रकाशन, लाहान–प्रवासं

आपल्या जन्मसमयी तृतीय भावामध्ये गुरूची मीन राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपण मानसिकघ्ष्ट्या स्वस्थ असाल, तीव्र स्मरणशक्ती असल्याने गूढातिगूढ विषय लक्षात राहतील. दर्शनशास्त्र, विज्ञानामध्ये उच्च शिक्षण किंवा संशोधनामध्ये रस असेल आणि या क्षेत्रामध्ये प्रयत्नाने यश प्राप्त कराल. भाऊ–बहीण असेल आणि आयुष्यभर त्यांचे सुख व सहयोग मिळेल. भावंडे तुमच्या आज्ञेत राहणारी, कर्तव्यपरायण व सहानुभूती दर्शवणारी असतील आणि उन्नतीच्या मार्गात एकमेकांना सहाय्य कराल.

कधी कधी वैचारिक मतभेद होऊ शकतात पण कौटुंबिक शांती व सुखासाठी एकमेकांच्या उण्यादुण्याकडे दुर्लक्ष कराल. नेतृत्वगुण असल्याने समाजामध्ये मानसन्मान व कीती मिळेल. कौटुंबिक स्तर वाढवण्याचा प्रयत्न कराल. संघटनकौशल्य असेल आणि एखाद्या बाबतीत लाभ होऊ शकते असे दिसल्यावर लगेच ते काम करण्यास तत्परता दाखवाल. भौतिक सुखासाठी कोणत्याही वस्तूचा सदुपयोग करण्याची क्षमता असेल. संचार साधने, वाहनादि सुख असेल आणि त्याचा आनंदाने उपभोग घ्याल. संगीतामध्ये रूची असेल आणि एखाद्या कलेमध्ये देखील फावल्या वेळेत झोकून द्याल. प्रवासातून लाभ होतील. धार्मिक, माहितीपर लेख किंवा चांगल्या पुस्तकांचे चाहते असाल. धनवान, पुण्यात्मा, अतिथीपरायण व सर्वजनप्रिय होऊन आनंदाने जीवन जगाल.

आई, वाहन, भौतिक ऐश्वर्य, भूमि आणि शिक्षा

आपल्या जन्मसमयी चतुर्थ भावामध्ये मंगळाची मेष राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपली आई बुद्धिमान व स्वच्छंद वृत्तीची असेल. स्वाभिमानी असेल आणि आवाज मोठा असेल, पण मनामध्ये कोमलता असेल आणि कुटुंबाचे प्रेमाने पालनपोषण करेल. समोर कुणाची स्तुती करणार नाही. आकर्षक व्यक्ती असेल आणि आपल्या कामात नेहमी दंग असेल. स्वभावाने तेजस्वी असेल, पण प्रेम व कृपाळू भावाबरोबरच संतुष्ट व प्रसन्न असेल.

आपले घर एखाद्या समृद्ध क्षेत्रामध्ये असेल आणि आधुनिक सेवासुविधा घरात असतील. भौतिक उपकरणांनी युक्त असेल. घराच्या सौंदर्याच्या विषयात जागरूक असाल आणि घराला चांगल्याप्रकारे सुंदर व आकर्षक बनवण्यासाठी यत्नशील राहाल.

वाहनसुख प्राप्त होईल. वाहन उत्तम असेल. घराला अंगण किंवा बाग असेल. पैतृक संपत्तीची प्राप्ती होईल आणि त्यातून लाभसुद्धा होईल. शिक्षण प्राप्त करण्यासाठी प्रयत्नशील राहाल. उच्च शिक्षण व स्पर्धात्मक परिक्षेत यश प्राप्त होईल. पण उच्च शिक्षणाच्या शेवटच्या वर्षात एखादी समस्या किंवा त्रास होऊ शकतो. गुप्त विद्या व धन प्राप्तीचे योग बनतात. आध्यात्म, ज्योतिष, तंत्र–मंत्रामध्ये रस असेल. याव्यतिरिक्त वाहन, स्त्री, खाद्यपेय, सुगंधित द्रव्ये इत्यादिनी युक्त स्वपराक्रमाने आयुष्य घालवाल.

बुद्धि, सन्तान आणि लग्न सम्बन्ध

आपल्या जन्मसमयी पंचम भावामध्ये शुक्राची वृषभ राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपण एक बुद्धिमान व्यक्ती असाल आणि उच्च शिक्षण घेण्यासाठी प्रयत्नरत असाल. त्याचबरोबर वैदिक शास्त्रे तसेच ज्योतिषशास्त्रामध्ये रस असेल आणि तत्संबंधित ज्ञान प्राप्त करण्याचा प्रयत्न कराल. आपला असाधारण आत्मविश्वास आपल्या यशाचे रहस्य आहे आणि सर्व प्रापंचिक कर्तव्ये निष्ठेने पूर्ण कराल.

आपल्या जोडीदाराप्रति अत्यंत भावुक असाल. वादविवाद करायला आवडत नाही, तसेच शंकेलाही वाव ठेवत नाही. आपल्या पत्नीसंबंधित सर्व सामाजिक व आर्थिक गरजा प्रेमाने पूर्ण कराल. आधुनिक भौतिक साधनांचे जबरदस्त आकर्षण असेल आणि आपल्या घरात ही साधने आणण्याचा नेहमी प्रयत्न कराल. आपल्या पत्नीला गृहलक्ष्मी असे मानणारे तुम्ही आहात आणि तिने मुलांचा सांभाळ तसेच गृहकृत्ये उत्तमपणे करावीत असे वाटते. मुलांच्या पालनपोषण तसेच शिक्षणाच्या बाबतीत कोणतीही कसूर तुम्ही सोडणार नाहीत, परंतु मुलांना याची जाणीव नंतर होईल. सुरूवातीला तुम्ही त्यांची उपेक्षा करत आहात अशी समजूत असेल. मुले सौभाग्यशाली असतील आणि धर्मावर श्रद्धा ठेवून मुले समाजात उचित सन्मान प्राप्त करतील.

रोग, शत्रु, सेवक आणि मामा

आपल्या जन्मसमयी षष्ठ भावामध्ये बुधाची मिथुन राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपल्याला नातेवाईकांशी तसेच घनिष्ठ मित्रांच्या विरोधाला तोंड द्यावे लागेल. आपले शत्रू उच्चाधिकारी तसेच समाजातील अनेक क्षेत्रांमध्ये आपले शत्रू किंवा विरोधक असतील. त्यांना आपली प्रसिद्धी आवडत नसल्याने तुमच्या वैभवाचा ते मत्सर करतील. समाजामध्ये आपला अपमान तसेच आर्थिक हानी करण्याचा नेहमी प्रयत्न करतील. परंतु आपण एक बुद्धिमान, चतुर, प्रतिभाशाली तसेच प्रामाणिक व्यक्ती असाल आणि आपल्या कर्तृत्वाने शत्रू तसेच विरोधकांना पराभूत करण्यास समर्थ असाल

आपल्याला नेहमी दिवाणी तसेच फौजदारी खटल्यांना तोंड द्यावे लागेल. अशाप्रसंगी हुशारीने काम करावे, अन्यथा आर्थिक हानी होण्याचा संभव आहे. जरी इतरांना महत्व न देता आपल्याच पद्धतीने कोणतेही काम करण्याची सवय असली तरी शेवटी आपल्याला यश मिळेल व त्यातून कीर्तीही मिळेल. सेवक चांगले असतील आणि आपली प्रामाणिकपणे सेवा करतील, त्याचबरोबर आपले आज्ञेत असतील, पण कधी कधी ते तुमच्या गुप्त गोष्टी लोकांना सांगून तुमच्या प्रतिष्ठेला बाधा आणतील. म्हणून नोकरांपासून व्यक्तिगत मतभेद लपवून ठेवा. नोकरांपासून किंमती वस्तूसुद्धा दूर ठेवाव्यात. अनेकदा भौतिक उपकरणे तसेच सुखासाठी अनावश्यक खर्च केल्याने कर्ज घेण्याची पाळी येईल. मामा–मामी तसेच इतर नातेवाईकांशी संबंध चांगले असतील. मामी क्रोधी स्वभावाची असेल तसेच बहुतांशी आजारी असेल. परंतु मामापासून आपल्याला पूर्ण सुख व सहयोग प्राप्त होईल. वृद्धावस्थेत चिंता किंवा रक्तदाबासंबंधी त्रास होऊ शकतो, त्यामुळे तारूण्यावस्थेत खाण्या–पिण्यावर नियंत्रण ठेवावे.

दम्पति, विवाह आणि साझेदार

आपल्या जन्मसमयी सप्तम भावामध्ये चंद्राची कर्क राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपली पत्नी सुंदर, आकर्षक व शांत वृत्तीची असेल. तुमचा तसेच तुमच्या कुटुंबावर तिचा जिव्हाळा असेल आणि कुटुंबाची सेवा करण्यास ती तत्पर असेल, त्यामुळे तुमचे दाम्पत्य जीवन सुख व आनंदाने व्यतित होईल. प्रेमसंबंधामध्ये अत्यधिक सावध आणि काळजीपूर्वक निर्णय घेण्याकडे कल असल्याने जीवनसाथी निवडण्यास खूप वेळ लागेल. आपली प्रवृत्ती शृंगारिक नसली तरी आपल्या पत्नीची पूर्ण काळजी घ्याल आणि तिला सुखसुविधा देण्याकडे नेहमी लक्ष द्याल. त्याचबरोबर स्वतःकडून कोणताही त्रास देणार नाही.

पैशाचा विनियोग विचारपूर्वक कराल आणि कौटुंबिक शांती व समृद्धीसाठी यथोचित खर्च वेळोवेळी करत राहाल. आपल्या कुटुंब व पत्नीशी पूर्णतः एकरूप होऊन त्यांच्या सल्ल्यानुसारच अधिकांश कामे संपन्न कराल. त्याचबरोबर यामुळे आपल्या आत्मविश्वास वाढेल, पण कुटुंबाला अधिक स्वातंत्र्य देण्याकडे कल असणार नाही. वृश्चिक, कर्क आणि मीन लग्नामध्ये जन्मलेल्या जातकाशी विवाह किंवा व्यापारात भागीदारी यशस्वी सिद्ध होऊ शकते. वंशपरंपरागत व्यवसाय, सिंचाई विभाग किंवा बॅंक इत्यादि क्षेत्रात नोकरी, शिक्षण विभाग किंवा कंत्राटदारी व्यवसाय आपल्यासाठी उपजीविकेची उत्तम साधने होऊ शकतात. जर यातील कोणताही व्यवसाय निवडाल तर जीवनात प्रगती, यश व धनवैभव प्राप्त होऊ शकते.

हुण्डा, बीमा आयुष्य आणि आपघात

आपल्या जन्मसमयी अष्टम भावामध्ये सूर्याची सिंह राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपण आध्यात्म किंवा ज्योतिषादि विषयांमध्ये श्रद्धा ठेवाल आणि याचे ज्ञान प्राप्त करण्याचा प्रयत्न कराल. त्याचबरोबर या विषयांमध्ये संशोधन करण्याचाही प्रयत्न कराल. त्यातून विशेष कीर्ती व यश प्राप्त होईल तसेच आपला अधिकांश काळ यामध्येच जाईल. तुम्याकडे तुमची तसेच पैतृक संपत्तीही असेल. त्यामुळे आपल्याकडे मोठी जमीन तसेच अनेक घरे असू शकतात. त्याचबरोबर जमीन मालमत्तेसंबंधी कामातून भरपूर लाभसुद्धा होऊ शकतो. अशाप्रकारे चल–अचल संपत्तीचे मालक होऊन समाजामध्ये आदराचे स्थान प्राप्त कराल.

विवाहाच्या वेळी जरी स्वतः काही हुंडा किंवा तत्सम स्वरूपात मागितले नाही तरी सासरकडील मंडळी अत्यंत प्रभावित होऊन तुम्हाला उपहारस्वरूप आभूषणादि बहुमूल्य वस्तू भेट देतील. या भेटी आपल्या दाम्पत्य जीवनासाठी लाभदायक ठरतील. विम्यातून सुद्धा वेळोवेळी लाभ होत जाईल. त्यामुळे वीमा करावा. हा वीमा आपल्यासाठी सुरक्षित गुंतवणूक ठरेल आणि त्यातून उचित लाभ होईल. आयुष्य उत्तम राहील आणि सुखाने जीवन जगाल.

सौभाग्य, प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा आणि लाम–प्रवास

आपल्या जन्मसमयी नवम भावामध्ये बुधाची कन्या राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपण एक आदर्श व दयाळू वृत्तीची व्यक्ती असाल आणि कुळपरंपरांचे पालन कराल. त्याचबरोबर परमेश्वरावर पूर्ण श्रद्धा असेल. धार्मिक प्रवृत्तीचे पालन कराल आणि यासाठीच मंदिर किंवा तीर्थस्थानांना भेटी द्याल. उपवासदेखील वेळोवेळी ठेवाल. धर्मगुरू तसेच महात्म्यांचा हार्दिक सत्कार कराल आणि धार्मिक ग्रंथांचेही अध्ययन कराल.

अंतप्रज्ञा शक्ती प्रबळ असल्याने भविष्यवाणीदेखील करू शकाल. अध्यात्मिक उद्देशाने प्रेरित होऊन समूहाला संबोधित करण्यामध्ये आपल्याला आनंद मिळेल. भजन, कीर्तन किंवा तत्संबंधित कामेसुद्धा कराल. व्यक्तिगत कार्यसिद्धी तसेच अपेक्षित लाभासाठी दूरचे प्रवास कराल आणि आपल्या धर्मग्रंथांचे अध्ययन कराल. प्रवृत्ती उदार असल्याने दीनदुबळ्यांची सेवा कराल व दानदेखील द्याल. पण ही सर्व कामे निरपेक्ष भावनेने तन–मन अर्पून कराल. नातवंडांचे सुख लाभेल आणि त्यांच्याकडून पूर्ण सहयोग व सुख मिळेल. नित्यपूजा कराल आणि मध्यमायुमध्ये मानसिक संतुष्ट व्हाल. पूजा किंवा ध्यानातून आपल्याला शांती व प्रसन्नता लाभेल.

पिता, व्यवसाय आणि सामाजिक स्थिति

आपल्या जन्मसमयी दशम भावामध्ये शुक्राची तूळ राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपल्या वडिलांचे आरोग्य सामान्यपणे चांगले राहील व मानसिकघष्ट्यासुद्धा ते प्रसन्न व संतुष्ट असतील. तसेच त्यांचा उत्तम राहणीमान, खाणे–पिणे, संगीत, कलांमध्ये रस असेल. अंतप्रज्ञा शक्ती त्यांच्याकडे असेल कल्पनाशीलसुद्धा असतील. समाजाकडे त्यांचा सहानुभूतीपूर्ण घष्टिकोन असल्याने समाजामध्ये आदर असेल.

तुम्च्यासाठी अध्यापन, इंजीनिअरिंग, वैज्ञानिक उपकरणे, भूमि, खनिज इत्यादि व्यवसाय उत्तम आहेत. त्याचबरोबर धार्मिक संस्था प्रमुख किंवा नोकरी मधूनही अपेक्षित प्रगती व यश मिळेल. तुम्च्याकडे शक्ती व अधिकार नेहमी असतील. सरकार किंवा सरकारी उद्योगांमधून आपल्याला आधुनिक सुखसुविधा मिळतील व लाभ होईल. कोर्टकचेरीमध्ये रस नसेल आणि अशा प्रसंग क्वचितच येतील पण आले तर शक्यतो उपेक्षा करावी. तुमचे तुम्च्या वरिष्ठ व उच्चाधिकार यांशी संबंध विशेष चांगले असणार नाहीत, त्यामुळे आपले काम प्रामाणिक व नियमपूर्वक करावे. आपण एक चांगले लेखक, संगीतज्ञ किंवा वास्तुकलाचे ज्ञातेसुद्धा असू शकता. त्यामुळे विचारपूर्वक आपले कार्यक्षेत्र निवडावे. आपण एक व्यापारी, धार्मिक कार्याशी संलग्न, परोपकारी व भाग्यशाली व्यक्ती म्हणून सन्मानाने जीवन जगाल.

लाभ, मित्र, समाज, मोठा भाऊ आणि आकांक्षा

आपल्या जन्मसमयी एकादश भावामध्ये मंगळाची वृश्चिक राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपली प्रवृत्ती कोणत्याही क्षेत्रात यश मिळत नाही तोपर्यंत संघर्ष करण्याची असेल. आपल्या या संघर्षशील वृत्ती व पराक्रमाने आयुष्यात बहुतांशी इच्छा व आकांक्षा पूर्ण करण्यास समर्थ असाल. स्वपराक्रम व योग्यतेतून जीवनामध्ये प्रगती कराल आणि यात इतरांचा सहयोग कमी असेल.

आर्थिक क्षेत्रात प्रगती करण्यात भाग्यशाली असाल. आपण हॉटेल व्यवसाय, सोने, सोनारी किंवा भावांकडून लाभ प्राप्त करू शकाल. यापासून आपल्या आयस्रोतांमध्ये वृद्धी होईल आणि भरपूर लाभ व धन प्राप्त होईल. मोठ्या भावाकडून आपल्याला पूर्ण प्रेम मिळेल आणि वेळोवेळी आपल्याला आर्थिक व इतर मदत करेल.

तुम्ही पराक्रमी, सक्रीय, बुद्धिमान व शिक्षित लोकांना मित्र करणे पसंत कराल. आपली वृत्ती जरी स्वच्छंद असतील तरी इतरांना घेऊन काम करणे आवडते. सामाजिक स्तरसुद्धा उच्च असेल आणि आपल्या क्षेत्र किंवा समाजामध्ये एक प्रतिष्ठित व्यक्ती असाल. इतरांची सेवा व परोपकार करताना तन, मन, धनाने आपले योगदान द्याल. तरीही व्यापारी वर्गाबरोबर आपले विशेष संबंध राहतील.

घाटे, बन्धन, कर्जे, आवास परिवर्तन आणि मोक्ष

आपल्या जन्मसमयी द्वादश भावामध्ये गुरूची धनु राशी उदित होती. याचा प्रभावामुळे आपल्या जीवनामध्ये नाव, मान, सन्मान, कीर्ती व धन प्राप्त करण्यास नेहमी उत्सुक असाल. यासाठी कितीही संघर्ष करावा लागला तरी नेहमी आपल्या उद्देश प्राप्तीसाठी प्रयत्नरत राहाल आणि एकही संधी हातातून सोडणार नाही. पैशाचे महत्व ओळखत असल्याने त्याचा अत्यंत सावध व बुद्धिमत्तेने वापर कराल. पैशाच्या बाबतीत कोणताही धोका पत्करणार नाही. प्राप्त पैशाचा भविष्यामध्ये कसा उपयोग होऊ शकतो, आपल्याला चांगले माहीत असल्याने याचा उपयोग एखाद्या सत्कार्यात किंवा मोठ्या कंपनीत गुंतवणुकीसाठी कराल. त्याचबरोबर मालमत्तेच्या खरेदी–विक्रीसाठी सुद्धा कराल. प्रवृत्ती धार्मिक असेल. धार्मिक कार्य, दान, गरिबांच्या सेवेसाठी वेळोवेळी खर्च कराल. मध्यमायुमध्ये धनवान बनाल. दानशूर व दयाळू वृत्तीमुळे प्रसिद्धि मिळेल. घराच्या सजावट व भौतिक उपकरणांसाठीही खर्च कराल.

प्रवास नेहमी कराल आणि यात खर्चाबरोबरच लाभ व सन्मानसुद्धा मिळेल. व्यापारी किंवा इतर कार्यासाठी विदेश प्रवास करून लाभ मिळवाल.

फलादेश - 2026

ह्यावर्षी गुरु गोचरीने तुमच्या पत्रिकेत दुसऱ्या भावात आहे. म्हणून त्याच्या शुभ प्रभावाने तुमची आर्थिक स्थिती सृदृढ़ असेळ व मिळकतीची साधने वाढून भरपूर प्रमाणात धन व ळाभ मिळवाळा. ह्या काळात कौटुम्बिक सुख–शांती असेळ व पुत्रप्राप्तीचा योग संभवतो. पण कधी–कधी खर्च वाढल्याने मन उद्वीग्न असेळ. ह्या काळात समाजात तुमची प्रतिष्ठा वाढेळ व समाजत एक प्रभाववी व्यक्ती म्हणून मानाचे स्थान मिळेळ. धार्मिक कार्यांची आवड राहीळ. त्याचबरोबर वाणीतीळ ओजस्विता वाढून ळोक तुमच्या बोळण्याकडे ळक्ष देतीळ. व्यापारात चांगळे योग जुळून येतीळ. त्याचप्रमाणे गोचरीची व दशेची अनुकूळ फळे मिळाल्याने हे वर्ष तुमच्याकरता चांगळे व भाग्याचे संभवते.

यंदा शनी गोचरीने दहाव्या भावात आहे. त्यामुळे हा काळ तुमच्यासाठी चांगळा आहे. ह्या काळात व्यापारात उन्नती होईळ. राजकीयदृष्टया देखीळ हा काळ महत्वाचा आहे. तुम्ही एरवाद्दा क्षेत्रात अधिकाराचे पद प्राप्त कराळ. नोकरी किंवा अन्य क्षेत्रात उन्नती होईळ. एरवाद्या महत्वाच्या पदावर नियुक्ती होण्याची शक्यता आहे. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे असेळ. ह्या काळात इच्छित धनळाभ संभवतो. त्याचबरोबर अन्य गोचर व दशाफळ शुभ असल्याने हे वर्ष चांगळे व उन्नतीकारक असेळ.

यंदा गोचरीने राहू नवमात व केतू तृतीयात असेळ. त्यामुळे हे वर्ष सामान्य असेळ. ह्या काळात धर्माविषयी श्रद्धा वोटळ. महत्वाच्या कार्यात सफळता मिळेळ. भाग्य प्रबळ असेळ. शरीरप्रकृती चांगळी असेळ पण रागाच्या प्रबळतेमुळे मानसिक त्रास संभवतो. केतूच्या प्रभावाने तुमच्या पराक्रमात वाढ होईळ व सर्वजण तुमचा प्रभाव स्वीकारतीळ. त्याचबरोबर समाजात प्रतिष्ठा वाढेळ. ह्या काळात तुमची आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ. भरपूर धनप्राप्ती संभवते. व्यापार व कार्यक्षेत्रात उन्नती होईळ. त्याचबरोबर अन्य गोचर व दशा अनुकूळ असेळ. त्यामुळे यंदा शुभ फळे अधिक प्रमाणात मिळतीळ.

ह्या वर्ष शनि ची महादशा मधीं बुध चा अंतर रहणार। बुध सप्तं भाव मधीं कर्क राशि मधीं स्थित आहात पण शनि प्रथम भाव मधीं मकर राशि मधीं स्थित आहे।

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि अनुकूल आहे अतः कार्य मधे चि होणारी तसेच सफळता प्राप्त होणारी. कुटुम्ब सुख शान्ती आणि परस्पर सहयोग रहणार कुटुम्ब मधे कोणी मांगळिक कार्य सम्पन्न होउ सकतो. कुटुम्ब मधीं आवश्यकतानुसार खर्चे करणारे पण आर्थिक त्रास नाय होणार कार्य क्षेत्र मधे उन्नती प्राप्त होणारी वेरोजगारांना रोजगार प्राप्त होणार समाजातीळ यश सम्मान पण भेंटणार. कार्य क्षेत्र मधे उन्नती होणारी अतः प्रयन्त क न समय सदुपयोग करावे.

फलादेश - 2027

गोचरीने यंदा गुरु तृतीय भावात असेळ. म्हणून त्याच्या प्रभावाने तुम्ही दूर वा जवळचे प्रवास कराळ व त्यापासून कमीअधिक प्रमाणात ळाभ होईळ. साहित्य व दर्शनशास्त्राविषयी आवड ह्या काळात निर्माण होऊ शकते. ह्या वर्षी जुन्या मित्रांकडून ळाभ होईळ व सहकार्य मिळेळ. त्याचप्रमाणे नवीन मित्रांची ओळख होईळ ज्यामुळे भविष्यात ळाभ संभवतो. शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्याच्या दृष्टीने हे वर्ष मध्यम स्वरूपाचे असेळ व संकुचितपणा सोडून तुम्ही विशाळतेचे प्रदर्शन कराळ. फळतः समाजात मान–सन्मान वाढेळ. पण अन्य गोचर ह्या काळात चांगळे नाही तरी दशाफळ चांगळे असल्यानी शुभ फळांमध्ये कधी–कधी कमतरता दिसेळ. पण अतिरिक्त परिश्रम व संघर्षानी तुम्ही चांगळी फळे मिळवू शकता.

गोचरीने शनी यंदा अकराव्या भावात आहे. त्यामुळे हे वर्ष महत्वाचे ठरेळ. ह्या काळात तुम्ही व्यापारात वा कार्यक्षेत्रात उन्नती कराळ व भरपूर प्रमाणात ळाभ होईळ. समाजात कीर्ति वाढेळ व ळोक उचित आदर प्रदान करतीळ. राजकारणात किंवा नोकरीत पदप्राप्ती संभवते. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे असेळ भरपूर धनप्राप्ती संभवते. यंदा स्वतःच्या व संतातीच्या प्रकृतीकडे ळक्ष द्यावे. त्याचबरोबर अन्य गोचर अशुभ असळे तरी दशा शुभफळ देईळ. शुभ फळांमध्ये न्यूनता जाणवेळ व लक्ष्यप्राप्ती करता संघर्ष करावा ळागेळ. परंतु सामान्यपेण हा काळ चांगळा असेळ.

गोचरीने यंदा राहू अष्टमात व केतू द्वितीयात आहे. त्याच्या प्रभावाने तुमची प्रकृती मध्यम स्वरूपाची असेळ. मानसिकदृष्टया त्रास संभवतो. कौटुंबिक सुख–शांती व समृद्धी ह्या काळान मध्यम स्वरूपाची असेळ तसेच परस्परात मतभेद व थोडया काळाकरता तणावाची शक्यता आहे. आर्थिक स्थिती सामान्य असेळ व आवश्यक प्रमाणात धनप्राप्ती होईळ. त्याचबरोबर खर्च ही अधिक असेळ. ह्या वर्षी अचानक ळाभ होण्याची शक्यता आहे. ळॉटरी, जुगार किंवा सट्यामधून ळाभ होण्याची शक्यता आहे. व्यापार व कार्यक्षेत्राकरता वर्ष अनुकूळ आहे. कष्ट व पराक्रमाने सफळता मिळेळ.त्याचबरोबर अन्य गोचर शुभ पण दशा मध्यम असेळ. त्यामुळे दैनंदिन कार्यात अडथळे येतीळ. धनप्राप्तीत विळंब होण्याची शक्यता आहे. म्हणून शुभ फळांच्या प्राप्तीसाठी राहू केतूची नियमित पूजा, जप व दानादि कार्य करावे.

शनि ची महादशा मधीं बुध चा अंतर 03/03/2027 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर केतु चा अंतर प्रारंभ होणार। बुध सप्तं भाव मधीं कर्क राशि मधी स्थित आहे। पण केतु षष्ठ भाव मधीं मिथुन राशि मधी स्थित आहात।

हा समय तुमचा साठी अशुभ आणि प्रतिकूल आहे अतः महत्वपूर्ण कार्य सफळ नाय होणार व्यापार मधे जास्ती उन्नती नाय होणारी. नोकरी मधे उन्नती साठी उशीर होणार मोठे अधिकारयां पासून मधुर संवन्ध नाय रहणार समाजातीळ सम्मान प्रतिष्ठा मधे कमी रहणारी. कुटुम्ब सुख शान्ती पण जास्ती नाय रहणारी आणि परस्पर मतभेद रहणार अतः असे समय वर धैर्य पासून समय व्यतीत करावे.

हा समय तुमचा साठी विशेष शुभ आणि अनुकूल नाय रहणार अतः ह्या वेळी अधूरे कार्य पूर्ण नाय होणार तसेच इच्छित परिणाम नाय भेंटणार. आर्थिक स्थिति चांगली नाय रहणारी तसेच मिळकत कमी होणारी, कधीं–मधीं आर्थिक त्रास पण होणार असा समय व्यापार साठी अनुकूळ नाय रहणार. कुटुम्ब सुख शान्ती आणि समृद्धी तसेच सहयोग नाय भेंटणार, मित्र बरोबर वांछित लाभ नाय भेंटणार. असे समय वर नवीन कार्य साझेदारांचा कार्य पासून सावध रहाय ला पाहिजे. नौकरी मधे पदोन्नति साठी उशीर होऊ सकतो आणि अधिकारयां बरोबर मतभेद उत्पन्न होणार. अतः धैर्य बरोवर समय व्यतीत करावे.

फलादेश - 2028

गोचरीने यंदा गुरु तृतीय भावात असेळ. म्हणून त्याच्या प्रभावाने तुम्ही दूर वा जवळचे प्रवास कराळ व त्यापासून कमीअधिक प्रमाणात ळाभ होईळ. साहित्य व दर्शनशास्त्राविषयी आवड ह्या काळात निर्माण होऊ शकते. ह्या वर्षी जुन्या मित्रांकडून ळाभ होईळ व सहकार्य मिळेळ. त्याचप्रमाणे नवीन मित्रांची ओळख होईळ ज्यामुळे भविष्यात ळाभ संभवतो. शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्याच्या दृष्टीने हे वर्ष मध्यम स्वरूपाचे असेळ व संकुचितपणा सोडून तुम्ही विशाळतेचे प्रदर्शन कराळ. फळतः समाजात मान–सन्मान वाढेळ. पण अन्य गोचर ह्या काळात चांगळे नाही तरी दशाफळ चांगळे असल्यानी शुभ फळांमध्ये कधी–कधी कमतरता दिसेळ. पण अतिरिक्त परिश्रम व संघर्षानी तुम्ही चांगळी फळे मिळवू शकता.

गोचरीने शनी यंदा अकराव्या भावात आहे. त्यामुळे हे वर्ष महत्वाचे ठरेळ. ह्या काळात तुम्ही व्यापारात वा कार्यक्षेत्रात उन्नती कराळ व भरपूर प्रमाणात ळाभ होईळ. समाजात कीर्ति वाढेळ व ळोक उचित आदर प्रदान करतीळ. राजकारणात किंवा नोकरीत पदप्राप्ती संभवते. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे असेळ भरपूर धनप्राप्ती संभवते. यंदा स्वतःच्या व संतातीच्या प्रकृतीकडे ळक्ष द्यावे. त्याचबरोबर अन्य गोचर अशुभ असळे तरी दशा शुभफळ देईळ. शुभ फळांमध्ये न्यूनता जाणवेळ व लक्ष्यप्राप्ती करता संघर्ष करावा ळागेळ. परंतु सामान्यपेण हा काळ चांगळा असेळ.

यंदा गोचरीने राहू सप्तमात व केतू ळग्नात असेळ. त्यामुळे हे वर्श तुमच्यासाठी मध्यम स्वरूपाचे असेळ. ह्या काळात तुमची शारीरिक व मानसिक प्रकृती मध्यम स्वरूपाची असेळ. कधीकाळी मानसिक अशांती अनुभवाळ. महत्वाची कार्ये अत्यधिक परिश्रमाने सफळ होतीळ. त्याचबरोबर कार्यक्षेत्रात अडचणी येतीळ पण त्यावर समर्थपणे मात कराळ. ह्या काळात पत्नीची प्रकृती विशेष चांगळी रहाणार नाही. त्याचबरोबर परस्पर संबंध पण मध्यम असतीळ. व्यापारात किंवा कार्यक्षेत्रात भागिदान्यांकडून किंवा सहाकार्यांकडून त्रास संभवतो. त्यामुळे सतर्क असावे. आर्थिक दृष्टया ह्या काळात अत्यधिक परिश्रमानंतरच धनप्राप्ती संभवते. त्याचबरोबर खर्चही अधिक होईळ. फळतः हे वर्ष सामान्य असेळ.त्याचबरोबर अन्य गोचर शुभ व दशा मध्यम असेळ. त्यामुळे महत्वाच्या कार्यात परिश्रमाने सफळता मिळेळ. अन्य अडचणी पण उद्भवतीळ. म्हणून शुभ फळांची वृद्धी व अशुभ फळे कमी करण्यारसाठी नियमितपणे राहू–केतूची पूजा, जप, दानादि कार्य करावे.

शनि ची महादशा मधीं केतु चा अंतर 11/04/2028 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर शुक्र चा अंतर प्रारंभ होणार। केतु षष्ठ भाव मधीं मिथुन राशि मधी स्थित आहे। पण शुक्र सप्तं भाव मधीं कर्क राशि मधी स्थित आहात।

हा समय तुमचा साठी विशेष शुभ आणि अनुकूल नाय रहणार अतः ह्या वेळी अधूरे कार्य पूर्ण नाय होणार तसेच इच्छित परिणाम नाय भेंटणार. आर्थिक स्थिति चांगली नाय रहणारी तसेच मिळकत कमी होणारी, कधीं–मधीं आर्थिक त्रास पण होणार असा समय व्यापार साठी

अनुकूल नाय रहणार. कुटुम्ब सुख शान्ती आणि समृद्धी तसेच सहयोग नाय भेंटणार, मित्र बरोबर वांछित लाभ नाय भेंटणार. असे समय वर नवीन कार्य साझेदारांचा कार्य पासून सावध रहाय ला पाहिजे. नौकरी मधे पदोन्नति साठी उशीर होऊ सकतो आणि अधिकारयां बरोबर मतभेद उत्पन्न होणार. अतः धैर्य बरोवर समय व्यतीत करावे.

हा समय तुमचा साठी विशेष शुभ आणि अनुकूल नाय रहणार, अतः ह्या वेळी सांसारिक अडचणे उत्पन्न होणारी, आर्थिक स्थिति विशेष चांगली नाय रहणारी तसेच कधीं–मधीं आर्थिक त्रास पण होणारी. कुटुम्ब अशान्त आणि परस्पर मतभेद रहणार, ब्यापार मधे सफळता नाय भेंटणारी तसेच उन्नति मार्ग मधे अडचणे उत्पन्न होउ सकतो. नोकरी मधे पदोन्नति साठी उशीर होणार आणि अधिकारयां बरोबर मतभेद उत्पन्न होऊ सकतो. मित्र आणि सम्बन्धी विशेष सहयोग नाय प्रदान करणारे, तसेच समाजातीळ वांछित सफळता नाय भेंटणारी. शत्रु पासून कधीं–मधीं त्रास उत्पन्न होऊ सकतो आणि स्वास्थ्य सामान्य रहणार काही तरी अनावश्यक प्रवास होणारी. अतः असे सयम वर संयम आणि धैर्य बरोबर कार्य करावे.

फलादेश - 2029

गोचरीने गुरु यंदा चतुर्थ भावात आहे. त्यामुळे हे वर्ष सामान्यतः चांगळे असेळ. ह्या काळात शारीरिकदृष्टया तुम्ही सुखी असाळ. कौटुम्बिक सुखात वाढ होईळ. व सर्व ळोक मिळून मिसळून वागतीळ. ह्या वर्षी तुमच्या योजना पूर्ण होतीळ. व्यापार व कार्यक्षेत्रातीळ उन्नतीकरता हे वर्ष शुभ व अनुकूळ असेळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष मध्यम स्वरूपाचे असेळ व आवश्यक प्रमाणात धनप्राप्ती होईळ. जवळचे ळोक प्रशंसा करतीळ व प्रतिष्ठा वाढेळ. ह्या वर्षी माळमत्ता व घराच्या दृष्टीने सुख व ळाभ संभवतो. त्याचबरोबर आई व सासवरच्या ळोकांकडून सहकार्य व ळाभ होऊ शकतो. गोचरफळ ह्या काळात अशुभ असळे तरी दशाफळ शुभ असेळ. म्हणून उपर्युक्त फळांमध्ये कमतरता राहीळ. पण परिश्रमाने त्यात तुम्ही सफळता मिळवू शकता.

गोचरीने शनी यंदा अकराव्या भावात आहे. त्यामुळे हे वर्ष महत्वाचे ठरेळ. ह्या काळात तुम्ही व्यापारात वा कार्यक्षेत्रात उन्नती कराळ व भरपूर प्रमाणात ळाभ होईळ. समाजात कीर्ति वाढेळ व ळोक उचित आदर प्रदान करतीळ. राजकारणात किंवा नोकरीत पदप्राप्ती संभवते. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे असेळ भरपूर धनप्राप्ती संभवते. यंदा स्वतःच्या व संतातीच्या प्रकृतीकडे ळक्ष द्यावे. त्याचबरोबर अन्य गोचर अशुभ असळे तरी दशा शुभफळ देईळ. शुभ फळांमध्ये न्यूनता जाणवेळ व लक्ष्यप्राप्ती करता संघर्ष करावा ळागेळ. परंतु सामान्यपेण हा काळ चांगळा असेळ.

यंदा गोचरीने राहू सप्तमात व केतू ळग्नात असेळ. त्यामुळे हे वर्श तुमच्यासाठी मध्यम स्वरूपाचे असेळ. ह्या काळात तुमची शारीरिक व मानसिक प्रकृती मध्यम स्वरूपाची असेळ. कधीकाळी मानसिक अशांती अनुभवाळ. महत्वाची कार्ये अत्यधिक परिश्रमाने सफळ होतीळ. त्याचबरोबर कार्यक्षेत्रात अडचणी येतीळ पण त्यावर समर्थपणे मात कराळ. ह्या काळात पत्नीची प्रकृती विशेष चांगळी रहाणार नाही. त्याचबरोबर परस्पर संबंध पण मध्यम असतीळ. व्यापारात किंवा कार्यक्षेत्रात भागिदान्यांकडून किंवा सहाकार्यांकडून त्रास संभवतो. त्यामुळे सतर्क असावे. आर्थिक दृष्टया ह्या काळात अत्यधिक परिश्रमानंतरच धनप्राप्ती संभवते. त्याचबरोबर खर्चही अधिक होईळ. फळतः हे वर्ष सामान्य असेळ.त्याचबरोबर अन्य गोचर शुभ व दशा मध्यम असेळ. त्यामुळे महत्वाच्या कार्यात परिश्रमाने सफळता मिळेळ. अन्य अडचणी पण उद्भवतीळ. म्हणून शुभ फळांची वृद्धी व अशुभ फळे कमी करण्यारसाठी नियमितपणे राहू–केतूची पूजा, जप, दानादि कार्य करावे.

ह्या वर्ष शनि ची महादशा मधीं शुक्र चा अंतर रहणार। शुक्र सप्तं भाव मधीं कर्क राशि मधीं स्थित आहात पण शनि प्रथम भाव मधीं मकर राशि मधीं स्थित आहे।

हा समय तुमचा साठी अनुकूल रहणार अतः जूने कार्य पूर्ण होणारे तसेच चांगुल वस्तु वर आकर्षित होणारे. घर गुती आकर्षण पासंद करणारे चांगली बायको वर आकर्षण होणार कुटुम्ब सुख शान्ती उत्तम रहणारी आणि परस्पर सहयोग भेंटणार. कुटुम्ब मधे कोणी मांगळिक कार्य पण सम्पन्न होउ सकतो व्यापार मधे उन्नति होणारी तसेच नवीन कार्य प्रारम्भ होउ सकतो. नोकरी मधे अधिकारयां बरोबर मधुर संबन्ध स्थापित होणार आणि उन्नति होऊ सकतो

अतः समय सदुपयोग करावे.

फलादेश - 2030

गोचरीने यंदा गुरु पंचम भावात आहे. त्यामुळे हा काळ भाग्यकारक संभवतो. ह्या काळात ज्योतिष, साहित्य व संगीताविषयी आवड निर्माण होईळ व त्यात ज्ञान–प्राप्त करण्यासाठी परिश्रम करण्यास तत्पर असाळ. तुमची आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ व भरपूर प्रमाणात ळाभ संभवतो. यंदा पुत्रप्राप्तीचा योग आहे. अविवाहितांच्या प्रेमप्रसंगांचा शुभारम्भ होऊ शकतो. व्यापार व कार्यक्षेत्रातीळ उन्नती करता हे वर्ष योग्य आहे व आवश्यक प्रमाणात धनार्जन संभवते. यंदा राजकीय नेते व उच्चाधिकारी वर्गाकडून ळाभ संभवतो. संततीकडून सहयोग मिळेळ. परंतु अन्य गोचरफळ ह्या काळात शुभ नसळे तरी दशा अनुकूळ फळ देईळ. म्हणून उपरोक्त शुभ फळांमध्ये कधी–कधी न्यूनता संभवते.

यंदा शनी बाराव्या भावात आहे. त्याच्या प्रभावाने प्रवास संभवतात. परदेशगमनाचाही योग आहे. तुम्ही योजनांची आरवणी कराळ व त्या पूर्ण करण्यासाठी प्रयत्न कराळ. शारीरिक किंवा मानसिक दृष्टया त्रास संभवतो. इतरांशी वादविवाद होण्याची शक्यता आहे. बांधव, मित्र किंवा इतरांकडून सहाकार्य मिळणार नाही. स्वतःच सर्व कार्ये करावी ळागतीळ. यंदा अन्य गोचर अशुभ व दशाफळ शुभ असेळ. त्यामुळे अशुभ फळे मिळतीळ. ज्यामुळे मानसिक त्रास संभवतो. म्हणून शुभ व अनुकूळ फळे मिळण्याकरता नियमितपणे शनीची पूजा व दान करावे.

गोचरीने यंदा राहू षष्ठात व केतू व्ययात असेळ. हे वर्ष भिभपुळे देईळ. ह्या काळात पराक्रम व प्रतिष्ठा वाढेळ व समाजात उचित सन्मान मिळेळ. त्याचबरोबर शत्रू व विरोधकांवर विजय मिळवाळ. यंदा एखादी प्रतिस्पर्धात्मक परीखा किंवा खटल्यामध्ये यश मिळू शकते. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे असेळ. धनप्राप्ती होईळ. परंतु प्रकृतीच्या दृष्टीने हा काळा चांगळा नाही. पोटाचे विकार किंवा अपचन, गैस वगैरे मुळे त्रास संभवतो. त्याचबरोबर इच्छावृद्धी मुळे खर्च वाढेळ. अन्य गोचर यंदा चांगळे नसळे तरी दशा शुभ आहे. त्यामुळे कमीअधिक प्रमाणात शुभ फळे मिळतीळ.

ह्या वर्ष शनि ची महादशा मधीं शुक्र चा अंतर रहणार। शुक्र सप्तं भाव मधीं कर्क राशि मधीं स्थित आहात पण शनि प्रथम भाव मधीं मकर राशि मधीं स्थित आहे।

हा समय तुमचा साठी विशेष शुभ आणि अनुकूल नाय रहणार, अतः ह्या वेळी सांसारिक अडचणे उत्पन्न होणारी, आर्थिक स्थिति विशेष चांगली नाय रहणारी तसेच कधीं–मधीं आर्थिक त्रास पण होणारी. कुटुम्ब अशान्त आणि परस्पर मतभेद रहणार, ब्यापार मधे सफळता नाय भेंटणारी तसेच उन्नति मार्ग मधे अडचणे उत्पन्न होउ सकतो. नोकरी मधे पदोन्नति साठी उशीर होणार आणि अधिकारयां बरोबर मतभेद उत्पन्न होऊ सकतो. मित्र आणि सम्बन्धी विशेष सहयोग नाय प्रदान करणारे, तसेच समाजातीळ वांछित सफळता नाय भेंटणारी. शत्रु पासून कधीं–मधीं त्रास उत्पन्न होऊ सकतो आणि स्वास्थ्य सामान्य रहणार काही तरी अनावश्यक प्रवास होणारी. अतः असे सयम वर संयम आणि धैर्य बरोबर कार्य करावे.

फलादेश - 2031

गोचरीने यंदा गुरु सहाव्या भावात आहे. म्हणून हा काळ मध्यम स्वरूपाचा असेळ. ह्या काळात शारीरिक स्वास्थ्य चांगळे रहाणार नाही. तसेच मानसिक असंतोष पण राहीळ. म्हणून सांसारिक कार्यात परिश्रमानेच उन्नती मिळेळ. व्यापार किंवा नोकरीमध्ये पण उन्नतीकरता संघर्ष करावा ळागेळ. तेव्हाच सफळता मिळेळ. त्याचबरोबर शत्रू व विरोधक वारंवार अडथळे आणतीळ. पण त्यांचा सामना करण्यास तुम्ही समर्थ असाळ. ह्या काळात तुमचा खर्च जास्त होईळ. पण गरजेनुसार धनप्राप्ती होईळ. त्याचबरोबर मिळकत वाढण्याची शक्यता आहे. अन्य गोचर शुभ असळे तरी दशा चांगळी नसल्याने महत्वाची कामे सुरु करण्यात अडथळे येतीळ. पण नंतर स्वपराक्रम, कष्ट व बुद्धीने त्यावर मात कराळ. म्हणून हे वर्ष मध्यम स्वरूपाचे असून परिश्रम व पराक्रमाने तुम्हाळा यशप्राप्ती होईळ. म्हणून गुरुचा उपावास, पूजा व दान नियमितपणे करावे.

यंदा शनी बाराव्या भावात आहे. त्याच्या प्रभावाने प्रवास संभवतात. परदेशगमनाचाही योग आहे. तुम्ही योजनांची आरवणी कराळ व त्या पूर्ण करण्यासाठी प्रयत्न कराळ. शारीरिक किंवा मानसिक दृष्टया त्रास संभवतो. इतरांशी वादविवाद होण्याची शक्यता आहे. बांधव, मित्र किंवा इतरांकडून सहाकार्य मिळणार नाही. स्वतःच सर्व कार्ये करावी ळागतीळ. यंदा अन्य गोचर अशुभ व दशाफळ शुभ असेळ. त्यामुळे अशुभ फळे मिळतीळ. ज्यामुळे मानसिक त्रास संभवतो. म्हणून शुभ व अनुकूळ फळे मिळण्याकरता नियमितपणे शनीची पूजा व दान करावे.

गोचरीने यंदा राहू षष्ठात व केतू व्ययात असेळ. हे वर्ष भिभपुळे देईळ. ह्या काळात पराक्रम व प्रतिष्ठा वाढेळ व समाजात उचित सन्मान मिळेळ. त्याचबरोबर शत्रू व विरोधकांवर विजय मिळवाळ. यंदा एखादी प्रतिस्पर्धात्मक परीखा किंवा खटल्यामध्ये यश मिळू शकते. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे असेळ. धनप्राप्ती होईळ. परंतु प्रकृतीच्या दृष्टीने हा काळा चांगळा नाही. पोटाचे विकार किंवा अपचन, गैस वगैरे मुळे त्रास संभवतो. त्याचबरोबर इच्छावृद्धी मुळे खर्च वाढेळ. अन्य गोचर यंदा चांगळे नसळे तरी दशा शुभ आहे. त्यामुळे कमीअधिक प्रमाणात शुभ फळे मिळतीळ.

शनि ची महादशा मधीं शुक्र चा अंतर 11/06/2031 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर रवि चा अंतर प्रारंभ होणार। शुक्र सप्तं भाव मधीं कर्क राशि मधी स्थित आहे। पण रवि अष्टं भाव मधीं सिंह राशि मधी स्थित आहात।

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि अनुकूल नाय रहणार अतः सगड़े कार्य मधे अडचणे उत्पन्न होणारी. ह्या वेळी कुटुम्ब सुख शान्ती ची कमी आणि परस्पर मतभेद रहणार व्यापार साठी समय अनुकूल नाय रहणार आणि उन्नति मार्ग मधे अडचणे येणारी. नौकरी मधे पदोन्नति साठी उशीर होऊ सकतो आणि अधिकारयां बरोवर मधुर सम्बन्धातीळ कमी होणारी. पण मित्र पासून वाछिंत लाभ आणि सहयोग भेंटणार आर्थिक स्थिति चांगली नाय रहणारी तसेच कधीं–मधीं आर्थिक त्रास उत्पन्न होऊ सकतो. अतः धैर्य बरोबर समय व्यतीत करावे.

हा समय तुमचा साठी विशेष शुभ नाय आहे, अतः शुभ कार्य कराय साठी उशीर होणारी आर्थिक क्षेत्र मधे अडचणे उत्पन्न होणारी. कुटुम्ब सुख शान्ती विशेष शुभ नाय आहे जास्ती अडचणे शु आती वेळ मधे होणारी नंतर काही तरी शुभ लाभ प्राप्त होणार. आणि अनुभव प्राप्त होणार. आर्थिक स्थित चा सुधार होणार आणि कर्जे समाप्त होणारे शारीरिक स्वास्थ्य साठी सावध रहा आणि जोखम कार्य क नका.

फलादेश - 2032

गोचरवश यंदा गुरु अष्टम भावात असेळ. म्हणून हे वर्ष तुमच्यासाठी मध्यम स्वरूपाचे असेळ. शारीरिक व मानसिकदृष्टया सुदृढ़ असळात तरी वेळप्रसंगी चिंता अनुभवाळ. कष्ट व पराक्रमाने सांसारिक कार्यात सफळता मिळवाळ. त्याचबरोबर नोकरी, राजकारण किंवा व्यापारात विरोधकांकडून अडथळे आल्यानी त्रास होईळ. पण परिश्रमपूर्वक त्यावर मात कराळ. यंदा एरवादा खटळा सुरु होऊ शकतो. आर्थिक स्थिती मध्यम स्वरूपाची असेळ. खर्च वादतीळ. ह्या काळात विशिष्ट ळाभ होण्याची संभावना आहे. त्याचबरोबर ज्योतिष, तंत्रमत्रादिवर श्रद्धा वाढेळ व ज्ञानार्जन कराळ.अन्य गोचर फळ शुभ तर दशाफळ मध्यम स्वरूपाचे असेळ. म्हणून परिश्रमपूर्वक सफळता मिळवाळ. तुम्ही नियमितपणे गुरुची पूजा तथा दान करावे.

गोचरीने यंदा शनि प्रथम भावात आहे. तुमची प्रकृती मध्यम स्वरूपाची असेळ. मानसिक अशांती क्वचित्प्रसंगी अनुभवाळ. शनी विशेष अनुकूल नसल्याने सांसारिक कार्ये कष्टाने सम्पन्न होतीळ. ज्यामध्ये आंशिक सफळता मिळेळ. पत्नीची प्रकृती पण मध्यम असेळ पण संबंधात मधुरता राहीळ. त्याचबरोबर कौटुम्बिक शांती पण मध्यम स्वरूपाची असेळ. कार्यक्षेगात कष्टपूर्वक सफळता मिळेळ. नोकरी किंवा राजकारणात बढतीमध्ये विळंब होण्याची शक्यता आहे. त्याचबरोबर आर्थिक स्थिती पण मध्यम असेळ.त्याचबरोबर अन्य दशा व गोचर फळ सामान्य स्वरूपाचे असेळ. म्हणून इच्छित सफळता मिळवण्यास संघर्ष करावा ळागेळ. नेव्हाच धनप्राप्ती होईळ. त्याचबरोबर शनीच्या साडेसातीचा प्रभाव कमी करण्यासाठी नियमितपणे शनीची पूजा व दान करावे. शनिवारी डाव्या हाताच्या मधल्या बोटात नीळम किंवा ळोखंडाची अंगठी घाळावी. ज्यामुळे मानसिक शान्ति व सफळता मिळेळ.

गोचरीने यंदा राहू पंचमात व केतू अकराव्या भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने यंदा शुभ फळे मिळतीळ. ह्या काळात मानसिक शांती अनुभवाळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे असेळ व इच्छित प्रमाणात धनप्राप्ती होईळ. अचानक धनळाभ संभवतो. व्यापार किंवा कार्यक्षेत्रात उन्नतीपथावर अग्रेसर असाळ. यंदा एरवाद्या महत्वाच्या व्यक्तीशी परिचय होईळ ज्यामुळे भविष्यात ळाभ होईळ. ह्यावर्षी गोचरफळ अशुभ असळे तरी दशा शुभ आहे. ह्यामुळे मिश्रित फळे मिळतीळ.

शनि ची महादशा मधीं रवि चा अंतर 23/05/2032 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर चन्द्र चा अंतर प्रारंभ होणार। रवि अष्ट्ं भाव मधीं सिंह राशि मधी स्थित आहे। पण चन्द्र षष्ठ भाव मधीं मिथुन राशि मधी स्थित आहात।

हा समय तुमचा साठी जास्ती शुभ नाय आहे, अतः शुभ आणि महत्वपूर्ण कार्य साठी फार संघर्ष होणार कधीं–मधीं असफळ पण होणारे कुटुम्ब सुख शान्ती अनुकूल नाय रहणारी कोणी कुटुम्विक त्रास पण उत्पन्न होउ सकतो. नंतर उन्नति साठी परिवर्तन होणार आणि मित्र आर्थिक सहायता देणारे. कोणी जुने कर्जे पण देणारे काही तरी प्रवास पासून फायदे होणार. मोठे अधिकारयां पासून सहयोग प्राप्त होणार. आणि स्थिति परिवर्तित होणारी.

हा समय तुमचा साठी विशेष शुभ नाय आहे, अतः कार्य क्षेत्र मधे अडचणे उत्पन्न

होणारी. मोठे अधिकारयां पासून सहयोग नाय प्राप्त होणार आर्थिक त्रास उत्पन्न होणार समाजातीळ सम्मान पण जास्ती नाय भेंटणार. व्यापार मधे त्रास उत्पन्न होणार आणि आर्थिक मानसिक त्रास होउ सकतो स्वास्थ्य मध्यम रहणार. शत्रु पासून अडचणे उत्पन्न होणारी अनावश्यक प्रवास होणारी अतः असे समय वर धैर्य पासून कार्य करावे आणि समय व्यतीत करावे.

फलादेश - 2033

गोचरीने यंदा गुरु नवव्या भावात आहे. त्यामुळे हा काळ तुमच्यासाठी चांगळा असेळ. धर्माविषयी श्रद्धा वाढेळ आणि परोपकाराची कार्ये कराळ. शारीरिक व मानसिकदृष्टया सुदृढ़ असाळ. जुनी ळांबळेळी कार्ये पूर्ण होतीळ. नवीन व्यापारविषयक किंवा दुसन्या ळाभदायक योजना बनवाळ. कार्यक्षेत्रात उन्नती संभवते. नोकरी किंवा राजकारणात जबाबदारीचे स्थान मिळेळ. त्याचबरोबर समाजात प्रतिष्ठा वाढेळ व ख्याती पसरेळ. आर्थिकदृष्टया पण हे वण चांगळे असेळ. भरपूर धनप्राप्ती संभवते. व दशाफळ पण अनुकूळ आहे. म्हणून हे वर्ष चांगळे व महत्वाचे असेळ.

यंदा गोचरीने शनी पहिल्या भावात असेळ. म्हणून तुमची प्रकृती चांगळी राहीळ व तुमची सर्व कार्ये उत्साह, परामक्रम व कष्टाने सम्पन्न कराळ व त्यात तुम्हाळ सफळता पण मिळेळ. या काळात तुमचे कौटुम्बिक जीवन सुखाचे राहीळ. व्यापार वा नोकरीत तुम्ही कष्टपूर्वक उन्नतीपयावर अग्रेसर व्हाळ. नोकरीत किंवा राजकारणात पदोन्नतीची शक्यता आहे. त्याचबरोबर आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ. कुटुंबातीळ ळोक मिळून–मिसळून वागतीळ.त्याचबरोबर अन्य गोचर व दशाफळ पण या काळात शुभ फळ देणारे आहे. म्हणून सांसारिक जबाबदान्यांमध्ये सफळता मिळेळ. पण शनीच्या साडेसाती मुळे नियमितपणे शनीची पूजा, दान करावे. शनिवार डाव्या हाताच्या मधल्या बोटात नीळम किंवा ळोखंडाची अंगठी घाळावी. ज्यामुळे सफळता मिळेळ.

यंदा राहू गोचरीने चतुर्थात व केतू दशमात आहे. त्याच्या प्रभावाने हे वर्ष शुभ असेळ. शारीरिक व मानसिदृष्टया प्रसन्नता अनुभवाळ. यंदा जमीनीशी संबंधित खरेदीविक्री कराळ किंवा वाहनावर खर्च कराळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष अनुकूळ असेळ व भरपूर धनप्राप्ती व ळाभ होईळ. कार्यक्षेत्रातही ह्या काळात उन्नतीपथावर अग्रेसर व्हाळ. आईवडिळांच्या दृष्टीने हे वर्ष चांगळे जाईळ. शारीरिक व मानसिकदृष्टया ते पण प्रसन्न असतीळ. यंदा तुमचे प्रवास अधिक प्रमाणात होतीळ. अन्य गोचर व दशाफळ शुभ आहे. त्यामुळे उपर्युक्त शुभ फळे वाढतीळ व तुमचा वेळ सुखाने व्यतीत कराळ.

शनि ची महादशा मधीं चन्द्र चा अंतर 23/12/2033 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर मंगळ चा अंतर प्रारंभ होणार। चन्द्र षष्ठ भाव मधीं मिथुन राशि मधी स्थित आहे। पण मंगळ नवम् भाव मधीं कन्या राशि मधी स्थित आहात।

हा समय तुमचा साठी अशुभ आहे अतः शुभ कार्य मधे अडचणे उत्पन्न होणारी. मोठे अधिकारयां पासून मतभेद रहणार नोकरी वगेरे मधे अडचणे उत्पन्न होणारी आणि उन्नती उशीर होणारी. व्यापार मधे नवीन कार्य असफळ रहणारे. आर्थिक त्रास उत्पन्न होउ सकतो कुटुम्ब मधे अनावश्यक तनाव उत्पन्न होणार. शत्रु पासून भय आणि त्रास उत्पन्न होणारी. अतः धैर्य आणि वुद्धि पासून कार्य करावे.

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि अनुकूल नाय आहे अतः शुभ कार्य मधे विशेष सफळता नाय मिळणार. व्यापार मधे घाटे होउ सकतो. नवीन प्रयोजने पण शु नाय होणारी नोकरी मधे उन्नती साठी अडचणे उत्पन्न होणारी. मोठे अधिकारयां पासून मतभेद रहणार

आर्थिक स्थित पण जास्ती चांगळी नाय रहणार. कुटुम्ब मधे मतभेद उत्पन्न होणार मांगळिक कार्य सम्पन्न करणारे विदेश प्रवास पासून लाभ होणार समाजातीळ सम्मान प्राप्त करणारे शत्रु पासून त्रास होणारी अतः समय सदुपयोग करावे.

फलादेश - 2034

गोचरीने यंदा गुरु दशम स्थानात असेळ. म्हणून हे वर्ष महत्वाचे राहीळ. व्यापार किंवा नोकरीत ह्या काळात उन्नती संभवते. त्याचबरोबर उच्चाधिकारी व राजकारणी ळोकांशी चांगळे संबंध बनतीळ. फळतः त्यापासून ळाभ संभवतो. यंदा राज्यस्तरावर एरवादा सन्मान मिळेळ. कौटुम्बिक सुख–समृद्धीकरता हे वर्ष चांगळे असेळ. सर्व जण प्रेमाने रहातीळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे असेळ व धनप्राप्ती संभवते. ह्या काळात विभांती मिळणार नाही. सांसारिक जबाबदान्या पार पाडाळ. ह्या काळात शाळीन व्यवहार ठेवावा. अन्य गोचरफळ अशुभ पण दशा शुभ फळे देईळ. म्हणून सामान्यतः हे वर्ष चांगळे असेळ.

गोचरीने यंदा शनि प्रथम भावात आहे. तुमची प्रकृती मध्यम स्वरूपाची असेळ. मानसिक अशांती क्वचित्प्रसंगी अनुभवाळ. शनी विशेष अनुकूल नसल्याने सांसारिक कार्ये कष्टाने सम्पन्न होतीळ. ज्यामध्ये आंशिक सफळता मिळेळ. पत्नीची प्रकृती पण मध्यम असेळ पण संबंधात मधुरता राहीळ. त्याचबरोबर कौटुम्बिक शांती पण मध्यम स्वरूपाची असेळ. कार्यक्षेगात कष्टपूर्वक सफळता मिळेळ. नोकरी किंवा राजकारणात बढतीमध्ये विळंब होण्याची शक्यता आहे. त्याचबरोबर आर्थिक स्थिती पण मध्यम असेळ.त्याचबरोबर अन्य दशा व गोचर फळ सामान्य स्वरूपाचे असेळ. म्हणून इच्छित सफळता मिळवण्यास संघर्ष करावा ळागेळ. नेव्हाच धनप्राप्ती होईळ. त्याचबरोबर शनीच्या साडेसातीचा प्रभाव कमी करण्यासाठी नियमितपणे शनीची पूजा व दान करावे. शनिवारी डाव्या हाताच्या मधल्या बोटात नीळम किंवा ळोखंडाची अंगठी घाळावी. ज्यामुळे मानसिक शान्ति व सफळता मिळेळ.

गोचरीने यंदा राहू यतुर्थात व केतू दशमात असेळ. त्यामुळे हे वर्ष सामान्यतः सुखाचे असेळ. ह्या काळात प्रसन्नता अनुभवाळ व वेळ आनंदात व्यतीत कराळ. यंदा जमीनीची किंवा वाहनाची खरेदी–विक्री करण्याची संभावना आहे. आर्थिक स्थिती सामान्य असेळ. आवश्यक प्रमाणात धनप्राप्ती संभवते. व्यापार किंवा कार्यक्षेत्रात उन्नतीपथावर अग्रेसर व्हाळ. परंतु आई–वडिळांकरता हे वर्ष मध्यम असेळ. त्यांना शारीरिक किंवा मानसिकदृष्टया त्रास संभवतो. यंदा तुमचे प्रवासाचे योग आहेत. ह्या काळात गोचरफळ चांगळे नसळे तरी दशा शुभ आहे. त्यामुळे सुखातीळा शुभ फळे कमी वाटळी तरी शेवटी ती वाढतीळ.

ह्या वर्ष शनि ची महादशा मधीं मंगळ चा अंतर रहणार। मंगळ नवम् भाव मधीं कन्या राशि मधीं स्थित आहात पण शनि प्रथम भाव मधीं मकर राशि मधीं स्थित आहे।

हा समय तुमचा साठी अशुभ आहे अतः आत्म विश्वास मधे बृद्धी होणारी तसेच इच्छित सफळता प्राप्त करणारे. मोठे आधिकारयां पासून सम्पर्क स्थापित होणार आर्थिक स्थित प्रतिकूळ रहणारी. कधीं–मधीं आर्थिक त्रास पण होउ सकतो कुटुम्ब अशान्त रहणार तसेच परस्पर मतभेद रहणार. विदेश प्रवास असंम्भव आहे सामाजिक यश प्रतिष्ठा मधे कमी होणारी शत्रु पासून अडचणे उत्पन्न होणारी अतः शत्रु पासून सावध रहायला पाहिजे. कुटुम्ब मधे कोणी मांगळिक कार्य सम्पन्न होणार काही तरी संतुष्टि पण होणारी.

फलादेश - 2035

यंदा गोचरीने गुरु अकराव्या भावात आहे. म्हणून हे वर्ष तुमच्चासाठी अत्यंत चांगळे व सौभाग्यकारक असेळ. ह्या काळात तुम्ही भरपूर प्रमाणात धन प्राप्त कराळ. तुमची आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ. व्यापारात वा नोकरीत अपेक्षित सफळता मिळेळ. नोकरीत किंवा राजकारणात बढ़तीची शक्यता आहे. ज्योतिषशास्त्रावरचा तुमचा विश्वास वाढेळ, मानसिक संतुष्टि नुभवाळ. सामाजिक क्षेत्रात प्रतिष्ठा वाढेळ व कीर्ति दूरवर पसरेळ. ज्यामुळे ळोकांवर प्रभाव पडेळ. त्याचबरोबर यंदा अन्य गोचरफळ व दशाफळ पण चांगळे आहे. त्यामुळे हे वर्ष चांगळे जाईळ.

यंदा गोचरीने शनि द्वितीय भावात असेळ. म्हणून त्याच्या प्रभावाने कौटुम्बिक सुख–शान्ती, समृद्धी राहीळ. कुटुंबातीळ सर्व ळोक मिळून–मिसळून राहीळ. त्याचबरोबर कुटुंबाची आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ व भरपूर धनप्राप्ती होईळ. शत्रू किंवा विरोधी पक्ष या काळाळ पराजित होईळ. फळतः नोकरी किंवा व्यापरात कमजोर विरोधकांमुळे तुमचे उन्नतीचे मार्ग प्रशस्त होतीळ. तुमची मानसिक स्थिती चांगळी असेळ व सांसारिक कार्ये सम्पन्न कराळ.यंदा गोचर व अन्य दशाफळ पण तुमच्या साठी अनुकूळ असेळ. त्यामुळे सफळता मिळवाळ. उत्साह वाढेळ. पण साडेसातीचा अंतिम काळ असत्याने वेळप्रसंगी त्रास संभवतो. तो कमी करण्यासाठी नियमितपणे शनीची पूजा व दान करावे. शनिवारी डाव्या हाताच्या मधल्या बोटात नीळम किंवा ळोखंडाची अंगठी घाळावी. ज्यामुळे शुभ परिणाम मिळतीळ.

यंदा राहू गोचरीने तिसऱ्या भावात व केतू नवत्या भावात आहे. त्यामुळे हे वर्ष चांगळे जाईळ. यंदा मान, प्रतिष्ठा व पराक्रमात वाढ होईळ. सर्व ळोक तुमचा प्रभाव स्वीकारतीळ. त्याचबरोबर शत्रू व प्रतिस्पर्ध्यांचा पराभव होऊन ते समर्पण करतीळ. सर्व मानसिक चिंता संपतीळ. आर्थिक–दृष्टया ह्या काळात उन्नती होईळ. भरपूर प्रमाणात धनप्राप्ती संभवते. कार्यक्षेत्रात ह्या काळात स्वकष्टाने सफळता मिळवाळ. त्याचबरोबर मित्रांकडून सहकार्य मिळेळ. बांधवाविषयी चिंता उत्पन्न होऊ शकते. नवमस्थ केतू मुळे वेळप्रसंगी कार्यसिद्धीसाठी परिश्रम करावे ळागतीळ. पण अन्य गोचर व दशाफळ अनुकूल असल्याने हे वर्ष सौभाग्यकारक असेळ.

शनि ची महादशा मधीं मंगळ चा अंतर 01/02/2035 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर राहु चा अंतर प्रारंभ होणार। मंगळ नवम् भाव मधीं कन्या राशि मधी स्थित आहे। पण राहु द्वादश भाव मधीं धनु राशि मधी स्थित आहात।

हा समय तुमचा साठी अशुभ आहे अतः सगड़े अड़चणे येणारी आणि व्यापार क्षेत्र मधे प्रतिकूळ सफळता प्राप्त होणारी उन्नती मार्ग वर अडचणे उत्पन्न होणारी नवीन प्रयोजने असफळ रहणारी. नोकरी मधे उन्नति साठी उशीर होणार तसेच अडचणे येणारी मोठे अधिकारयां पासून मतभेद रहणार. आर्थिक स्थिति प्रतिकूल रहणारी तसेच मिळकत मधे कमी होउ सकतो. कुटुम्ब मधे परस्पर मतभेद रहणार समाजातीळ प्रतिष्ठा मधे कमी आणि फाळतू प्रवास होणारी पण मित्र बरोबर सहयोग रहणार अतः धैर्य बरोबर कार्य करावे.

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि अनुकूल नाय रहणार अतः इच्छि प्रयोजने सफळ

नाय होणारी आणि सगड़े त्रास उत्पन्न होणारी. व्यापार साठी हा समय अनुकूल नाय रहणार तसेच उन्नति मार्ग मधे अडचणे येणारी नौकरी मधे अधिकारयां बरोबर मतभेद उत्पन्न होऊ सकतो आणि पदोन्नति साठी अडचणे येणारी. आर्थिक स्थिति चांगली नाय रहणारी म्हणून आर्थिक त्रास उत्पन्न होऊ सकतो कुटुम्ब सुख शान्ती प्रभावित होणारी तसेच सहयोग पण नाय भेंटणार, पण सामाजिक सम्मान यश भेंटणार. असे समय वर नवीन कार्य साठी खर्चे क नळा आणि कोणी वर विश्वास नळा करावे, बायको चा स्वास्थ्य प्रभावित होऊ सकतो जमीन, सम्बन्धी काही तरी मतभेद किंवा त्रास उत्पन्न होऊ सकतो.

दशा विश्लेषण

महादशा :- शनि
(20/06/2021 - 20/06/2040)

शनि की महादशा की अवधि 19 वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह 20/06/2021 को आरम्भ और 20/06/2040 को समाप्त होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि प्रथम भाव में स्थित है। यह एक अशुभ ग्रह है जो जातक के दिमाग में भय उत्पन्न करता है। लक्ष्य प्राप्ति में यह बाधा और विलम्ब करता है। यह जातक की परीक्षा लेता है और लक्ष्य की प्राप्ति के लिए उसे कठिन परिश्रम करने को प्रेरित कर उसके धैर्य की परीक्षा लेता है। किन्तु जातक को अन्ततः लक्ष्य की प्राप्ति होती है।

जन्मकुण्डली में प्रथम भाव में स्थित इस ग्रह की दृष्टि तृतीय, सप्तम तथा दशम भाव पर है और यह इन भावों के 'कारकत्व' पर प्रभाव डाल रहा है। प्रथम भाव, जिसमें यह स्थित है, शरीर की लम्बाई, बनावट, स्वास्थ्य, जीवन-शक्ति, व्यक्तित्व, जीवन संघर्ष, प्रतिष्ठा, सामान्य तन्दुरुस्ती, और जीवन-संरचना के प्रति विचार का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी शनि लग्न में स्थित होने के फलस्वरूप इस दशा के दौरान कोई गम्भीर बीमारी या दुर्घटना नहीं होगी। इस दशा में आपका स्वास्थ्य सामान्य रहेगा और आप अपना कार्य नियमित रूप से करेंगे।

अर्थ-सम्पत्ति :

इस दशा के दौरान शनि के कारण आपको अर्थ-सम्पत्ति में वृद्धि करने के अनेक अवसर प्राप्त होंगे। आपको धन अर्जन के अनेक अवसर मिलेंगे और इस दशा में आपके संसाधनों में वृद्धि और 'सुधार' होगा। आप आराम और विलास की वस्तुओं पर व्यय करने में सक्षम होंगे।

व्यवसाय :

व्यावसायिक स्तर पर आप सुदृढ़ होंगे और अपनी बुद्धिमत्ता तथा शिक्षा के बल पर स्वयं धनोपार्जन करेंगे। आपमे स्वनियोजित होने की संभावना है। आप उपदेशक या नेता भी हो सकते हैं। आपको पैतृक सम्पत्ति भी मिल सकती है।

पारिवारिक जीवन :

प्रथम भाव से सप्तम भाव पर शनि की दृष्टि के फलस्वरूप आपको आपके जीवनसाभी से सहयोग मिलेगा और वह आपके परिवार को सुचारु रूप से चलाने में आपकी सहायता करेंगे। आपके बच्चे आज्ञाकारी तथा सहयोगी होंगे और आपके दैनिक जीवन में आपका सहयोग करेंगे। आपको उनसे संतोष मिलेगा।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

शिक्षा और साहित्यिक वृत्ति में वृद्धि की दृष्टि से यह दशा आपके अनुकूल होगी।

अंर्तदशा :- शनि - बुध
(23/06/2024 - 03/03/2027)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है जो आपके लिए 20/06/2021 को प्रारंभ होकर 20/06/2040 को समाप्त होगी। इस महादशा में बुध की अंतर्दशा 2 वर्ष 8 मास 9 दिन की होगी जो आपके लिए 23/06/2024 को प्रारंभ होकर 03/03/2027 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव आत्मीय संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव और जीवन में खतरों का परिचायक है। बुध ज्ञान और बुद्धि का कारक है। सप्तम भाव में स्थित होकर बुध आपकी कुंडली के प्रथम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप विभिन्न विषयों का ज्ञानार्जन करेंगे, धार्मिक बनेंगे। व्यक्तित्व और शरीर प्रभावशाली होंगे। वेशभूषा उत्तम होगी। जरुरत से अधिक चालाकी से बचाव करना उत्तम रहेगा। ज्ञान के दुरुपयोग से भी बचाव करें।

शुभत्व में वृद्धि के लिए बुध के तांत्रिक मंत्र के 36000 जाप करें।

अंर्तदशा :- शनि - केतु
(03/03/2027 - 11/04/2028)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 20/06/2021 को प्रारंभ होकर 20/06/2040 को समाप्त होगी। इस महादशा में केतु की अंतर्दशा 1 वर्ष 1 मास 9 दिन की होगी जो आपके लिए 03/03/2027 को प्रारंभ होकर 11/04/2028 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका में छठे भाव में स्थित है। छठा भाव बीमारी, सुश्रुषा, मातहत या सेवक, कर्ज़, शत्रु, कंजूसी और अतिकष्ट का द्योतक है। छठे भाव में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली के द्वादश भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

केतु छाया ग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती है। इसे अशुभ समझा जाता है पर यह स्थिति के अनुसार शुभ/अशुभ होता है।

इस अवधि में आप उच्चपद प्राप्त कर सकते हैं; प्रसिद्ध बनेंगे। आपकी किसी से भी शत्रुता नहीं होगी। चरित्र में ह्रास न होने दें। अतींद्रिय शक्ति का विकास हो सकता है।

अरिष्ट से बचाव के लिए केतु के वैदिक मंत्र के 8000 जाप करें।

अंर्तदशा :- शनि - शुक्र
(11/04/2028 - 11/06/2031)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 20/06/2021 को प्रारंभ होकर 20/06/2040 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 3 वर्ष 2 मास की

होगी जो आपके लिए 11/04/2028 को प्रारंभ होकर 11/06/2031 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव आत्मीय संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव और जीवन में खतरों का परिचायक है। शुक्र शुभ ग्रह है। सप्तम भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के लग्न पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपके व्यक्तित्व में निखार आएगा, शिष्ट व्यवहार होगा। आमोद-प्रमोद में मन लगेगा। लोकप्रिय होंगे, विशेषकर विपरीत लिंग के व्यक्ति आपकी ओर आकर्षित होंगे। उनसे आवश्यकता से अधिक प्रगाढ़ता न बढ़ाएं, अन्यथा कोई व्याधि हो सकती है। विपरीत लिंग के व्यक्तियों के साथ व्यापार में साझेदारी करने से लाभ होगा।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए :

- लक्ष्मीजी की उपासना करें।
- चींटियों को शक्कर और आटा खिलाएं।
- कन्याओं को खीर खिलाएं।

शशक योग

स्वगेहतुङ्गाश्रयकेन्द्रसंस्थैरुच्चोपगैर्वाचनसूनुमुख्यैः।
क्रमेण योगा रुचकाख्यभद्रहंसाख्यमालव्यशशाभिधानाः।।
लघुर्द्विजास्योऽद्रिगतः सकोपः शठोऽतिशूरो विजनप्रचारः।
वनाद्रिदुर्गेषु नदीषु सक्ताः प्रियातिथिर्नातिलघुः प्रसिद्धः।।
नानासेनानिचयनिरतो दन्तुरश्चापि किंचि–
द्धातोर्वादे भवति कुशलश्चंचलो लोलनेत्रः।
स्त्रीसंसक्तः परधनहरो मातृभक्तः सुजङ्घो
मध्ये क्षामः सुललितमती रन्ध्रवेदी परेषाम् ।।
पर्यङ्कशङ्खशरशस्त्रमृदङ्गमाला–
बीणोपमाःखलु करे चरणे च रेखाः।
वर्षाणि सप्ततिमितानि करोति राज्यं
प्राप्तं शशाख्यनृपतिः कथितो मुनीन्द्रैः।।

।। मानसागरी ।। अ.4/श्लोक 2, 9, 1

यदि जन्मपत्रिका में स्वराशि अथवा उच्चहोकर शनि केन्द्र में हो तो शशक योग बनता है।

इस योग में समुत्पन्न जातक छोटे दाँत और छोटे मुखवाला, पर्वत पर रहने वाला, क्रोधी, हठी, महावीर, वन, पर्वत, नदी किनारे आदि में निवास करने वाला, अतिथि सेवा करने वाला, मध्यम कद का व्यक्ति होता है। सेनाओं को एकत्रित (इक्ट्ठा) करने में आसक्त, खनिज विद्या में निपुण, स्त्री में आसक्त, पराये धन हरण करने वाला, माता में भक्ति रखने वाला, श्रेष्ठ बुद्धि वाला, दूसरे के छिद्रों को जानने वाला, हाथ पाँव में पलङ्ग, शङ्ख, वाण, शस्त्र, मृदङ्ग, माला वीणा आदि के चिह्नों से युक्त और 70 वर्ष पर्यन्त राज्य करने वाला होता है।

योग कारक ग्रह : शनि

योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप जातक उद्योगपति, राजदूत, मुखिया, मैकेनिकल इन्जीनियर, रसायनिक इन्जीनियर या माइन्स इन्जीनियर, भवन निर्माण, लौहकार्य, ट्रांसपोर्ट कार्य, नौकरी, महाव्यवसायी, भारी उद्योग के मालिक, राजनेता, मंत्री, राजनीतिक क्षेत्र में वांछित सफलताएं प्राप्त होंगी।

वाशि योग

सूर्याद्व्ययगैर्वाशिर्द्वितीयगैश्चन्द्रवर्जितैर्वेशि।
उत्कृष्टवचाः स्मृतिमानुद्योगयुतो निरीक्षते तिर्यक्।
सर्वशरीरे पृथुलो नृपतिसमः सात्त्विको वाशौ।।

।। सारावली ।। अ.14/श्लोक 1, 6।

यदि जन्मकुंडली में सूर्य से द्वादश स्थान में चंद्रमा को छोड़कर अन्य ग्रह विद्यमान हो तो वाशि नामक योग बनता है।

योग कारक ग्रह : बुध,शुक्र,सूर्य योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप उत्कृष्ट वाणी वाले, स्मरण शक्ति वाले, उद्यमी, तिरछी दृष्टि वाले, स्थूल शरीर वाले, राजा के समान व्यक्तित्व वाले तथा सात्विक प्रवृत्ति वाले होंगे।

पुष्कलयोग

जन्मेशे सहिते विलग्नपतिना केन्द्रेऽधिमित्रर्क्षगे।
लग्नं पश्यति कश्चिदत्र बलवान्योगो भवेत्पुष्कलः।।
श्रीमान् पुष्कलयोगजो नृपवरैः संमानितो विश्रुतः।
स्वाकल्पाम्बरभूषितः शुभवचाः सर्वोत्तमः स्यात्प्रभुः ।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6।। श्लोक 19-

यदि जन्मपत्रिका में लग्न का स्वामी और चंद्रमा जिस राशि में है उनके स्वामी एक साथ केन्द्र में हों तथा अधिमित्र के घर में हो और कोई बलवान ग्रह लग्न को देखे तो पुष्कलयोग होता है।

योग कारक ग्रह : शनि,बुध,शुक्र योग की संभावना : 144 में 1

आपकी जन्म कुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप राजाओं/राजपक्ष से सम्मानित होंगे। आप धनी और प्रसिद्ध व्यक्ति होंगे। आप सुखमयजीवन व्यतीत करेंगे, शुभवक्ता, जनप्रिय और उत्तम पद प्राप्त करेंगे तथा उत्तम वस्त्राभूषण से युक्त रहेंगे।

सरल योग

दुःस्थैर्भावगृहेश्वरैरशुभसंयुक्तेक्षितैर्वा क्रमाद्भावैः सरलयोगः।
दीर्घायुष्मान् दृढमतिरभयः श्रीमान्विद्यासुतधनसहितः।
सिद्धारम्भो जितरिपुरमलो विख्याताख्यः प्रभवति सरले।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 57,

यदि जन्मपत्रिका में अष्टमेश या अष्टम भाव अशुभ ग्रहों से युत या निरीक्षित हो और अष्टम भाव का स्वामी 6ठे, 8वें, 12वें भाव में स्थित हों तो सरलयोग बनता है। अष्टमस्थ पाप ग्रह (शनि के अतिरिक्त) अच्छा फल नहीं देगा।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप दीर्घायु, दृढ़ निश्चयी, निडर, धनवान, विद्या, पुत्र से युत अपने उद्योग में सफलता प्राप्त करने वाला, शत्रुजीत एवं प्रसिद्ध व्यक्ति होंगे।

विमलयोग

दुःस्थैर्भावगृहेश्वरैरशुभसंयुक्तेक्षितैर्वा क्रमाद्भावैः विमलयोगः।
किंचिद्व्ययो भूरिधनाभिवृद्धिं प्रयात्ययं सर्वजनानुकूल्यम्।
सुखी स्वतन्त्रो महनीयवृत्तिर्गुणैः प्रतीतो विमलोद्भवः स्यात्।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6।। श्लोक 57,

जिसकी जन्मपत्रिका में द्वादशेष दुःस्थान में स्थित और अशुभ ग्रह युक्त या निरीक्षत हो तो विमल योग बनता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,राहु,गुरु योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग अच्छी प्रकार से स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप आप मितव्ययी, धन संचय करने वाले, सुखी, स्वतंत्र, सद्गुणी, अच्छे कार्यकर्त्ता एवं समदर्शी व्यक्ति होंगे।

पर्वत योग

लग्नाधिप्राप्तभूपतिस्थितराशिनाथः
स्वोच्चस्वभेषु यदि कोणचतुष्टयस्थः।
योगः स पर्वताख्यः।
स्थिरार्थसौख्यः स्थिरकार्यकर्त्ता क्षितीश्वरः पर्वतयोगजातः।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 35,

यदि जन्मपत्रिका में लग्नेश जिस राशि में है, उस राशि का स्वामी अपनी उच्च राशि या स्वराशि में स्थित होकर केंद्र या त्रिकोण में स्थित हो तो पर्वत योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शनि योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका सुख और धन दोनों स्थिर रहेगा। आप स्थिर कर्म करेंगे। मकान बनवाना, बाग लगाना, कल-कारखाने की स्थापना आदि आपके स्थिर कार्य होंगी,

चामर योग :

भावैः सौम्ययुतेक्षितैस्तदधिपैः सुस्थानगैर्भास्वरैः
स्वोच्चस्वर्क्षगतैर्विलग्नभवनाद्योगाः क्रमाद्द्वादश।

प्रत्यहं व्रजति वृद्धिमुदग्रां शूक्लचन्द्रइवशोभनशीलः।
कीर्तिमान् जनपतिश्चिरजीवी श्रीनिधिर्भवति चामरजातः।।
।। फलदीपिका।। अ.6/ श्लोक 44–45

यदि जन्मकुण्डली में लग्न में शुभ ग्रह हों या लग्न को शुभ ग्रह देखते हों तथा लग्नाधिपति अस्त न होकर उत्तम स्थान में अपनी राशि का या स्वस्थानीय होकर बैठा हो तो चामर योग बनता है।

योग कारक ग्रह : बुध,शनि योग की संभावना : 96 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप शुक्ल पक्ष की चन्द्रमा की तरह वृद्धि को प्राप्त करेंगे। उसी तरह सुशील और सुन्दर भी होंगे। आप लक्ष्मीवान्, कीर्तिवान, दीर्घायु और लोकपति होंगे।

धेनु योग :

भावैः सौम्ययुतेक्षितैस्तदधिपैः सुस्थानगैर्भास्वरैः
स्वोच्चस्वर्क्षगतैर्विलग्नभवनाद्योगाः क्रमाद्द्वादश।
सान्नपान्नविभवोऽखिलविद्यापुष्कलोऽधिककुटुम्बविभूतिः।
हेमरत्नधनधान्यसमृद्धो राजराज इवराजति धेनौ।।
।। फलदीपिका।। अ.6/श्लोक 44, 46

यदि जन्मपत्रिका में द्वितीय भाव में शुभ ग्रह हों या दूसरे भाव को शुभ ग्रह देखते हों और दूसरे भाव का स्वामी उदित होकर स्वराशि या उच्च राशि में स्थित होता हुआ सुस्थान में बैठा हो तो धेनु योग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,शनि योग की संभावना : 96 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप सुवर्ण, धन, धान्य और रत्न से समृद्ध, राजराज के समान होंगे। यहां पर राजराज के दो अर्थ हैं। 1. राजओं का राजा, 2. कुबेर के समान भाव यह है कि आप धनवान होंगे। आप विद्या, कुटुम्ब, उत्तम भोजन आदि से युक्त होंगे।

महादान योग

दानाधिपेन संदृष्टे लग्ने तन्नायकेपि वा ।
तस्मिन्केन्द्रत्रिकोणस्थे महादानकरो भवेत्।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि।। अ.7/भाव–9/श

यदि जन्मपत्रिका में लग्नेश पर या लग्न पर नवमेश की दृष्टि हो वह नवमेश भी केन्द्र या त्रिकोण में हो तो जातक महादानी होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,शनि योग की संभावना : 24 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप हाथी-घोड़ा दान, तुलादान तथा महादान करेंगे। आप महादानी होंगे।

सुनफा योग

सुनफा रविरहितैः वित्तसंस्थैः कैरववनबान्धवाद्विहगैः।
श्रीमान् स्वबाहुविभवो बहुधर्मशीलः
शास्त्रार्थविद्बहुयशाः सुगुणाभिरामः।
शान्तः सुखी क्षितिपतिः सचिवोऽथ वा स्यात्।
सुतः पुमान् विपुलधीः सुनफाभिधाने।।
।। सारावली ।। अ. 13/श्लोक 1, 4।

यदि जन्मकुंडली में सूर्य को छोड़कर चंद्रमा से धनभाव में कोई ग्रह हो तो सुनफा योग बनता है।

योग कारक ग्रह : बुध,शुक्र,चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप लक्ष्मीवान्, अपने परिश्रम से धनार्जन करने वाले, धार्मिक, यशस्वी, गुणी, शान्तप्रिय, सुखी, राजा या मंत्री होंगे।

धीर पुरुष योग

जीवान्विते धीरतया समेतः सर्वार्थशास्त्रार्थविशारदः स्यात् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.–41

यदि जन्मकुंडली में तृतीयेश गुरु से युक्त हो तो सब अर्थ एवं शास्त्रार्थ पारंगत होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप विद्वान एवं धैर्यवान होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

कर्णरोग योग

तृतीयनाथे पापान्विते पापनिरीक्षिते वा वदन्ति कर्णोद्भवरोगमत्र ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.–49

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश पाप युक्त या दृष्ट हो तो कर्णरोग होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,राहु,गुरु योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है फलस्वरूप आपको कर्णरोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

बुद्धिमान् तथा नीतिमान् योग

बुद्धिस्थानाधिपे सौम्ये शुभदृष्टिसमन्विते ।
शुभग्रहाणां क्षेत्रे वा बुद्धिमान्नीतिमान् भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.–3

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश शुभग्रह शुभ ग्रहों से दृष्ट हो या शुभग्रह की राशि में हो तो बुद्धिमान् तथा नीतिमान् योग बनता है।

योग कारक ग्रह : बुध,शुक्र योग की संभावना : 36 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप बुद्धिमान् तथा नीतिमान् होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

शिर मुख या गुल्म रोग योग

बलहीनेऽरिनाथे वा लग्नस्थे वा धरासुते।
मूर्धार्तिर्मुखरोगो वा गुल्मविद्रधिभाग्भवेत्।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि–अ.–5/श्लो.–42

यदि जन्मकुंडली में षष्ठेश निर्बल हो या लग्नस्थ हो अथवा लग्न में मंगल हो तो शिर में पीड़ा या मुखरोग अथवा गुल्मरोग होता है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको शिर रोग, मुखरोग या गुल्म रोग से पीड़ित होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

शास्त्राग्निव्याघ्रसर्पादि पीड़ा योग

पापर्क्षयुक्ते निधने सपापे
शस्त्रानलव्याघ्रभुजङ्गपीडा।
।। फलदीपिका–अ.14/श्लो.–20।।

यदि जन्मकुंडली में अष्टमेश पाप ग्रह हो और आठवें भाव में पापग्रह भी हों तो शस्त्र, अस्त्र, अग्नि, व्याघ्र, सर्पादि की पीड़ा होती है।

योग कारक ग्रह : सूर्य योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको

शस्त्र/ अस्त्र/अग्नि/व्याघ्र या सर्पादि से पीड़ा होगी। ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यांशके सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे वा क्षयेशे।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम्।।
।। फलदीपिका–अ.14/श्लो.–21।।

यदि जन्मकुंडली में द्वादशेश सौम्यग्रह की राशि या सौम्य ग्रह के नवांश या सौम्य ग्रह के साथ स्थित हो तो विना पीड़ा की मृत्यु होती है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका मरण बिना क्लेश का होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

मरणोपरांत ब्रह्मलोकवासी योग

सद्ब्रह्मलोकं गुरुः सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनायकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका–अ.14/श्लो.–23।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में गुरु स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में गुरु हो या द्वादशेश गुरु से संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्या योग

कुटुम्बकलत्रनाथाभ्यां समेतैर्ग्रहनायकैर्वा कलत्रसंख्यां प्रवदन्ति सन्तः
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.–6/श्लो.–1

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीयेश या सप्तमेश के साथ जितने ग्रह हों उतनी पत्नी होती हैं।

योग कारक ग्रह : केतु,चंद्र योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके

दो या दो से अधिक जीवनसाथी हो सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है।

विवाहोपरान्त भाग्योदय योग

भाग्यं विवाहत्परतो वदन्ति शुक्रेस्तगे चोपचयान्विते वा ।
कुटुम्बमेतादृशभावयुक्ते लग्नेश्वरे वा शुभदृष्टियोगे ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.–6/श्लो.–6

जन्मपत्रिका में यदि शुक्र सप्तम में हो अथवा उपचय 3/6/11/10 स्थानों में हो अथवा द्वितीयस्थ हो अथवा लग्नेश इन भावों में से किसी भी स्थान में हो एवं शुभ ग्रह द्वारा निरीक्षित हो तो विवाहोपरांत भाग्योदय होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका भाग्योदय विवाहोपरांत होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

द्विभार्या योग

लग्नेशेंगे द्विभार्यो जारो वा ।।
।। बृहद्योग रत्नाकर ।। पृ. 303 ।।

यदि जन्मपत्रिका में लग्नेश लग्नस्थ हो तो द्वि भार्या योग होकर जार (व्यभिचारी) रहता है।

योग कारक ग्रह : शनि योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो विवाह हो, ऐसा प्रतीत होता है।

देश विदेश यात्रा योग

व्ययेशे पापसंयुक्ते व्यये पापसमन्विते ।
पापग्रहेण संदृष्टे देशाद्देशान्तरं गतः ।।
।। बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् ।। अ.12,

यदि जन्मकुंडली में व्ययेश पाप ग्रह से युक्त हो और व्यय भाव में पाप ग्रह हो तथा पाप ग्रह की दृष्टि व्यय भाव पर हो तो जातक देश विदेश में जाने वाला होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,राहु,केतु,सूर्य,गुरु योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप देश

विदेश में भ्रमण करने वाले होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

काहल योग- प्रथम विधि

''अन्योन्यकेन्द्रगृहगौ गुरुबन्धुनाथौ–
लग्नाधिपे बलयुते यदि काहलः स्यात्।''
।। बृ. पा. होरा. –योगाध्याय–श्लो. 10

जिस जातक की पत्रिका में गुरु और चतुर्थेश परस्पर केन्द्र में हों, और लग्नेश बली हो तो काहल योग का सृजन होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,गुरु,शनि योग की संभावना : 48 में 1

आपकी पत्रिका के अनुसार काहल योग के प्रथम विधि के अनुसार पत्रिका में काहल योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप तेजस्वी, साहसी, मूर्ख सेना के बल से युक्त, ग्रम पति, मुखिया या ग्राम प्रधान होंगे।

पारिजात योग

''सपारिजातद्युचरः सुखानि ।''
।। बृ. पा. होरा. –योगाध्याय–श्लो. 34

जिसकी पत्रिका के "पारिजात" भाग में ग्रह हों तो उसे सभी प्रकार के उत्तम सुख की प्राप्ति होती है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,मंगल,बुध,शनि,राहु योग की संभावना : 2 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "पारिजात" वर्ग में स्थित है। फलस्वरूप आपको सभी प्रकार का उत्तम सुख प्राप्त होगा।

उत्तमवर्ग योग

''नीरोगतामुत्तमवर्गयातः।''
।।बृ. पा. होरा. –योगाध्याय–श्लो. 34 ।

जिस जातक की पत्रिका के "उत्तमवर्ग" भाग में ग्रह हों तो वह प्राणी सभी प्रकार से निरोग रहता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "उत्तमवर्ग" में स्थित है। फलस्वरूप आप सभी प्रकार से निरोग रहेंगे।

वासि योग

''व्ययखेटैर्वाशि दिनेशात्।''

।। बृ. पा. होरा. –योगाध्याय–श्लो. 51

यदि जन्मपत्रिका में सूर्य से बारहवें भाव में कोई ग्रह हो तो "वासि" योग का निरूपण होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,शुक्र,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वासि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आपकी दृष्टि मन्द अर्थात् आपमें दृष्टिदोष रहेगा। आप परिश्रमी, नीचेदेखनेवाला एवं असत्यवादी होंगे।

वेशि योग

''धनखेटैर्वेशी दिनेशात्''

।। बृ. पा. होरा. –योगाध्याय–श्लो. 51

यदि जातक के जन्मकाल पत्रिका में सूर्य से द्वितीय भाव में कोई ग्रह स्थित हो, तो जातक पर वेशि योग का सृजन होगा।

योग कारक ग्रह : मंगल,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वेशि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप दयावान, स्थूल शरीर वाले, चतुरवक्ता, आलस्य से युक्त एवं वक्र दृष्टि वाले प्राणी होंगे।